मानवी
सृजन-सोपान
मानवी
जुलाई -सितंबर 2024
त्रैमासिक साहित्यिक ई पत्रिका

कविता सिंह
अहमदाबाद

"सर्वे भवन्तु सुखिनः"

श्लोक, अचानक ही कौंधा
क्यों बाजार मे नही चलते ऐसे श्लोक,
क्यों तड़ीपार हो जाते हैं ये मन्त्र

क्यों सुतली बम
फटकर तारतार हो जाता है
आग लगती है
धड़ाके से फट जाती है फैक्ट्री
जल जाता है— सुख का पानी...

जलने का दुख जानता था 'रावण'
जानता था 'भस्मासुर' राख होने का स्वाद
आग का गुस्सा जानते हैं—
भूने हुए मुर्गे, तीतर–बटेर, हामिद हरिया और
अधजले बच्चे...

किसी को भी दुख का भागी न होना पड़े...
" मा कश्चिद् दुख भागभवेत "

तीलियों !
सील जाओ बारूद की बोरियों को देखते ही
चिंगारियों !
फुस्स्ऽऽ... हो जाओ 'लक्ष्मी बम' छूते ही
पटाखों !
अग्निफूल सा खिलो
मत जलाओ किसी का घरऽऽ...
अग्निदेव !
हो सके तो माफ कर देना
अगले पिछले जन्म के सारे पाप...

अपराध क्षमा हो तो एक बात कहूँ—

ईश्वर !
ऐसी आग को आग लगे...।

त्रैमासिक ई पत्रिका

वर्ष– 4 ,अंक – 3 (जुलाई-सितंबर 2024)

प्रधान सम्पादक - कविता सिंह

****

सम्पादक—राजेश कुमार सिंह

****

आवरण -चित्र -तेजस सिंह

****

ई मेल : manvipatrika@gmail.com

****

Website : http://www.manvipatrika.co.in/

****

संरक्षक

श्रीमती जानकी किशोरी देवी एवं

श्री राम चन्द्र सिंह

****

पता -कार्यकारी -बी -701 ,स्वाति फ्लोरेंस , निकट सोबो सेंटर ,साउथ बोपल ,अहमदाबाद -380058

स्थायी - 274/x ,शक्ति णगर कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

मोब -9833775798

मानवी पत्रिका में प्रकाशित लेख /काव्य आदि रचनकारों के अपने विचार है ,जिनसे प्रकाशक/ संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गोरखपुर रहेगा। रचना की मौलिकता का दायित्व रचनाकार का है पत्रिका से जुड़े सभी पद अवैतनिक है।

पत्रिका प्रधान संपादक कविता सिंह जी के स्वामित्व में आन-लाइन प्रकाशित होती है। पत्रिका के वेबसाईट से सभी अंकों का पीडीएफ़ डाउनलोड किया जा सकता है।
पत्रिका निःशुल्क है , पत्रिका का उद्देश्य हिन्दी साहित्य की सेवा है।

पत्रिका आप सभी मित्रों से रचनात्मक सहयोग के अलावा अर्थ-सहयोग का भी निवेदन करती है, यह स्वैच्छिक है आप पेटिएम नं - 9833775798 पर स्वेच्छा से यथासंभव धनराशि सहयोग के रुप में अंतरित कर सकते हैं।

इस अंक में .....

काव्य धरोहर

ओस	सोहनलाल द्विवेदी	7
जाड़े की साँझ	माखनलाल चतुर्वेदी	7

लेख/संस्मरण/आलेख

गणेश शंकर 'विद्यार्थी'....	कृष्ण कुमार यादव	8
सुभद्रा कुमारी चौहान	विवेक रंजन श्रीवास्तव	11
आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन'....	डॉ. इंद्र सेंगर	14
कविवर शङ्कर द्विवेदी.....	शिव कुमार गौतम	21
भारतीय संस्कृति की अस्मिता की पहचान है हिन्दी	आकांक्षा यादव	26

हास्य/व्यंग्य

इमानदारी की अकड़	डॉ. मुकेश 'असीमित	29
चौर्यकर्म पर विस्तृत निबंध....	दिनेश गंगराड़े '	31

कहानी

इत्तेफ़ाक	मनप्रीत कौर मखीजा	32
संघर्ष	डॉ लेखराज	35
जिन्दा मछली	डॉ. मनोहर अभय	39
बिखराव	राजेन्द्र कुमार सिंह	41
लिक्विड लाउंज बार	कहानीकार: वर्षा अडालजा (गुजराती से हिन्दी में अनूदित) अनुवादक: डॉ.रजनीकान्त एस.शाह	44

लघुकथा

पंच प्रस्थान	दीपक कुमार	47
संकल्प,मृत्यु पूर्व बयान	डॉ. मीना बैस रघुवंशी	48
लड़की भाग गई	शोभा गोयल	49
वह आखिरी रात	सतीश कुमार नारनौंद	50

काव्य/हाइकु /गजल

कुण्डलिया छंद	राजपाल सिंह गुलिया	10
कविता	प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध	13
गीत	शीला गहलावत 'सीरत'	13
निर्णय	विनोद दूबे	20
मौत से संवाद	डॉ राहुल श्रीवास्तव	25
ग़ज़ल	हमीद कानपुरी,	२८
कविता	डॉ.सुमन शर्मा	30
मन द्वारिका मित्र सुदामा	डा लता अग्रवाल "तुलजा"	38
एक उत्सव ऐसा हो जाए..	रश्मि वैभव गर्ग	38
कविता	प्रेरणा यादव	40
न भूला परिपाटी को	अमलेन्दु शुक्ल	43
सुख के दिन,एक अघोषित युद्ध	मनोज जैन	51
पौधे की व्यथा	व्यग्र पाण्डे	52
क्षणिकाएँ	चक्रधर शुक्ल	53
ग़ज़ल	बलविन्दर बालम	53
ग़ज़ल	डॉ.उमेश चन्द्र शुक्ल	54
क्षणिकाएँ	शेफालिका सिन्हा	55
दोहे	विनोद वर्मा दुर्गेश,	55
मेरी मधुशाला	टीकम चन्दर ढोडरिया,	56
ग़ज़ल	बृज राज किशोर 'राहगीर'	66

पुस्तक समीक्षा

गाँव के जीवन के हर कोने में झांकता कवि	कनक किशोर	57
गजल में महिला ग़ज़लकारों का दखल	डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफरी	61
अनकहे जज़्बात	प्रीति शर्मा"मधु",	63
कहानियों का कारवां-उर्दू एवं अरबी की चयनित कहानियाँ	राजेश सिंह	64

कुछ मेरी भी....

जीवन में समस्याओं का होना स्वाभाविक है । ऐसा तो शायद कोई बिरला ही होगा जिसके जीवन में समस्याएं न हो । चाहे अमीर हो या गरीब ,चाहे छोटा हो या बड़ा हो, स्त्री हो या पुरुष हो , स्वस्थ हो बीमार हो ,नौकरी पेशा वाला हो फिर बिजनेसमैन हो ,हर कोई किसी न किसी समस्या से घिरा है। इन सबमें मजेदार बात तो यह भी है कि अगर एक समस्या से कोई निजात पाता है तो दूसरी समस्या उठ खड़ी होती है । समस्याएँ आती भी एक साथ है अकेली नहीं आती है ,अपने साथ साथ दो चार और बटोर कर ले आती है। कहा भी गया है **"कंगाली में आटा गीला होना"** अर्थात एक तो घर में आटा कम था ,उपेर से पानी ज्यादा पड गया । लोग कहते भी है कि जब मुसीबत आती है तो एक तरफ से नहीं हर तरफ से आती है।

कुछ समस्याएँ तो बहुत छोटी होती है पर उनको सही ढंग से सुलझा ने पाने के कारण धीरे धीरे वो बड़ा आकार ले लेती है । जैसे बीमारी ,अगर समय पर सही इलाज ने हो या फिर अज्ञानी लोगों की कमअकल सलाह मानने के कारण छोटी और उपचार वाली बीमारी भी एक दिन लाइलाज रोग में बदल जाती है।

मुसीबत का कारण भी कुछ हमारी कमजोरी कुछ हमारी अज्ञानता ,कुछ हड़बड़ी आदि हो सकता है । जीवन की परिस्थितियाँ लगातार बदलती रहती है और हर पल इस बदलते परिवेश में तालमेल या फिर सामंजस्य बिठाना पड़ता है। इसमें होनेवाली जल्दबाजी और चूक हमारी लिए फिर समस्या को जन्म देती है । मसलन जल्दबाजी में कई छोटी छोटी गलतियों को नजरंदाज कर देते है , धीरे धीरे यही छोटी छोटी गलतियाँ बाद में विकराल समस्या बनकर सामने आ खड़ी होती है। कभी कभी लोगों पर आँख मूदकर भरोसा कर लेना भी मुसीबत में डाल देता है। ससमय अपने और पराए की पहचान न कर पाना भी मुसीबत का कारण बन सकता है। अधकचरा ज्ञान भी हमारी मुसीबतों का कारण बनता है। ज्यादा उत्साह अनुभव की कमी या फिर फन्ने खां बनने के चक्कर में भी मुसीबतें आती रहती है ।

मेरी समझ से समस्याएं भी मोटा मोटी तीन केटेगरी में बाटीं जा सकती है । पहली वो समस्याएं जो असल में समस्या होती ही नहीं है ,पर हम मान लेते है कि यह हमारी समस्या है , और सर पकड़कर बैठ जाते है। छाती पीटने लगते है। दूसरी वो समस्याएं जो होती तो दूसरों की है पर हम जाकर भिड़ जाते है और अपनी समस्या बना लेते है । यहाँ पर **"आ बैल मुझे मार"** वाली कहावत को चरितरार्थ करते है । तीसरी टाइप की समस्या ही हमारी वास्तविक समस्या होती है , जिसे हम धैर्यपूर्वक सावधानी से सुलझा सकते है । निराशाजनक और हतोत्साहित मनोभाव को तिलांजलि देकर हम इन समस्याओं को पराजित कर सकते है । इन समस्याओं को हल करने में जो चीज सबसे ज्यादा महत्व की होती है वो है हमारा आपका ऐटिटूड यानि मनोभाव , अर्थात आप अपनी समस्याओं को किस नजरिए से देखते हो। पहली और सबसे ज्यादा महत्व तो इस बात का है कि आप मानते है कि आपकी समस्या का हल है और हल खोजकर उसे दूर किया जा सकता है। यह मान लेना ही हमारी आधी समस्या को दूर कर देता है। दूसरा हम अपनी समस्या को एक चुनौती के रूप में लेते है या फिर समस्या के रूप में ,अगर समस्या के रूप में लेते है तो उससे निजात पाना थोड़ा मुस्किल हो सकता है पर यदि चुनौती के रूप में लेते है ,कि इस समस्या से निजात पाने के दौरान कुछ न कुछ सीखने को मिलेगा, कम से कम इस समस्या के समाधान का क्या उपाय है यही जानकारी मिल जाएगी। तीसरी सर्वाधिक महत्व की चीज है धैर्यपूर्वक और लगातार कोशिश यानि **"जब तक हल नहीं तब तक कल नहीं"** । हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी जी की पंक्तियाँ है :

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

हम सबको एक पाज़िटिव ऐटिटूड अपनाकर अपनी समस्याओं से निजात पाने को कोशिश करनी चाहिए ,या फिर उनके साथ कैसे जीना है ,यह मनोभाव विकसित कर लेना चाहिए ,जैसा की हम सबों ने कोरोना काल में किया था। समस्याएं तो आती रहेंगी ,और साथ में समाधान भी लेकर आएंगी । किसी विद्वान ने कहा है । **अगर कोई समस्या है तो उसका समाधान भी होगा । अगर किसी समस्या का समाधान नहीं है तो फिर समस्या ही नहीं है उसे हमने जबरदस्ती समस्या बना रखा है।**

भारत या अपना देश त्योहारों उमंगों खुशियों का देश है ,हर माह कोई न कोई त्योहार आता रहता है ताकि हम अपनी समस्याओं को भूलकर कुछ समय के लिए उत्साह युक्त माहौल में जीयँ । एक दूसरे के साथ खुशियां बांटें, मिठाई बाँटे । बम पटाखों ,दिया ,झालर का त्योहार दीपावली की आप सभी को मानवी पत्रिका परिवार की तरफ से बधाइयाँ और ढेरों शुभकामनाएँ । हाँ बच्चों को अपनी निगरानी में ही पटाखें आदि जलाने दें । खतरनाक बम आदि पटाखों से बच्चों को दूर ही रखें । कोसजिसज करें कि मिट्टी की दियाली से घर को जगमगाएँ , इससे पारंपरिकता भी बनी रहेगी और हमारे एक समाज की मदद भी होगी । याँद रखें आपके एक मिट्टी का दिया जलाने से से सिर्फ आपका घर ही नहीं प्रकाशित होता है बल्कि एक और घर भी प्रकाशित होता है ।

“हम सबका प्रयास , हर घर प्रकाश”

आपका
शुभेच्छू

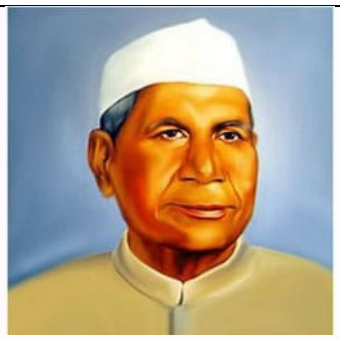

काव्य धरोहर

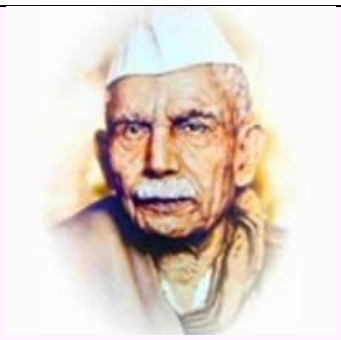

सोहनलाल द्विवेदी

ओस

हरी घास पर बिखेर दी हैं
ये किसने मोती की लड़ियाँ?
कौन रात में गूँथ गया है
ये उज्ज्वल हीरों की कड़ियाँ?
जुगनू से जगमग-जगमग ये
कौन चमकते हैं यों चमचम?
नभ के नन्हें तारों से ये
कौन दमकते हैं यों दमदम?
लुटा गया है कौन जौहरी
अपने घर का भरा ख़ज़ाना?
पत्तों पर, फूलों पर, पग-पग
बिखरे हुए रतन हैं नाना।

बड़े सबेरे मना रहा है
कौन ख़ुशी में यह दीवाली?
वन-उपवन में जला दी है
किसने दीपावली निराली?
जी होता, इन ओस-कणों को
अंजलि में भर घर ले आऊँ?
इनकी शोभा निरख-निरखकर
इन पर कविता एक बनाऊँ।

माखन लाल चतुर्वेदी

जाड़े की साँझ

किरनों की शाला बन्द हो गई चुप-चपु
अपने घर को चल पड़ी सहस्त्रों हँस-हँस
उ ण्ड खेलतीं घुल-मिल होड़ा-होड़ी
रोके रंगों वाली छबियाँ? किसका बस!

ये नटखट फिर से सुबह-सुबह आवेंगी
पंखनियाँ स्वागत-गीत कि जब गावेंगी।
दूबों के आँसू टपक उठेंगे ऐसे
हों हर्ष वायु से बेक़ाबू- से जैसे।

कलियाँ हँस देंगी
फूलों के स्वर होगा
आगन्तुक-दल की आँखों का घर होगा,
ऊँचे उठना कलिकाओं का वर होगा
नीचे गिरना फूलों का ईश्वर होगा।
शाला चमकेगी फिर ब्रह्माण्ड-भवन की
खेलेंगी आँख-मिचौनी नटखट मन की।

इनके रूपों में नया रंग-सा होगा
सोई दुनिया का स्वपन दंग-सा होगा
यह सन्ध्या है, पक्षी चुप्पी साधेंगे
किरणों की शाला बन्द हो गई- चुप-चुप।

कृष्ण कुमार यादव
पोस्टमास्टर जनरल,
उत्तरी गुजरात परिक्षेत्र, अहमदाबाद -380004
kkyadav.t@gmail.com

साहित्य और पत्रकारिता के क्रान्तिधर्मी गणेश शंकर 'विद्यार्थी'

गणेश शंकर 'विद्यार्थी' का अद्भुत 'प्रताप'

(26 अक्तूबर 1890 - 25 मैच 1931)

साहित्य की सदैव से समाज में प्रमुख भूमिका रही है। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान पत्र-पत्रिकाओं में विद्यमान क्रान्ति की ज्वाला क्रान्तिकारियों से कम प्रखर नहीं थी। इनमें प्रकाशित रचनायें जहाँ स्वतन्त्रता आन्दोलन को एक मजबूत आधार प्रदान करती थीं, वहीं लोगों में बखूबी जन जागरण का कार्य भी करती थीं। गणेश शंकर 'विद्यार्थी ' साहित्य और पत्रकारिता के ऐसे ही शीर्ष स्तम्भ थे, जिनके अखबार 'प्रताप' ने स्वाधीनता आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभायी। प्रताप के जरिये न जाने कितने क्रान्तिकारी स्वाधीनता आन्दोलन से रूबरू हुए, वहीं समय-समय पर यह अखबार क्रान्तिकारियों हेतु सुरक्षा की ढाल भी बना।

गणेश शंकर 'विद्यार्थी' का जन्म 26 अक्टूबर 1890 को अपने ननिहाल अतरसुइया, इलाहाबाद में हुआ था। उनके नाना सूरज प्रसाद श्रीवास्तव सहायक जेलर थे, अतः अनुशासन उन्हें विरासत में मिला। गणेश शंकर के नामकरण के पीछे भी एक रोचक वाकया है- उनकी नानी ने सपने में अपनी पुत्री गोमती देवी के हाथ गणेश जी की प्रतिमा दी थी, तभी से उन्होंने यह माना था कि यदि गोमती देवी का कोई पुत्र होगा तो उसका नामकरण गणेश शंकर किया जायेगा। मूलतः फतेहपुर जनपद के हथगाँव क्षेत्र के निवासी गणेश शंकर के पिता मुंशी जयनारायण श्रीवास्तव ग्वालियर राज्य में मुंगावली नामक स्थान पर अध्यापक थे। गणेश शंकर आरम्भ से ही किताबें पढ़ने के काफी शौकीन थे, इसी कारण मित्रगण उन्हें 'विद्यार्थी' कहते थे। बाद में उन्होंने यह उपनाम अपने नाम के साथ लिखना आरम्भ कर दिया। विद्यार्थी जी की प्रारम्भिक शिक्षा पिता जी के स्कूल मुंगावली, जहाँ वे एंग्लो-वर्नाकुलर मिडिल स्कूल में अध्यापक थे, में हुई। विद्यार्थी जी उर्दू, फारसी एवं अंग्रेजी के अच्छे जानकार थे। 1904 में उन्होंने भलेसा से अंग्रेजी मिडिल की परीक्षा पास किया, जिसमें पहली बार हिंदी द्वितीय भाषा के रूप में मिली थी। तत्पश्चात पिताजी ने विद्यार्थी जी को पढ़ाई के साथ-साथ नौकरी करने के लिए बड़े भाई शिवव्रत नारायण के पास कानपुर भेज दिया। कानपुर में आकर विद्यार्थी जी ने क्राइस्ट चर्च कालेज की प्रवेश परीक्षा दी पर भाई का तबादला मुंगावली हो जाने से आगे की पढ़ाई फिर वहीं हुई। वर्ष 1907 में विद्यार्थी जी आगे की पढ़ाई के लिए कायस्थ पाठशाला गये।

इलाहाबाद प्रवास के दौरान विद्यार्थी जी की मुलाकात 'कर्मयोगी' साप्ताहिक के सम्पादक सुन्दर लाल से हुई एवं इसी दौरान वे उर्दू पत्र 'स्वराज्य' के संपर्क में भी आये। गौरतलब है कि अपनी क्रान्तिधर्मिता के चलते 'स्वराज्य' पत्र के आठ सम्पादकों को सजा दी गई थी, जिनमें से तीन को कालापानी की सजा मुकर्रर हुई थी। सुन्दरलाल उस दौर के प्रतिष्ठित संपादकों में से थे। लोकमान्य तिलक को इलाहाबाद बुलाने के जुर्म में उन्हें कालेज से निष्कासित कर दिया गया था एवं इसी कारण उनकी पढ़ाई भी भंग हो गई थी। सुन्दरलाल के संपर्क में आकर विद्यार्थी जी ने 'स्वराज्य ' एवं 'कर्मयोगी' के लिए लिखना आरम्भ किया। यहीं से पत्रकारिता एवं क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति उनकी आस्था भी बढ़ती गई।

इलाहाबाद से गणेश शंकर 'विद्यार्थी' कानपुर आये एवं इसे अपनी कर्मस्थली बनाया। कानपुर में कलकत्ता से अरविंद घोष द्वारा सम्पादित 'वन्देमातरम्' ने विद्यार्थी जी को आकृष्ट किया एवं इसी दौरान उनकी मुलाकात पं. पृथ्वीनाथ मिडिल स्कूल के अध्यापक नारायण प्रसाद अरोड़ा से हुई। अरोड़ा जी की सिफारिश पर विद्यार्थी जी को उसी स्कूल में अध्यापक की नौकरी मिल गई। पर पत्रकारिता की ओर मन से प्रवृत्त विद्यार्थी जी का मन यहाँ भी नहीं लगा और नौकरी अन्ततः छोड़ दी। उस समय महावीर प्रसाद द्विवेदी कानपुर में ही रहकर 'सरस्वती' का सम्पादन कर रहे थे। विद्यार्थी जी इस पत्र से भी सहयोगी रूप में जुड़े रहे। एक तरफ पराधीनता का दौर, उस पर से अंग्रेजी हुकूमत के अत्याचार ने विद्यार्थी जी को झकझोर कर रख दिया। उन्होंने पत्रकारिता को राजनैतिक चेतना को जोड़कर कार्य करना आरम्भ किया। इसी दौरान वे इलाहाबाद लौटकर वहाँ से प्रकाशित साप्ताहिक 'अभ्युदय' के सहायक संपादक भी रहे। पर विद्यार्थी जी का मनोमस्तिष्क तो कानपुर में बस चुका था, अतः वे पुनः कानपुर लौट आये।

कानपुर में विद्यार्थी जी ने 1913 से साप्ताहिक 'प्रताप' के माध्यम से न केवल क्रान्ति का नया प्राण फूँका बल्कि इसे एक ऐसा समाचार पत्र बना दिया जो सारी हिन्दी पत्रकारिता की आस्था और शक्ति का प्रतीक बन गया। प्रताप प्रेस में कम्पोजिंग के अक्षरों के खाने में नीचे बारूद रखा जाता था एवं उसके ऊपर टाइप के अक्षर। ब्लाक बनाने के स्थान पर नाना प्रकार के बम बनाने का सामान भी रहता था। पर तलाशी में कभी भी पुलिस को ये चीजें हाथ नहीं लगीं। विद्यार्थी जी को 1921-1931 तक पाँच बार जेल जाना पड़ा और यह प्रायः 'प्रताप' में प्रकाशित किसी समाचार के कारण ही होता था। विद्यार्थी जी ने सदैव निर्भीक एवं निष्पक्ष पत्रकारिता की। उनके पास पैसा और समुचित संसाधन नहीं थे, पर एक ऐसी असीम ऊर्जा थी, जिसका संचरण स्वतंत्रता प्राप्ति के निमित्त होता था। 'प्रताप' प्रेस के निकट तहखाने में ही एक पुस्तकालय भी बनाया गया, जिसमें सभी जब्तशुदा क्रान्तिकारी साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाएं उपलब्ध थी।

यह 'प्रताप' ही था जिसने दक्षिण अफ्रीका से विजयी होकर लौटे तथा भारत के लिये उस समय तक अनजान महात्मा गाँधी की महत्ता को समझा और चम्पारण -सत्याग्रह की नियमित रिपोर्टिंग कर राष्ट्र को गाँधी जी जैसे व्यक्तित्व से परिचित कराया। चैरी-चैरा तथा काकोरी काण्ड के दौरान भी विद्यार्थी जी 'प्रताप' के माध्यम से प्रतिनिधियों के बारे में नियमित लिखते रहे। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित सुप्रसिद्ध देशभक्ति कविता 'पुष्प की अभिलाषा' प्रताप अखबार में ही मई 1922 में प्रकाशित हुई। बालकृष्ण शर्मा नवीन, सोहन लाल द्विवेदी, सनेहीजी, प्रताप नारायण मिश्र इत्यादि ने प्रताप के माध्यम से अपनी देशभक्ति को मुखर आवाज दी।

विद्यार्थी जी एक पत्रकार के साथ-साथ क्रान्तिधर्मी भी थे। वे पहले ऐसे राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने काकोरी षडयंत्र केस के अभियुक्तों के मुकदमे की पैरवी करवायी और जेल में क्रान्तिकारियों का अनशन तुड़वाया। कानपुर को क्रान्तिकारी गतिविधियों का केन्द्र बनाने में विद्यार्थी जी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, विजय कुमार सिन्हा, राजकुमार सिन्हा जैसे तमाम क्रान्तिकारी विद्यार्थी जी से प्रेरणा पाते रहे। वस्तुतः प्रताप प्रेस की बनावट ही कुछ ऐसी थी कि जिसमें छिपकर रहा जा सकता था तथा फिर सघन बस्ती में तलाशी होने पर एक मकान से दूसरे मकान की छत पर आसानी से जाया जा सकता था। बनारस षडयंत्र से भागे सुरेश चन्द्र भट्टाचार्य प्रताप अखबार में उपसम्पादक थे। बाद में भट्टाचार्य और प्रताप अखबार से ही जुड़े पं0 राम दुलारे त्रिपाठी को काकोरी काण्ड में सजा मिली। भगत सिंह ने तो 'प्रताप' अखबार में बलवन्त सिंह के छद्म नाम से लगभग ढाई वर्ष तक कार्य किया। सर्वप्रथम दरियागंज, दिल्ली में हुये दंगे का समाचार एकत्र करने के लिए भगत सिंह ने दिल्ली की यात्रा की और लौटकर 'प्रताप' के लिए सचिन दा के सहयोग से दो कालम का समाचार तैयार किया। चन्द्रशेखर आजाद से भगत सिंह की मुलाकात विद्यार्थी जी ने ही कानपुर में करायी थी, फिर तो शिव वर्मा सहित तमाम क्रान्तिकारी जुड़ते गये। यह विद्यार्थी जी ही थे कि जेल में भंेट करके क्रान्तिकारी राम प्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा छिपाकर लाये तथा उसे 'प्रताप ' प्रेस के माध्यम से प्रकाशित करवाया। जरूरत पड़ने पर विद्यार्थी जी ने राम प्रसाद बिस्मिल की माँ की मदद की और रोशन सिंह की कन्या का कन्यादान भी किया। यही नहीं अशफाकउल्ला खान की कब्र भी विद्यार्थी जी ने ही बनवाई।

विद्यार्थी जी का 'प्रताप' तमाम महापुरूषों को भी आकृष्ट करता था। 1916 में लखनऊ कांग्रेस के बाद महात्मा गाँधी और लोकमान्य तिलक इक्के पर बैठकर प्रताप प्रेस आये एवं वहाँ दो दिन रहे। 1925 के कानपुर कांग्रेस अधिवेशन के दौरान विद्यार्थी जी स्वागत मंत्री रहे और जवाहर लाल नेहरू के साथ-साथ घोड़े पर चढ़कर अधिवेशन स्थल का भ्रमण करते थे। यह विद्यार्थी जी ही थे जिन्होंने श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' को प्रताप प्रेस में रखा एवं उनके गान 'राष्ट्र पताका नमो-नमो' को 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' में तब्दील कर दिया। विद्यार्थी जी सिद्धांतप्रिय व्यक्ति थे। एक बार जब ग्वालियर नरेश ने उन्हें सम्मानित किया और कहा कि मुझे खुशी है कि आपके पिताजी मेरे अंतर्गत मुंगावली में कार्यरत रहे हैं, परन्तु आप मेरे बारे में अपने अखबार में लगातार विरोधी खबरें छाप रहे हैं। तो विद्यार्थी जी ने निडरता से कहा कि मैं आपका और पिताजी के आपसे सम्बन्धों का सम्मान करता हूँ, परन्तु इसके चलते अखबार के साथ अन्याय नहीं कर सकता। हाँ, यदि आप इन खबरों का प्रतिवाद लिखकर भेजेंगे तो अवश्य प्रकाशित करूँगा।

कालान्तर में विद्यार्थी जी गाँधीवादी विचारधारा से काफी प्रभावित हुए एवं यह उनकी लोकप्रियता का भी सबब बना। वे क्रान्तिकारियों एवं गाँधीवादी विचारधारा के अनुयायियों के लिए समान रूप से प्रिय थे। इस बीच अंग्रेजी हुकूमत ने 23 मार्च 1931 को भगत सिंह को फांसी पर चढ़ा दिया तो भारतीय जनमानस आगबबूला हो उठा। अंग्रेजी निर्दयता के विरूद्ध जनमानस सड़कों पर उतर आया। निडर एवं साहसी व्यक्तित्व के धनी तथा साम्प्रदायिकता विरोधी विद्यार्थी जी इस दौरान भड़के हिन्दू-मुस्लिम दंगों को शान्त कराने के लिए लोगों के बीच उतर पड़े। उधर विद्यार्थी जी के प्रताप से अंग्रेजी हुकूमत भी भयभीत थी। रायबरेली में मुंशीगंज गोली काण्ड के तहत 'प्रताप' पर मानहानि का केस चल रहा था और अंग्रेज बार-बार यह संदेश दे रहे थे कि जब तक कानपुर में 'प्रताप ' जीवित है, तब तक प्रदेश में शान्ति स्थापना मुश्किल है। भड़की हिंसा को काबू करने के दौरान 25 मार्च 1931 को विद्यार्थी जी साम्प्रदायिकता की भेंट चढ़ गए। उनका शव अस्पताल की लाशों के मध्य पड़ा मिला। वह इतना फूल गया था कि उसे पहचानना तक मुश्किल था। नम आँखों से 29 मार्च को विद्यार्थी जी का अन्तिम संस्कार कर दिया गया पर 'प्रताप' के माध्यम से 'विद्यार्थी' जी ने राजनैतिक आन्दोलन, क्रान्तिकारी चेतना, क्रान्तिधर्मी पत्रकारिता एवं साहित्य को जो ऊँचाईयाँ दीं, उसने उन्हें अमर कर दिया एवं इसकी आंच में ही अन्ततः स्वाधीनता की लौ प्रज्जवलित हुई।

लेखक के बारे में

कृष्ण कुमार यादव : भारत सरकार में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी। प्रशासन के साथ-साथ साहित्य, लेखन और ब्लॉगिंग के क्षेत्र में भी प्रवृत्त। विभिन्न विधाओं में अब तक कुल 7 पुस्तकें प्रकाशित- 'अभिलाषा' (काव्य-संग्रह, 2005), 'अभिव्यक्तियों के बहाने' व 'अनुभूतियाँ और विमर्श' (निबंध-संग्रह, 2006 व 2007), इत्यादि

सम्मान : उ.प्र. के मुख्यमंत्री द्वारा "अवध सम्मान", पश्चिम बंगाल के राज्यपाल द्वारा "साहित्य-सम्मान", छत्तीसगढ़ के राज्यपाल द्वारा "विज्ञान परिषद शताब्दी सम्मान", परिकल्पना समूह द्वारा "दशक के श्रेष्ठ हिन्दी ब्लॉगर दम्पति" सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन, भूटान में " परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान", विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार द्वारा डॉक्टरेट (विद्यावाचस्पति) की मानद उपाधि, भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा "डॉ. अम्बेडकर फेलोशिप राष्ट्रीय सम्मान" साहित्य मंडल, श्रीनाथद्वारा, राजस्थान द्वारा " हिंदी भाषा भूषण", वैदिक क्रांति परिषद, देहरादून द्वारा " श्रीमती सरस्वती सिंहजी सम्मान", भारतीय बाल कल्याण संस्थान द्वारा "प्यारे मोहन स्मृति सम्मान", आदि विभिन्न पुरुस्कारों से सम्मानित।

कुण्डलिया छंद

राजपाल सिंह गुलिया
झज्जर (हरियाणा)

1.
मिलता हमको जब कभी , आशा के विपरीत ,
कुछ तो है प्रारब्ध भी , होता तभी प्रतीत .
होता तभी प्रतीत , जीतते हारी बाजी,
काजी दे अटकाय , हों मियाँ - बीवी राजी .
कह गुलिया कविराय , चमन सब खातिर खिलता .
फूल मिले या शूल , कर्म से सबको मिलता .

2.
सत्ता सुख पाकर हुए , राजा जो मदहोश ,
पड़ा उन्हें तो झेलना , जनता का आक्रोश .
जनता का आक्रोश , घड़ी में धूल चटावे .
खुश हो अगर अवाम ,उसे झट शीश बिठावे .
कह गुलिया कविराय , सत्य है ये अलबत्ता .
जनहित के कर काम , रहे तब कायम सत्ता .

3.
पैसा ही लगने लगा , कुछ को माई - बाप ,
मुनि जन भी करते मिले ,धन माया का जाप .
धन माया का जाप , रंज देता है दूना .
खाली हो गर जेब , लगे मेला भी सूना .
कह गुलिया कविराय , सुधीजन कहते ऐसा ,
खर्चो सोच विचार , लगे ना तरु पर पैसा .

4.
बोलो कैसे मान लें , उनको आज महान ,
जिनके कारण जा रहीं , जानें कितनी जान .
जानें कितनी जान , घाव सीने पर झेलें ,
आता काल अकाल , जान अपनी पर खेलें .
कह गुलिया कविराय , भेद ये सब पर खोलो ,
बुझे रक्त से प्यास , महान न उनको बोलो .

5.
सुनकर बातें आपकी , विस्मय हुआ अपार ,
ठकुरसुहाती भूमिका , चाटुक उपसंहार .
चाटुक उपसंहार , कथन में मिसरी घोली ,
नहीं एक भी बात , तथ्य को लेकर बोली .
कह गुलिया कविराय ,सभी बैठे जल भुनकर ,
मुखिया को भी खेद , प्रशंसा झूठी सुनकर .

विवेक रंजन श्रीवास्तव
ऐ 233 , ओल्ड मिनाल रेजीडेंसी जे के रोड
भोपाल 462023
Mob 7000375798
shrivivekranjan@gmail.com

नारी विमर्श की मुखर अभिव्यक्ति — सुभद्रा कुमारी चौहान की कथा दृष्टि

सुभद्रा कुमारी चौहान की खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी , हिन्दी के सर्वाधिक पढ़े व गाये गये गीतों में से एक है ! यह गीत स्वयं में गीत से अधिक वीर गाथा की एक सच्ची कहानी ही है ! जिसमें कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई के जीवन के सारे घटना क्रम को एक पद्यात्मक कहानी के रूप में इस सजीवता से प्रस्तुत किया है कि पाठक या श्रोता वीर रस से भाव विभोर हो उठता है ! यह रचना उनकी पहचान बन गई है ! इस गीत की संगीत बद्ध प्रस्तुतियां किसी भी देश राग के आयोजन को ओजस्विता से भर देती है . जबलपुर की ही साधना उपाध्याय जी के दल ने इस गीत पर बेहद खूबसूरत नृत्य नाटिका तैयार की है जिसकी अनेक प्रस्तुतियां जगह जगह हुई हैं . उनके गीत देश राग से ओत प्रोत हैं , उनके दो कविता संग्रह प्रकाशित हुये , उनकी कहानियां समाज के तानो बानो के बीच से नारी अस्मिता की पहचान उजागर करती हुई , हृदय स्पर्शी कथानको को एक सकारात्मक हल की ओर प्रेरित करती हैं .

किसी भी मनुष्य का व्यक्तित्व एवं उसका बौद्धिक विकास , उसके परिवेश , देश , काल ,परिस्थिति के अनुरूप होता है ! सुभद्रा कुमारी चौहान एक साथ ही प्रगतिशील नारी , गृहिणी , मां , कवि , लेखिका , स्वतंत्रता संग्राम सेनानी , जननेत्री व राजनेता थीं ! वे जमीन से जुड़ी हुई थीं , अतः उनके अनुभवों का संसार बहुत विशाल था ! उन दिनो स्वतंत्रता आंदोलन चल रहा था . भारतीय समाज में जातिगत , वर्गगत , धर्मगत , लिंगगत रूढ़ियां अपने चरम पर थीं ! पर्दा प्रथा , बाल विवाह , छुआ छूत , दहेज प्रथा , बहुविवाह , नारी उत्पीडन , सती हो जाने जैसी कुप्रथायें उनके समय समाज में स्त्रियो की प्रगति की बाधा बनी हुई थी . अपनी कहानियो से सुभद्रा जी ने इन कुप्रथाओ के विरुद्ध भरपूर आवाज उठाई . यही कारण है कि उनके साहित्य में कहीं भी नाटकीयता व बनावटीपन नहीं है वरन् वह हृदय स्पर्शी , वास्तविकता के निकट जन मन की अभिव्यक्ति बन पडा है ! उन्होने महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में हिस्सेदारी निभाई स्वाभाविक है कि उनकी लेखनी ने देश प्रेम के मनोभावो का चित्रण अपनी कविता कहानियो में भी किया . सुभद्रा जी का जन्म १९०४ में इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गांव में रामनाथसिंह के जमींदार परिवार में हुआ था ! उनके पिता ,पति लक्ष्मण सिंह , सखी महादेवी वर्मा, ने उनके व्यक्तित्व निर्माण में भरपूर सहयोग किया . उन्होंने जो भी लिखा है वह सब का सब मर्मस्पर्शी , उद्देश्यपूर्ण व शाश्वत बन कर हिन्दी साहित्य की धरोहर के रूप में सुप्रतिष्ठित है ! केवल कक्षा ९ वी तक शालेय शिक्षा पढ़ी हुई महिला अपने अनुभवो के आधार पर कितना प्रौढ़ व परिपक्व लिख सकती है इसका सशक्त उदाहरण सुभद्रा जी हैं.

बिखरे मोती उनका पहला कहानी संग्रह है , इसमें भग्नावशेष, होली , पापीपेट , मंझलीरानी , परिवर्तन , दृष्टिकोण , कदम के फूल , किस्मत , मछुये की बेटी , एकादशी , आहुती , थाती , अमराई , अनुरोध , व ग्रामीणा कुल १५ एक दूसरे से बढ़कर कहानियां हैं ! इन कहानियों की भाषा सरल बोलचाल की भाषा है ! अधिकांश कहानियां नारी विमर्श पर केंद्रित हैं! उनकी कथा दृष्टि की सबसे महत्वपूर्ण बात यही है कि नारी मुक्ति व प्रगति जो शायद उनके समय के लिये नव चेतना थी पर उन्होंने बहुत स्पष्ट तथा खुलकर लेखन किया . उनके स्वयं के देश व साहित्य के लिये समर्पित जीवन का प्रभाव उनकी व्यापक सार्वभौमिक लेखनी पर स्पष्ट दिखता है . उनकी कहानियां नारी विमर्श की अग्रिम पंक्ति की संवाहिका हैं . सुभद्रा कुमारी चौहान के समूचे साहित्य की सफलता जिस

आधारभूत तथ्य पर केंद्रित है , वह मेरे पास उपलब्ध बिखरे मोती कहानी संग्रह की प्रति पर एक मित्र के द्वारा दूसरे को पुस्तक भेंट करते हुये की गई टिप्पणी है ! जिसमें स्याही वाली कलम से सुंदर अक्षरो में अंकित है " ये कहानियां तुम्हें प्रेरणा देंगी , जन्म दिवस पर सप्रेम भेंट " जो इन कहानियों की लोकप्रियता , उपयोगिता व आम पाठक का साहित्य अनुराग प्रदर्शित करती है ! आज कितने पाठक स्वयं पुस्तकें खरीद कर पढ़ते हैं ? भेंट करना तो बाद की बात है ! ऐसी रुचिकर हृदय स्पर्शी कितनी कहानियां लिखी जा रहीं है कि वे पाठकों के बीच चर्चा का विषय बन जावें ? उनकी कहानियां कृत्रिम , सप्रयास लिखी नहीं लगती ! वे तो आसपास से ही उठाई गई विषय वस्तु की तरतीब से प्रस्तुति ही हैं !

उन्मादिनी शीर्षक से उनका दूसरा कथा संग्रह १९३४ में छपा ! इस में उन्मादिनी , असमंजस , अभियुक्त , सोने की कंठी , नारी हृदय , पवित्र ईर्ष्या , अंगूठी की खोज , चढ़ा दिमाग , व वेश्या की लड़की कुल ९ कहानियां हैं ! इन सब कहानियो का मुख्य स्वर पारिवारिक व सामाजिक परिदृश्य ही है!

कहानी "नारी हृदय" में प्रमिला के ३ पत्रो के माध्यम से हमें यह समझने को मिलता है कि तत्कालीन समय में स्त्रियां कितनी विवश थीं .
एक पत्रांश उधृत है " मेरे स्वामी .....परमात्मा ने स्त्री-जाति के हृदय में इतना विश्वास, इतनी कोमलता और इतना प्रेम शायद इसीलिए भर दिया है कि वह पग-पग पर ठुकराई जावे। जिस देवता के चरणों पर हम अपना सर्वस्व चढ़ाकर, केवल उसकी कृपा-दृष्टि की भिखारिन बनती है, वही हमारी तरफ आँखें उठाकर देखने में अपना अपमान समझता है। माना कि मैं समाज की आँखों में आपकी कोई नहीं। किंतु एक बार अपना हृदय तो टटोलिए, और सच बतलाइए क्या मैं आपकी कोई नहीं हूँ। समाज के सामने अग्नि की साक्षी देकर हम विवाह-सूत्र में अवश्य नहीं बँधे, किंतु शिवजी की मूर्ति के सामने भगवान् शंकर को साक्षी बनाकर क्या आपने मुझे नही अपनाया था ? यह बात गलत तो नहीं है। मैं जानती हूँ कि आप यदि मुझसे बिलकुल न बोलना चाहें, तब भी मैं आपकी कुछ नहीं कर सकती। यदि किसी से कुछ कहने भी जाऊँ तो सिवा अपमान और तिरस्कार के मुझे क्या मिलेगा ? आपको तो कोई कुछ भी न कहेगा, आप फिर भी समाज में सिर ऊँचा करके बैठ सकेंगे। किंतु मेरे लिए कौन-सा स्थान रहेगा ? अभी रूखा-सूखा टुकड़ा खाकर, जहाँ रात को सो रहती हूँ, फिर वहाँ से भी ठोकर मारकर निकाल दी जाऊँगी, और उसके बाद गली-गली की भिखारिन बन जाने के अतिरिक्त मेरे पास दूसरा क्या साधन बच रहेगा ? संभव है आप मुझे दुराचारिणी या पापिन समझते हों; और इसीलिए बहुत सोच-विचार के बाद आपने मुझसे संबंध-त्याग में ही कुशलता समझी हो, और पत्र लिखना बंद कर दिया हो।...अभागिनी प्रमिला .
कहानी का अंत सकारात्मक करते हुये सुभद्रा जी ने लिखा ...पत्नी ने कहा ..." तुम बड़े कठोर हो,' उसने मुँह फेरे-फेरे उत्तर दिया।
'क्यों ?' मैंने उसका मुँह अपनी तरफ फेरते हुए पूछा, 'मैं कठोर कैसे हूँ ?'
अपनी आँखों के आँसू पोंछती हुई वह बोली, यदि तुम निभा नहीं सकते थे, तो उस बेचारी को इस रास्ते पर घसीटा ही क्यों ?
मुझे हँसी आ गई, हालाँकि प्रमिला के पत्रों को पढ़ने के बाद, मेरे हृदय में भी एक प्रकार का दर्द-सा हो रहा था। मुझे स्त्रियों की असहायता, उनकी विवशता और उनके कष्टों से बड़ी तीव्र मार्मिक पीड़ा हो रही थी।
मैंने किंचित् मुस्कराकर कहा, पगली ! यह पत्र मेरे लिए नहीं लिखे गए। "

कविताओ की स्थिति हिन्दी साहित्य में अजब सी है , हमारा सारा पुरातन साहित्य काव्य में ही है , पर सुभद्रा जी के समय भी पत्रिकायें कविताओ पर पारिश्रमिक नही देते थे . उनसे संपादकगण गद्य रचना चाहते थे और उसके लिए पारिश्रमिक भी देते थे .समाज की अनीतियों से उत्पन्न जिस पीड़ा को वे व्यक्त करना चाहती थीं , उसकी अभिव्यक्ति का उचित माध्यम गद्य ही हो सकता था, अतः सुभद्रा जी ने कहानियो की विधा को अपनाया. उनकी कहानियों में देश-प्रेम के साथ-साथ समाज को, अपने व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने के लिए संघर्षरत नारी की पीड़ा और विद्रोह का स्वर मिलता है। साल भर में ही उन्होंने पहला कहानी संग्रह 'बिखरे मोती' ही लिख डाला। 'बिखरे मोती' छपवाने के लिए वे इलाहाबाद गईं। 'बिखरे मोती' पर सुभद्रा जी को सेकसरिया पुरुस्कार भी मिला . उनकी अधिकांश कहानियाँ सत्य घटनाओ की लोकव्यापी प्रस्तुतियां हैं। देश-प्रेम के साथ-साथ उनमें गरीबों के प्रति सच्ची सहानुभूति मिलती है।

उनकी कहानियों में जहाँ स्त्री सरोकारों की बात दिखती है तो वे सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों की कसौटी पर भी खरी हैं . उनकी कहानियाँ स्वतंत्रता आंदोलन के दौर की नारी का मानसिक पटल प्रस्तुत करती हैं। आज़ादी के पूर्व की भारतीय नारी की दशा और दिशा के आकलन में वे हमारी बड़ी मदद करती हैं। उनकी नारी केवल राजनीतिक आज़ादी नहीं चाहती बल्कि सभी प्रकार की गुलामी से मुक्ति चाहती है। वह 'स्वतंत्रता' नहीं, 'स्वराज्य' चाहती है। परतंत्रता नहीं, स्वानुशासन चाहती है। रूढ़ियों-बंधनों से मुक्त होकर वह स्वनियंत्रण में रहना चाहती है। सुभद्रा जी की सभी कहानियों को हम एक तरह से सत्याग्रही कहानियाँ कह सकते हैं। उनकी स्त्रियाँ सत्याग्रही स्त्रियाँ हैं। दलित चेतना और स्त्रीवादी विमर्श को उठाने वाली सुभद्राकुमारी चौहान हिंदी की पहली कहानीकार हैं .

"सीधे साधे चित्र" सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा व अंतिम कथा संग्रह है ! इसमें कुल १४ कहानियां हैँ . रूपा , कैलाशी नानी , बिआल्हा , कल्याणी , दो साथी , प्रोफेसर मित्रा , दुराचारी व मंगला ८ कहानियों की कथावस्तु नारी प्रधान पारिवारिक सामाजिक समस्यायें हैं ! हींगवाला , राही , तांगे वाला , एवं गुलाबसिंह कहानियां राष्ट्रीय विषयों पर आधारित हैँ.उनके कथा संग्रहों में कुल ३८ कहानियाँ (क्रमशः पंद्रह, नौ और चौदह) प्रकाशित हैं . सुभद्रा जी की समकालीन स्त्री-कथाकारों की संख्या अधिक नहीं थीं . अपनी व्यापक कथा दृष्टि से वे एक लोकप्रिय नारी विमर्श की ध्वज वाहिका कथाकार के रूप में हिन्दी साहित्य जगत में सुप्रतिष्ठित हैं ! समय के साथ भले ही सुभद्रा जी की कहानियो के परिवेश का वर्णन पुराना पड़ गया हो किन्तु आज भी देश भक्ति की भावना , और आज की स्त्रियो के मर्यादा पूर्ण स्वातंत्र्य की प्रेरणादायी इन कहानियो की प्रासंगिकता यथावत बनी हुई है .

प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध

भोपाल

कविता

हमको प्यारा है भारत हमारा वतन
सारी दुनिया का सबसे सुहाना चमन

हम हैं पंछी ये गुलशन यहाँ बैठ मन
चैन पाता सजाता नये नित सपन ।

इसकी माटी में खुशबू है एक आब है
जैसे काश्मीर, दो आब, पंजाब है

इसकी धरती है चंदन, सुहाना गगन
धन भरे खेत खलिहान, मैदान, वन।

इसकी तहजीब का कोई सानी नहीं
जो पुरानी होकर भी पुरानी नहीं

हर डगर-बिखरा मिलता यहाँ अपनापन
प्रेम, सद्भाव संतोष है जिसके धन ।

हवा पानी में मीठी मोहब्बत घुली
जिंदगी यहाँ है गंगाजल में घुली

फूल सा है खिला मन, खुला आचरण
सद् समझ, ईद होली बैसाखी मिलन ।

शीला गहलावत 'सीरत'

हरियाणा, चण्डीगढ़।

गीत

सत कर्मों से बनती जग में,मानव की पहचान ।
किस चक्कर में पड़ा हुआ है,अब तक तू नादान ।।

मस्त हवा के झोंकों से यह ,नाच रहा मन मोर ।
कब होती है संध्या जाने , कब होती है भोर।
प्रेमानंद में डूब के ही , मिलता ईश्वर - ज्ञान।।
सत कर्मों.....

मन के मन्दिर में खुश हो कर, है दिव्या अभिसार
चोटी की अनछुई बर्फ से, हो जाता है प्यार
चंचल नदियांँ ताल-तलैया, गाते उसका गान
सत कर्मों.....

बगिया में अनंत पुष्पों के, वट है खिले अपार
धरती अम्बर क्या है सब पर,उसका है अधिकार ।
सीरत को भी आठों पहर अब , रहता उसका ध्यान।।
सत कर्मों.....

डॉ. इंद्र सेंगर
विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली
drindrasengar@gmail.com

दिवंगत हिन्दी सेवी': आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन'

आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' का जन्म 16 सितम्बर, 1916 ई. को उत्तर प्रदेश के मेरठ जनपद (अब गाजियाबाद) की हापुड़ तहसील के बाबूगढ़ नामक ग्राम में हुआ था। बाबूगढ़ भारत की चार विशेष घुड़सवार फौजों की छावनियों में से एक रहा है। ये छावनियाँ 'रिमाउण्ड डिपो' कहलाती थीं। इनमें बाबूगढ़ (इण्डिया) के पते से ही पत्राचार होता था।

सुमन जी के पिता श्री हरिश्चन्द्र सारस्वत बाबूगढ़ की छावनी में सैनिक अश्वशाला के निरीक्षक थे। सरकारी सेवा से जो समय बचता था, उसमें वे पौरोहित्य किया करते थे। इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय बात यह है कि संस्कृत शिक्षा रहित होते हुए भी वे पौरोहित्य में बड़े-बड़े धुरन्धरों के छक्के छुड़ा देते थे।

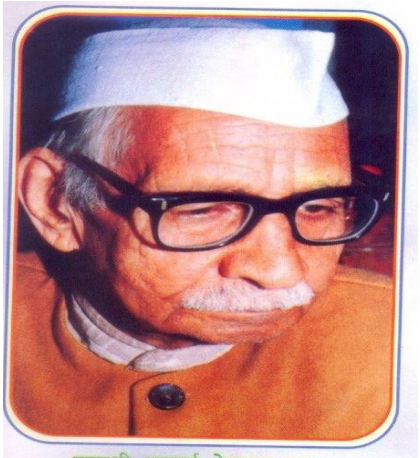
पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन

सुमन जी के परिवार में उनके बड़े भाई श्री लखीराम शर्मा को छोड़कर और कोई पढ़ा-लिखा नहीं था। आपके सुकुमार जीवन के 5-6 बसन्त माँ की ममतामयी बाँहों में झूलते हुए गुजर गए। फिर एक दिन वह आया कि बगल में बस्ता दबाए हाथ में तख्ती लिए आप ग्राम की पाठशाला में पढ़ने जाने लगे। यह सन् 1924 ई. की बात है।

जिस समय 'साइमन कमीशन' का अंगद-चरण भारत में जम चुका था, उस समय आप पापहारिणी जाह्नवी कि किनारे महामहिम दर्शनानन्द सरस्वती की चरण-छाया में पोषित शिक्षा केन्द्र गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रविष्ट हुए। यह सन् 1928 ई. की बात है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने के कारण सन् 1932 ई. में आप सर्वप्रथम महाविद्यालय के छोटे ब्रह्मचारियों की आर्य किशोर सभा के मंत्री बन गए। इतना ही नहीं, उसी वर्ष आपने आर्य किशोर सभा के हस्तलिखित मासिक मुखपत्र 'किशोर मित्र' के 'दीपमालिका अंक' का सम्पादन भी किया था। यह आपकी प्रतिभा का ही चमत्कार था कि इस अंक के कुशल सम्पादन, सौंदर्य एवं सौष्ठव से प्रभावित होकर अनेक विद्वानों ने मुक्त कंठ से इस अंक की प्रशंसा की थी। उक्त अंक की अनेकशः विद्वानों द्वारा सराहना किए जाने का सुपरिणाम यह हुआ कि आपकी साहित्यिक चेतना का उदीयमान सूर्य अपनी तेजस्वी रश्मियों को साहित्य-जगत् में प्रकाशित करता हुआ आलोकित होने लगा और उसी वर्ष बसन्तोत्सव के पावन पर्व पर आपने एक और रत्न हिन्दी-जगत् को दिया था। यह था हस्तलिखित 'सुधांशु' मासिक पत्र, जो अविरत कीर्ति अर्जित करता हुआ कई वर्षों तक प्रकाशित होता रहा। उस युग में 'सुधांशु' ने हिन्दी-जगत् को अनेक ऐसे विशेषांक प्रस्तुत किए, जिनकी पं. हरिशंकर शर्मा कविरत्न, श्री द्वारिका प्रसाद 'सेवक', श्री ईश्वरदत्त मेधार्थी और पं. नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ आदि विद्वानों एवम् शिरोमणियों ने उन्मुक्त हृदय से प्रशंसा की थी।

उपर्युक्त पत्रों की भांति ही आपने महाविद्यालय के संस्कृत एवं हिन्दी विभागों के बड़े ब्रह्मचारियों की विद्वत्कला परिषद् के मासिक मुखपत्र 'विद्वत् कला' का भी सफल सम्पादन किया था।

सन् 1936 ई. में आपकी गुरुकुलीय शिक्षा पूर्ण हो गयी। उसी समय शीतलप्रसाद 'विद्यार्थी' ने शान्ति प्रेस, सहारनपुर से 'आर्य' नामक एक सामाजिक-क्रान्तिकारी सचित्र साप्ताहिक पत्र निकालने का विचार सुमन जी के समक्ष प्रस्तुत किया। सुमन जी ने उनके अनुरोध पर, उस पत्र का एक वर्ष तक सुचारु रूपेण सम्पादन किया, परन्तु आर्थिक समस्याओं के कारण वह पत्र बन्द हो गया। उसी वर्ष आप 5 फरवरी, 1938 को आयोजित आर्य किशोर सभा के रजत-जयन्ती महोत्सव के स्वागताध्यक्ष मनोनीत किये गये। आपने इस महोत्सव में पूर्ण मनोयोग से कार्य किया। इसी वर्ष हरिद्वार में होने वाले कुम्भ मेले के अवसर पर आपने 8 अप्रैल, 1938 को एक विराट् हिन्दी कवि सम्मेलन का आयोजन किया था, जिसकी अध्यक्ष श्रीमती होमवती देवी थीं।

मई, सन् 1938 में सुमन जी का विवाह हो गया और वे जीविकोपार्जन की चिन्ता से घिर गए। परिणामतः जनवरी, 1939 में 'आर्य सन्देश' के सम्पादकीय विभाग में आगरा चले गए। यह पत्र आर्थिक कठिनाइयों के कारण केवल दो मास तक ही चल कर बन्द हो गया। फलतः मार्च, 1939 से आप 'आर्य मित्र' में चले गए। उस समय आपका

वेतन बारह रुपये मासिक था। अक्तूबर, 1939 ई. में अमेठी राज्य के राजकुमार रणंजयसिंह ने अपने खर्चे पर आपको 'मनस्वी' मासिक का सम्पादन करने के विषय में विचार-विमर्श करने के लिए बुलाया और चालीस रुपये मासिक पर नियुक्ति की सूचना देते हुए 4 नवम्बर, 1939 को इस प्रकार लिखा-"आप यहाँ शीघ्र से शीघ्र चले आइए, क्योंकि 'मनस्वी' के प्रकाशन में बहुत विलम्ब हो रहा है। आपके लिए चालीस रुपये मासिक का प्रबन्ध हो जाएगा।" सुमन जी वहाँ चले तो गए परन्तु वहाँ का वातावरण और क्रियाकलाप उन्हें रास नहीं आए और गर्मियों में राजकुमार के विजगापट्टम की समुद्र-यात्र पर जाने के बाद उनकी अनुपस्थिति में तार द्वारा अपने त्याग-पत्र की सूचना देकर मण्डी धनोरा (मुरादाबाद) से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'शिक्षा सुधा' में पहुँच गए। दिसम्बर, 1940 में आपने वहाँ से भी त्यागपत्र दे दिया। अक्तूबर, 1941 में आप हिन्दी-भवन, लाहौर में साहित्यिक सहायक होकर चले गए। वहाँ पर आपकी भेंट प्रसिद्ध नाटककार और कवि उदय शंकर भट्ट और हरिकृष्ण 'प्रेमी' से हुई, जिनकी प्रेरणा से आप सम्पादन -कार्य के साथ-साथ लेखन-कार्य की ओर भी प्रवृत्त हो गए। उन दिनों हिन्दी की रत्न, भूषण, प्रभाकर आदि परीक्षाओं की सहायक पुस्तकें तैयार करने का श्रेय सुमन जी ने ही प्राप्त किया था।

लाहौर में रहते हुए सुमन जी हिन्दी 'मिलाप' में उसके सम्पादक श्री लेखराज के साथ काम करने लगे। सन् 1942 के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सुमन जी का निवास क्रांतिकारी नेताओं और कार्यकर्ताओं की शरण-स्थली बन गया। उन क्रान्तिकारियों में पत्रकार, अध्यापक, राजनीतिक और छात्र-छात्राएँ शामिल थे। पुलिस को इस बात का सुराग मिल गया और एक दिन वह आया कि पुलिस ने उनके घर को चारों ओर से घेर लिया। तलाशी में आचार्य दीपंकर पुलिस के हाथ लगे। क्योंकि वे विकलांग थे, इसीलिए पुलिस को उन्हें पहचानने में देर नहीं लगी। इसी कारण सुमन जी भी पुलिस की आँखों में खटकने लगे और कुछ दिनों बाद उन्हें भी नजरबन्द कर लिया गया। इस प्रकार जून, 1945 तक स्वतन्त्रता-सेनानी के रूप में सक्रिय भाग लेने के उपरान्त जुलाई, 1945 ई. में आप दिल्ली आकर जम गए।

मार्च, 1956 में आपके जीवन में ऐसा मोड़ आया कि आप 'साहित्य अकादमी' नई दिल्ली की सेवाओं से जुड़ गए। यहाँ पर लगभग 24 वर्ष प्रकाशन एवं कार्यक्रम अधिकारी के पद पर कार्य करने के उपरान्त अक्तूबर, 1979 से आपने दस खण्डों में प्रकाश्य 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' नामक आकर-ग्रन्थ के प्रणयन द्वारा हिन्दी के संवर्धन तथा विकास का वास्तविक इतिहास प्रस्तुत करने का जो महत्त्वपूर्ण अभियान प्रारम्भ किया, वह वास्तव में आपकी साहित्यिक साधना की चरम परिणति है। यदि आपने इस योजना की परिकल्पना न की होती, तो अतीत के अन्धकार में विलुप्त होते जा रहे हिन्दी के हजारों लेखकों, मनीषियों, सेवकों और साधकों के बारे में हम अनभिज्ञ ही बने रहते। इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के अभी तक दो खण्ड ही प्रकाशित हुए थे कि उन्हें श्वास-रोग ने दबोच लिया और लगभग 10 वर्ष की लम्बी बीमारी के बाद 23 अक्तूबर, 1993 की रात्रि को 8:50 पर वे स्वयं भी दिवंगत हिन्दी-सेवियों की सूची में सम्मिलित हो गए। हिन्दी-साहित्य का एक विशाल जलयान, जो अनेकशः बहुमूल्य रत्नों से लदा हुआ था, काल के महासागर में जल-समाधि ले गया।

व्यक्तित्व

सुमन जी को स्वदेशी और खादी से स्वाभाविक प्रेम था, उनमें किसी फसली-नकली की मिलावट नहीं थी। मझोला कद, स्वच्छ-सादा लिबास, छरहरा बदन, सदाबहार पुष्प की भाँति सदैव मुस्कान बिखेरता हुआ चेहरा, और उस पर जटित काला तिल। उन्नत मस्तक, चिन्तनशील आँखें मिलने वाले पर अनायास ही अपना सम्मोहक पाश डाल देती थीं। उस पर भी खादी का कुर्ता, चूड़ीदार पाजामा अथवा धोती, शेरवानीनुमा लम्बा कोट, सिर पर खादी की नुकीली टोपी और पैरों में पम्प-शू। यदा-कदा साहित्यिक अनुष्ठानों में श्वेत खादी के परिधान धारण कर लेते थे। यद्यपि जीवन का काफी सफर वे तय कर चुके थे फिर भी वे थके नहीं थे। वे अदम्य साहस, पौरुष और कर्मण्यता की प्रतिमूर्ति थे। अपनी राह के पत्थर हटाकर चलने का बल उनमें था। वे कायर नहीं बहादुर थे। उनकी निष्ठा, स्फूर्ति, सजीवता, मस्ती एवं फक्कड़पन, औदार्य और वाक्पटुता तथा आत्माभिमान अनुकरणीय हैं। आतिथ्य-सत्कार उनके जीवन का विशिष्ट अंग था। बड़ा और छोटा प्रत्येक साहित्यकार उनका आतिथ्य प्राप्त कर सकता था। प्रत्येक अतिथि के सम्मान की ललक उनके कमरे में सुशोभित कबीर की ये पंक्तियाँ प्रस्तुत करती हैं-

साईं इतना दीजिये, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

ये पंक्तियाँ सुमन जी की संतोष-वृत्ति का प्रमाण हैं। यही कारण है कि सुमन जी का अपना एक आदर्श था, चरित्र था। उनका अहम् किसी द्वेष का कायल नहीं था। वे विनोदप्रिय थे। साहित्यिक परिवेश से हटकर दैनिक एवं व्यावहारिक जीवन में व्यंग्य विनोद, हास परिहास उनकी मस्ती के परिचायक थे। उन्हें कभी क्रोध नहीं आता था, जब कोई सत्य का मर्दन करके उनके अहम् और स्वाभिमान पर चोट पहुँचाने का प्रयास करता था, तो उनका क्रोध तुलसी के परशुराम से कम नहीं होता था। हाँ, दिल के वे एकदम साफ थे। कोई गलती हो जाय, उनसे क्षमा माँग लो; सुमन जी के यहाँ सर्वदा के लिए माफ। उनके व्यक्तित्व को स्पष्ट करने में उन्हीं की पंक्तियाँ सार्थक सिद्ध होती हैं-"मैं अपने साहित्यिक जीवन में प्रारम्भ से ही अध्ययनशील रहा हूँ। संघर्ष को अपना मूल ध्येय मानता हूँ। वास्तव में निरन्तर संघर्ष करते रहने की भावना तथा अनवरत अध्ययन करते

रहने की लालसा ने ही मुझे कर्म-पथ पर बढ़ने की अदम्य प्रेरणा दी। जिन कार्यों को कोई भी न कर सके, ऐसे कार्यों में सहज ही हाथ डालने की मेरी आदत-सी हो गई है। लेखन, अध्ययन, चिन्तन और मनन के दैनिक कार्य से जब जी उकता जाता है तो जन-सेवा की पावन मंदाकिनी में अवगाहन करके मैं अपने में ताजगी लाता हूँ। कबीर का फक्कड़पन, रहीम का स्वाभिमान और तुलसी की परोपकार-परायणता मेरे जीवन के प्रेरणा-स्रोत रहे हैं।"

रचना-संसार-माँ भारती के मंदिर में जिन कृतियों का पावन नैवेद्य लेकर सुमन जी ने अनन्यार्चना की, उनमें मौलिक और सम्पादित दोनों ही प्रकार की कृतियाँ हैं। मौलिक कृतियों की संख्या तीन दर्जन से ऊपर और सम्पादित कृतियों की संख्या पाँच दर्जन से भी अधिक है। उनका रचना -संसार इस प्रकार है-

मौलिक रचनाएँ:

काव्य-मल्लिका (1943), बन्दी के गान (1945), कारा (1946), और अंजलि (2010)।
समीक्षा-हिन्दी साहित्य: नये प्रयोग (1949), साहित्य-सोपान (1950), साहित्य-विवेचन (1952), हिन्दी साहित्य और उसकी प्रगति (1958), साहित्य विवेचन के सिद्धान्त (1958), आधुनिक हिन्दी साहित्य (1960), हिन्दी साहित्य को आर्यसमाज की देन (1970), साठोत्तरी हिन्दी कविता (1971), मेरठ जनपद की साहित्यिक चेतना (1977), शोध और सन्दर्भ (1985), चिन्तन और चर्चा (1986), नई पीढ़ी के कवि, कृतियाँ और कला एवं कला और कृतियां (तीनों अप्रकाशित)।
इतिहास-हमारा संघर्ष (1946), कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास (1947), आजादी की कहानी (1949), हम स्वाधीन हुए (1987), अगस्त क्रान्ति (1996)।
जीवनी-नेताजी सुभाष (1946), नये भारत के निर्माता (1948), जीवन-ज्योति (1962), अमरदीप (1968), यशस्वी पत्रकार (1986), भारत के कर्णधार (1996)।
संस्मरण-रेखाएँ और संस्मरण (1975), जाने-अनजाने (1989), चमकते जीवन: महकते संस्मरण (1990), मेरे प्रिय: मेरे आराध्य (1993)।
निबन्ध-प्रभाकर निबन्धावली (1948), सुमन-सौरभ (1950), कुछ अपनी: कुछ पराई, प्रारंभिक लेख (दोनों अप्रकाशित)।
संदर्भ ग्रंथ-दिवंगत हिन्दी-सेवी (10 खण्डों में प्रकाश्य)-प्रथम खण्ड (1981), द्वितीय खण्ड (1983)।
बाल-साहित्य-ये भी बोलते हैं (1981), खिलौने वाला (1984), इतना तो सीखो ही (1996)।

सम्पादित एवं संकलित रचनाएँ:

काव्य-लाल किले की ओर (1946), गांधी भजनमाला (1948), हिन्दी के लोकप्रिय कवि: नीरज (1960), हिन्दी के लोकप्रिय कवि: रामावतार त्यागी (1961), हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ प्रेमगीत (1961), आधुनिक हिन्दी कवयित्रियों के प्रेमगीत (1965), नारी तेरे रूप अनेक (1966), वन्दना के स्वर (1975)।
भाषा-परिचय-उर्दू और उसका साहित्य (1952), तमिल और उसका साहित्य (1952), तेलुगू और उसका साहित्य (1953), मराठी और उसका साहित्य (1953), मालवी और उसका साहित्य (1953), बंगला और उसका साहित्य (1953), अवधी और उसका साहित्य (1954), भोजपुरी और उसका साहित्य (1954), संस्कृत और उसका साहित्य (1955), गुजराती और उसका साहित्य (1956), प्राकृत और उसका साहित्य (1956)।
कहानी-गल्प-माधुरी (1948), मनोरंजक कहानियाँ (1950), पारिवारिक कहानियाँ (1951)।
एकांकी-नीर-क्षीर (1949), एकांकी संगम (1958)।
निबन्ध-राष्ट्रभाषा हिन्दी (1948), गद्य सरोवर (1951), निबन्ध भारती (1957), सरल गद्य (1962)।
जीवनी-संस्मरण-जैसा हमने देखा (1950), पं. पद्मासिंह शर्मा (1951), साहित्यिकों के संस्मरण (1952), जीवन-स्मृतियाँ (1952), नेताओं की कहानी: उनकी जुबानी (1952), बापू और हरिजन (1953), भारतीय आत्माएँ (1975)।
अभिनन्दन-ग्रंथ-डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर अभिनन्दन ग्रंथ (1979), निष्काम-साधक (1984), समर्पित यायावर: राजेन्द्र शर्मा (1985)।
स्मृति-ग्रंथ-आत्मशिल्पी कमलेश (1976), अणुव्रती तापस: गोपीनाथ अमन (1988), चाँदकरण शारदा जन्म-शती-ग्रंथ (1988)।
स्मारिकाएँ-भारतीय साहित्य: आदान-प्रदान (1970), स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज (1973), राजभाषा हिन्दी: प्रगति और प्रयोग (1975), राजभाषा हिन्दी: प्रगति के बढ़ते चरण (1976)।
सम्पादन-सहयोग-प्रेरक साधक (बनारसीदास चतुर्वेदी अभिनन्दन-ग्रंथ), बाबू वृंदावन दास अभिनन्दन ग्रंथ, स्वामी रामानन्द शास्त्री अभिनन्दन ग्रंथ, हिन्दी पत्रकारिता: विविध आयाम, मेरठ जनपद: एक सर्वेक्षण, समर्पण और साधना, जानकी देवी बजाज अभिनन्दन ग्रंथ, महाकवि शंकर अभिनन्दन ग्रंथ तथा हीरालाल दीक्षित अभिनन्दन ग्रंथ।
पत्र-पत्रिकाएँ-आलोचना (त्रैमासिक), मनस्वी (मासिक), शिक्षा-सुधा (मासिक), आर्य (साप्ताहिक), आर्य सन्देश तथा आर्यमित्र (साप्ताहिक), हिन्दी-मिलाप (दैनिक) आदि।
भूमिका-लेखन-सुमन जी ने अपनी साहित्यिक यात्रा में अन्य साहित्यकारों द्वारा विभिन्न विधाओं में लिखित लगभग सौ पुस्तकों की भूमिकाएँ लिखी हैं। इनके अतिरिक्त स्वयं लिखित कतिपय पुस्तकों की भूमिकाएँ भी उल्लेखनीय हैं।

उपर्युक्त रचनाओं के आधार पर सुमन जी के कृतित्व को निम्नलिखित रूपों में मूल्यांकित किया जा सकता है-

राष्ट्रीय संचेतना एवं जीवन की पुकार के कवि :

अपनी काव्य-रचनाओं में सुमन जी ने विरही साधक एवं राष्ट्रीय चेतना के कविरूप में अनुभूतियों का सम्प्रेषण किया है, जिनमें से प्रथम दो और चतुर्थ रचनाएँ मुक्तक और तृतीय रचना इतिवृत्तात्मक खण्डकाव्य हैं। डॉ. विमल कुमार जैन के शब्दों में "यह खण्डकाव्य एक जागृति का काव्य है, जिसका महानतम सन्देश है मातृ-भू पर सर्वस्व लुटा देना। इस प्रकार इसके भाव तो सुन्दर हैं ही, भाषा भी मनोज्ञ एवं परिमार्जित है, जिसमें नैसर्गिक आलंकारिक छटा ने सौष्ठव को और भी परिवर्धित किया है।" आपके काव्य-संग्रह 'अंजलि' की भूमिका में कविवर श्री माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा है-"कविता को अपनी जागीर कहकर, बाँध कर रखने का जो आयास हम करते हैं, उसमें शब्दों की क्लिष्टता, कल्पनाओं की दुरूहता और सबसे अधिक हमारे जीवन के हमारे काव्य से दूर से दूर रहने और होते जाने वाले स्वभाव का हम इतना पोषण करते हैं कि हमारी कहन, काव्य का आनन्द देने वाली होने के बजाय कूट प्रश्नों की बुझौवल-सी हो जाती है। क्षेमचन्द्र सुमन ने वह पथ नहीं पकड़ा।"

तटस्थ समीक्षक :

सुमन जी ने अपनी साहित्य-विवेचना सम्बन्धी कृतियों द्वारा हिन्दी-साहित्य के इतिहास में भी सर्वदा नूतन क्रान्ति का श्रीगणेश किया। उनका 'साहित्य विवेचन' अकेला ही ग्रंथ हिन्दी में ऐसा है, जिसकी महत्ता शीर्षस्थ विद्वानों ने स्वीकार की है। इस ग्रंथ के सम्बन्ध में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने-"आपने पौर्वात्य और पाश्चात्य दोनों ही दृष्टियों से साहित्य-विवेचन का कार्य कर दिखाया है...पुस्तक की उपादेयता के बारे में तो कोई सन्देह है ही नहीं..." लिखकर अपनी जो आस्था प्रकट की है, उसको डॉ. नगेन्द्र के इस अभिमत से और भी बल मिलता है-"इसमें भारतीय और पाश्चात्य दोनों ही काव्यशास्त्रों को अपने विश्लेषण का आधार बनाकर साहित्य के नवीन और प्राचीन सभी रूपों का विवेचन किया है...। मैं समझता हूँ, गद्य-गीत रेखाचित्र और रिपोर्ताज का विवेचन सबसे पहले इसी ग्रंथ में हुआ है। " डॉ. सत्येन्द्र ने जहाँ इस पुस्तक को सिद्धान्त, उदाहरण और इतिहास की त्रिवेणी कहा है, वहाँ प्रख्यात आलोचक श्री शिवदान सिंह चैहान ने इसकी उपादेयता सिद्ध करते हुए लिखा है-"यह पुस्तक एक साधारण विद्यार्थी और मर्मज्ञ अध्येता दोनों के साहित्यिक ज्ञान की पीठिका बन सकती है। "

राजनीतिक इतिहासकार:

सुमन जी एक सच्चे राजनीतिक इतिहासकार थे। इतिहास सम्बन्धी उनकी कृतियाँ इस बात का ज्वलन्त प्रमाण हैं। उनके द्वारा प्रणीत 'हमारा संघर्ष' में सन् 1942 के आंदोलन का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। 'कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास' में कांग्रेस का जन्म, विकास, संघर्ष, अगस्त आन्दोलन और खून की होली आदि का यथार्थ चित्रण किया गया है। 'आजादी की कहानी' में सन् 1857 से लेकर 1947 ई. तक की क्रान्तिकारी लड़ाई का इतिहास प्रस्तुत किया गया है।

जीवनी साहित्य के अग्रणी लेखक:

आचार्य सुमन जीवनी-लेखक के रूप में हिन्दी के सर्वाग्रणी साहित्यकार थे, जिन्होंने 'नेताजी सुभाषचन्द्र बोस' नामक जीवनी की प्रथम पुस्तक लिखकर हिन्दी साहित्य को नई दिशा दी। 240 पृष्ठों में प्रकाशित यह कृति उत्कृष्ट शैली में लिखी गई है। इसके साथ ही 32 स्वतन्त्रता सेनानियों की जीवनियों का एक संकलन 'नये भारत के निर्माता' नाम से तैयार करके सुमन जी ने पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, महात्मा गांधी, जयप्रकाश नारायण और सरदार भगतसिंह जैसे राष्ट्रनिर्माताओं की जीवन-गाथा का यथार्थ चित्रण किया है।

मधुर संस्मरण लेखक :

'रेखाएँ और संस्मरण' का पारायण करने से ज्ञात होता है कि सुमन जी को अनेक साहित्यकारों, मनीषियों और विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त हुआ था, जिनसे सुमन जी ने अपने जीवन में प्रचुर प्रेरणा और प्रभाव ग्रहण किया। इतना ही नहीं, सुमन जी ने इस प्रेरणा और प्रभाव को इतनी तन्निष्ठता से आत्मसात किया कि वे स्वयं अपने प्रिय और आराध्यों की श्रेणी में प्रतिष्ठापित हो गये तथा स्वयं भी एक ज्योतिपुरुष बन गए। इस कृति पर प्रकाश डालते हुए इन्दौर से प्रकाशित 'नई दुनियाँ' (10 अक्तूबर, 1976) ने लिखा था-"सुमन जी ने इस पुस्तक में लगभग 30 साहित्यकारों के संस्मरण दिए हैं। रोचक होने के साथ-साथ यह पुस्तक हिन्दी के शीर्षस्थ साहित्यकारों के विषय में सामयिक जानकारियाँ भी प्रदान करती है, जो कि हिन्दी साहित्य के गम्भीर पाठकों और सामान्य विद्यार्थियों दोनों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। सुमन जी स्वयं साहित्यसृष्टा और साहित्य-यात्रा के जागरूक परिदृष्टा रहे हैं। वे जानकारियों के जीतेजागते भण्डार हैं। यह तथ्य उनकी इस पुस्तक से और उसमें प्रकाशित अनेक महत्त्वपूर्ण पत्रों, दस्तावेजों और तथ्यों से प्रकट होता है।"

जागरूक निबन्धकार :

निबन्ध के क्षेत्र में सुमन जी का निबन्धकार एक विशेषज्ञ का जामा पहनकर अपने इर्द-गिर्द सीमाओं का निर्माण नहीं करता, बल्कि मुक्त पक्षी की भाँति उड़ता हुआ कभी इस वृक्ष पर तो कभी उस वृक्ष पर बैठता है और उसका पत्ता-पत्ता छान मारता है। सब तरफ का चक्कर लगाकर वह जहाज के पक्षी की भाँति बार-बार अपने मूल विषय, भाषा और संस्कृति तथा साहित्य पर आ जाता है। जोखिम उठाने

से वह कभी भयभीत नहीं होता। यथानुभव लेखन उसका धर्म है। भय और प्रलोभन उसकी तूलिका का स्पर्श तक नहीं कर पाते, अपितु कठिन, दुस्साध्य और असम्भव कार्यों में हाथ डालना उसकी आदत है। यही बात उनकी भाषण शैली में दिखाई पड़ती थी। वे एक कुशल वक्ता थे। श्रोता उनके भाषण बड़े मनोयोग से सुनते थे।

सम्पादन-कला के महारथी एवं पारखी :

सुमन जी सम्पादन-कला के महारथी थे। वे इस कला में पूर्ण निष्ठावान थे। वे सम्पादन के साथ-साथ कभी-कभी ऐसा चमत्कार भी उपस्थित कर दिया करते थे, जिससे उनकी शैलीगत प्रखरता का उत्कर्ष आभासित होता था। सुमन जी द्वारा सम्पादित 'नारी तेरे रूप अनेक' नामक महत्त्वपूर्ण काव्य संकलन के लिए उनके अनुरोध पर प्रख्यात मनीषी और विचारक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपने 22-10 -1963 के पत्र में स्पष्ट रूप से यह लिखते हुए-"भेज तो रहा हूँ, परन्तु उत्साह नहीं है। बहुत अच्छी तरह देख लीजिए। काम लायक जँचे, तभी छापिये। लिख तो बहुत दिनों से रखा था, पर भेजने में हिचक हो रही थी। अब आपके पत्रों की मार से घबरा गया हूँ। देर के लिए क्षमा करें। यह मन्दः कवियशः प्रार्थी का अच्छा नमूना है", जब 'बोलो काव्य के मर्मज्ञ' शीर्षक अपनी लम्बी चमत्कारिक गद्य-भूमिका भेजी तो सुमन जी ने मात्र विराम, पूर्ण-विराम-यति-गति के अनुसार कविता का रूप देकर अनुमोदन के लिए आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी को भेजा और उनसे अनुरोध किया कि यदि भूमिका इस रूप में छपे तो पाठकों को आपकी काव्य-चातुरी का आस्वाद लेकर प्रसन्नता होगी। इस पर आचार्य द्विवेदी जी ने "आपने उसे कविता बना दिया अच्छा किया" लिखकर अपनी सहमति प्रकट की थी। यह उदाहरण सुमन जी की सम्पादन-कला का अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

हिन्दी साहित्य के क्रान्तिकारी इतिहासकार :

सुमन जी द्वारा लिखी जानेवाली 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' ग्रन्थमाला ने सुमन जी को हिन्दी-साहित्य के यशस्वी इतिहासकारों की परम्परा में जोड़ दिया है। इस ग्रन्थ के कारण ही सुमन जी का स्थान विशिष्ट रूप से एक क्रान्तिकारी इतिहासकार के रूप में स्थापित हुआ। ध्यातव्य है कि इस ग्रंथ के लिए पूर्णतः प्रामाणिक एवं उपादेय सामग्री जुटाने के लिए उन्होंने सारे देश की कई बार 70-75 हजार कि.मी. की यात्राएँ की थीं। हिन्दी साहित्येतिहास-लेखन की परम्परा जो क्रमशः गार्सा द तासी से लेकर श्री शिवसिंह सेंगर, डॉ. ग्रियर्सन, मिश्रबन्धु, श्री रामनरेश त्रिपाठी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तक आकर रुक गई थी और हिन्दी-जगत् में सर्वत्र आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास का ही पिष्टपेषण हो रहा था। 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' ग्रन्थमाला से हिन्दी-साहित्य के इतिहास को नयी दिशा मिली है। हिन्दी साहित्य का इतिहास अब करवट बदलने लगा है। स्वनामधन्य इतिहासकार जो लकीर के फकीर बनकर हिन्दी-मन्दिर में मठाधीश बने बैठे थे, आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन ने अपने उक्त ग्रन्थ में अनेक नूतन मान्यताओं को उद्घाटित करके उनकी आँखें खोल दीं। आश्चर्य की बात तो यह है कि वर्तमान स्वनामधन्य इतिहासकारों ने उनकी शोधपरक नूतन मान्यताओं का उतने उन्मुक्त हृदय से स्वागत नहीं किया, जितने साहस के साथ उन्हें स्वागत करना चाहिए था। कारण स्पष्ट है कि उन्हें अपने पैरों के नीचे की नकली जमीन ही असली जमीन दिखाई दे रही थी। तथापि हिन्दी-जगत् में इस ग्रन्थ का अप्रत्याशित आदर हुआ। श्री वियोगी हरि 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' के प्रथम खण्ड की भूमिका में लिखते हैं-'जिस कार्य को शिवसिंह सेंगर, मिश्रबन्धु, रामचन्द्र शुक्ल तथा रामनरेश त्रिपाठी आदि साहित्यकारों ने हाथ में लिया था, वह बीच में कुछ शिथिल-सा हो गया। उस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए देखकर स्वभावतः बड़ा सन्तोष और आनन्द होता है। हिन्दी-जगत् के जाने-माने सुलेखक श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' ने जब दिवंगत हिन्दी-सेवियों के कीर्ति-गान का संकल्प किया, तो हम सबके मन प्रफुल्लित हो गए। संकल्प यह महान् ज्ञान यज्ञ का है। विशुद्धभावना, ऊँचा साहस और अथक परिश्रम इस यज्ञ की पुनीत सामग्री है। अकेले ही सुमन जी ने इस सामग्री को जुटाया। दिवंगत हिन्दी-सेवियों का स्मृति-श्राद्ध करते हुए पुण्य सलिला गंगा में मानो वे अवगाहन कर रहे हों और दूसरों को भी इस पावन पर्व पर पुण्य लूटने का आमंत्रण दे रहे हैं।"

इस सन्दर्भग्रन्थ के प्रकाशन की महत्ता और सुमन जी के अथाह ज्ञान पर प्रकाश डालते हुए डॉ. महावीर अधिकारी ने अपने विचार इस प्रकार प्रस्तुत किए हैं-"श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' साहित्य के एक जीवन्त सन्दर्भग्रन्थ हैं। ऐसे हजारों हिन्दी सेवी हैं, थे और होंगे, जिनके बारे में वे इतना जानते हैं, जितना कि देश के सभी विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक कुल मिलाकर जानते होंगे, लेकिन उनका नाम 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लेखन के समय किसी को याद नहीं आता। बेहतर हो कि शिक्षा-संस्थानों से जुड़े इतिहासकारों के घृणित नामों का, हम स्मरण न करें।"

इस अनूठे कार्य की प्रशंसा करते हुए आलोचक श्री राजनाथ शर्मा लिखते हैं-"जो कार्य काशी नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति जैसी प्रसिद्ध संस्थाएँ करने का साहस न जुटा सकीं, उसे सुमन जी ने अकेले केवल अपने बलबूते पर करके दिखा दिया है।" श्री सर्वेश्वर दयाल सक्सेना लिखते हैं-"श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' ने इस पुस्तक में इतिहास के अज्ञात अंधेरों में गायब हो गए हिन्दी के असंख्य रचनाकारों को फिर से जीवित कर दिया है और उनका नाम ऐसे शिला-लेख के रूप में उकेर दिया है जो लम्बे समय तक अमिट रहेगा। " दिवंगत हिन्दी-सेवी के द्वितीय खण्ड का लोकार्पण करते समय 22 जून, सन् 1983 को तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह ने इस ग्रन्थ की महानता एवं उपादेयता इस

प्रकार व्यक्त की थी-"मैं समझता हूँ कि सुमन जी ऐसे महापुरुष हैं जिन्होंने वह काम किया है जो हमारे देश के शिक्षा मंत्रालय को, हमारे देश की यूनिवर्सिटियों को आज से 25 वर्ष पहले शुरू कर देना चाहिए था।" 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' में उद्घाटित नूतन तथ्यों के सामने पिष्टपेषित हिन्दी-साहित्य के इतिहास की अनेक मान्यताएँ दम तोड़ती नजर आती हैं। 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' के आधार पर कतिपय तथ्यों के प्रमाण प्रस्तुत हैं-

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र को खड़ी बोली का प्रथम कवि, गद्य-लेखक और नाटककार लिखा है। परवर्ती साहित्यकार इसी मान्यता का अनुसरण करते रहे। उन्होंने इससे आगे कुछ भी सोचने का कष्ट ही नहीं किया। वास्तविकता यह है कि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का खड़ी बोली से दूर का भी रिश्ता नहीं था। भला वे इस आन्दोलन के सूत्रधार कैसे बन सकते थे। परवर्ती साहित्यिक इतिहासकारों ने भी खड़ी बोली के क्षेत्र की काव्य-कृतियों का अन्वेषण करने का कष्ट गवारा नहीं किया और शुक्ल जी की इसी मान्यता को नींव का पत्थर बना दिया। जबकि वास्तविकता यह है कि भारतेन्दु से पूर्व भी सन्त कवि घीसादास (1803-1868) और सन्त कवि गंगादास (1822 -1913) ने खड़ी बोली में सशक्त रचनाएँ प्रस्तुत की थीं। गद्य के क्षेत्र में पं. गौरीदत्त (1836-1906) भी अपनी प्रतिभा का प्रभूत परिचय दे चुके थे। लेखक ने अपनी शोध-यात्रा में भारतेन्दु-पूर्व खड़ी बोली के सात कवियों का काव्य उपलब्ध किया है। उससे स्पष्ट जाहिर होता है कि खड़ी बोली कविता का विकास खड़ी बोली क्षेत्र की ही देन है।

2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने श्रद्धाराम फिल्लोरी द्वारा 'भाग्यवती'(1877) उपन्यास को खड़ी बोली का प्रथम उपन्यास स्वीकार किया है। सुमन जी के शोध के अनुसार पं. गौरीदत्त द्वारा लिखित 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) हिन्दी का पहला उपन्यास ठहरता है।

3. रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर के हिन्दी पाठ्यक्रम में निर्धारित हिन्दी साहित्य का इतिहास (डॉ. रामरतन भटनागर) में छायावाद के प्रवर्त्तक कवि मुकुटधर पाण्डेय को सन् 1918 में दिवंगत दिखाया गया, तो किसी भी लेखक ने उसका प्रतिकार नहीं किया। यहाँ तक कि उनके ही शहर में वे जीवित रहते हुए भी मृत पढ़ाए जाते रहे, जबकि उनका निधन 1989 ई. में हुआ।

4. मिश्रबन्धु भी इस प्रकार की भूलें करने में पीछे नहीं रहे हैं। उन्होंने 'मिश्रबन्धु विनोद' के चतुर्थ खण्ड में पृष्ठ 555 पर बिहार के कवि रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द' का निधन-काल स्पष्टतः संवत् 1986 दिया है, जबकि उनका निधन सन् 1991 ई. में हुआ था।

5. ऐसा ही अद्‌भुत चमत्कार रामनरेश त्रिपाठी की 'कविता कौमुदी' नामक पुस्तक के द्वितीय भाग के पृष्ठ 357 पर देखने को मिलता है। इसमें त्रिपाठी जी ने आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की कविताओं के साथ 'अछूत की आह' शीर्षक, जो रचना प्रकाशित की है, वह आचार्य शुक्ल की न होकर, किसी दूसरे रामचन्द्र शुक्ल की है।

6. 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' लेखन के लिए की गई यात्रा के फलस्वरूप सुमन जी को 24 ऐसे साहित्यकारों की जानकारी मिली, जो उस समय जीवित थे, परन्तु हिन्दी साहित्य में उन्हें दिवंगत दिखाया जा रहा था। किंबहुना, अब तक लिखे गए 'हिन्दी-साहित्य के इतिहास' अपने उदर में ऐसी ही असंख्य भ्रामक भूलों को पचाए हुए हैं। आचार्य सुमन जी द्वारा लिखित 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' आकर ग्रन्थ के प्रणयन से सुधी पाठकों का ध्यान इन भूलों की ओर निश्चय ही केन्द्रित होता है। इन सभी उद्घाटित नूतन मान्यताओं से प्रमाणित होता है कि सुमन जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में जिस क्रान्तिकारी व्यक्तित्व का परिचय दिया था, उसी क्रान्तिकारी व्यक्तित्व ने हिन्दी-जगत् में व्याप्त ऐतिहासिक-अराजकता को समाप्त करने के लिए हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की एक नई क्रान्ति का प्रारंभ किया था।

इस क्षेत्र में सुमन जी एक चलते फिरते विश्वकोश थे। कोई भी जिज्ञासु उन्हें फोन करके किसी भी साहित्यिक शंका का समाधान कर सकता था।

सुमन जी की अन्यतम साहित्यिक सेवाओं को दृष्टि में रखकर ही सन् 1966 ई. में राजधानी ही नहीं प्रत्युत समस्त हिन्दी-जगत् में फैले हुए उनके अनेक शुभैषियों और मित्रों ने मिलकर उनके 50वें जन्मदिवस पर उनका जो भाव-भीना अभिनन्दन किया था, वह जितना नयनाभिराम था, उतना ही अभूतपूर्व भी। उस अवसर पर आपको तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन के कर-कमलों द्वारा 'एक व्यक्ति: एक संस्था' नामक जो विशद अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया था, उससे आपके बहुमुखी व्यक्तित्व का परिचय मिलता है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में की गई आपकी उल्लेखनीय सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए आपको जहाँ 'पश्चिम बंगनागरी प्रचारिणी सभा' ने सन् 1976 में 'पत्रकार शिरोमणि' की उपाधि प्रदान की थी, वहाँ 13 अप्रैल, 1985 को 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' ने भी गाजियाबाद में सम्पन्न अपने 32वें अधिवेशन के अवसर पर आपको सर्वोच्च मानद उपाधि 'साहित्य वाचस्पति' प्रदान करके आपकी साहित्यिक सेवाओं का सम्मान किया था। सन् 1984 के गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने आपको 'पद्मश्री' की सम्मानोपाधि से अलंकृत किया था। इसी वर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर ने भी आपको 'विद्या वाचस्पति' (डी.लिट्.) की उपाधि प्रदान कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस किया था। मानव संसाधन मंत्रालय ने आपको 2000 रुपये मासिक की 'अमरेटस फैलोशिप' प्रदान करके आपकी साहित्यिक यात्रा को गति देने का प्रयास किया था।

इसके अतिरिक्त अनेक साहित्यिक संस्थाओं ने आपको अनेक मानद उपाधियों से विभूषित किया था। हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने आपको 'विशिष्ट साहित्यकार पुरस्कार' से, भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने 20

अप्रैल, 1987 को 'भारतेन्दु पुरस्कार' से और उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की ओर से दीर्घकालीन सेवाओं के लिए हिन्दी-दिवस, 1990 के अवसर पर इक्कीस हजार रुपये के 'संस्थान सम्मान' से पुरस्कृत एवं अभिनन्दित किया था।

सुमन जी के निधन के उपरांत 26 जुलाई 2016 को दिल्ली सरकार द्वारा पुरानी सीमापुरी, दिल्ली के गोलचक्कर से सुंदर नगरी तक जाने वाले मार्ग का नामकरण पद्म श्री आचार्य क्षेमचंद्र 'सुमन' मार्ग के रूप में किया गया। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के अभिलेखागार विभाग द्वारा सन् 2022 में सुमनजी के जीवन से सम्बंधित सभी दस्तावेज और पुस्तकें ग्रहण कर लिए गए है। डाक विभाग द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान स्वतंत्रता संग्राम के विस्मृत नायक के रूप में केंद्रीय संचार राज्य मंत्री श्री देवु सिंह चौहान द्वारा 14 अक्तूबर, 2022 को विशेष आवरण और डाक टिकट जारी किया गया।

सुमन जी दिल्ली परिवहन निगम, नागर विमानन सेवा और जल-भूतल परिवहन मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समितियों के भी सदस्य मनोनीत किए गए थे। आपके साहित्यिक अवदान का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि आपसे सम्बन्धित अब तक क्रमशः 'श्री क्षेमचन्द्र सुमन: व्यक्तित्व और साहित्यकार', 'आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन: व्यक्तित्व और कृतित्व', 'आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन का सम्पादकीय वैशिष्ट्य' एवं 'आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन के साहित्य का समीक्षात्मक अनुशीलन' नामक चार शोध प्रबन्धों पर विविध विश्व विद्यालयों के शोधार्थियों ने पी-एच.डी. की उपाधियां प्राप्त की हैं। हिन्दी साहित्य के लिए की गई आपकी सच्ची तपःनिष्ठा हिन्दी साहित्य के इतिहास में सदा-सर्वदा के लिए अमर एवं स्मरणीय रहेगी। आप सच्चे अर्थों में हिन्दी के एक ऐसे मनीषी थे, जो दिवंगत साहित्यकारों का पुण्य श्राद्ध कर उनकी तपःगाथा को अपने 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' ग्रंथ में सदा-सर्वदा के लिए अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए कृत-संकल्प थे।

लेखक परिचय :

सम्प्रति :हिन्दी-जगत् की स्वनामधन्य संस्था अखिल भारतीय कवि सभा के अध्यक्ष के रूप में हिन्दी की सेवा में संलग्न।

सम्मान:नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा (गृह मंत्रालय) द्वारा वर्ष 2011 में 'विशिष्ट राजभाषा सम्मान – 2011' और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा दिनांक 14 सितम्बर 2016 को आपकी कृति 'माटी मेरे देश की' (ब्रजभाषा काव्य-संकलन) पर वर्ष 2015 के 'श्रीधर पाठक नामित पुरस्कार' से भी सम्मानित।

सम्पादन:'कबीर पथ' मासिक पत्रिका, 'गीतकार' मासिक पत्रिका के नगर सम्पादक 'कवि सभा दर्पण' के सम्पादक ,वर्तमान में आप विगत बीस वर्षों से स्टेशनरी ट्रेड की प्रमुख त्रैमासिक पत्रिका 'स्टेशनरी टाइम्स' के साहित्य सम्पादक है।

विनोद दूबे

भदोही (उ. प्र.)

निर्णय

जब विकल्प नहीं हो जीवन में,
अंतर्द्वंद चल रहा हो मन में,
जब राह न कोई सूझ रही,
इस कदर अँधेरा हो वन में,

जब लगे कि दोनों जाया है,
दोनों में कुछ खोया पाया है,
सही-गलत की उहापोह में,
नाहक ही वक्त गवांया है,

हर बात में कोई अर्थ लगे,
सारी तरकीबें व्यर्थ लगें,
निर्णय बड़ा ज़रूरी हो पर,
खुद में न इतनी सामर्थ्य लगे,

आँखें मूँद उसे तुम याद करो,
तुम ! इश्वर से संवाद करो,
थोड़ी देर ठहर कर सोचो,
अपनी ऊर्जा न यूँ बर्बाद करो,

औरों की चिंता छोड़ वहीँ,
निर्णय होगा भीतर ही कहीं,
फिर बढ़ जाना उस पथ पर,
जो तुम्हारे दिल को लगे सही,

छूटे पर मत पछताना तुम,
निर्णय लेकर मत रोना तुम,
इश्वर के नाम समर्पित कर,
बस चैन की नींद सोना तुम,

कैसे भी निर्णय लोगे तुम,
चुनने में मुश्किल होगी,
पर मन का निर्णय लोगे तो,
आगे की यात्रा ज़रा सरल होगी,

नियति के आगे जीवन में ,
तुम्हारा चयन खड़ा नहीं होता,
कोई भी कैसा भी निर्णय ,
जीवन से बड़ा नहीं होता,

शिव कुमार गौतम
गुरुग्राम
shastri.skgautam@gmail.Com

भारतीय संस्कृति के काव्य प्रणेता: कविवर शङ्कर द्विवेदी

भारतवर्ष के लिए सन् 1960 से लेकर 1980 तक का समय राजनीतिक और राष्ट्रीयता एवं संस्कृति के लिए उथल -पुथल का समय रहा है। भारत में दो बार पाकिस्तान के साथ महासमर का सामना किया और विजयश्री प्राप्त की। इतना ही नहीं तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी ने पूर्वी पाकिस्तान को समाप्त करके बांगलादेश की स्थापना की। ऐसे ओजपूर्ण वातावरण में कविवर शङ्कर द्विवेदी अपनी ओजस्वी कविताओं के द्वारा भारत के जन-मानस में वीर रस का संचार कर रहे थे। उल्लेखनीय है तत्कालीन राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी ने उन्हें 'आधुनिक दिनकर' कहकर सम्मानित किया था।

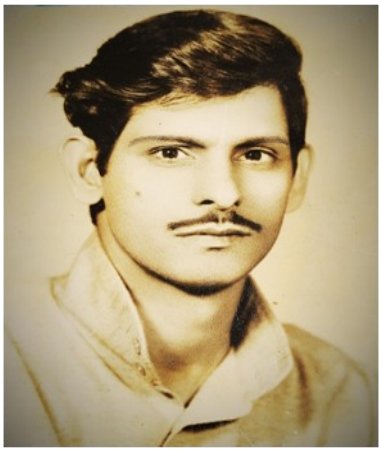

श्री शङ्कर द्विवेदी का जन्म उनकी ननिहाल गाँव बारोली जनपद अलीगढ़ में 21 जुलाई 1941 को हुआ था। आपका पूरा नाम श्री शङ्कर लाल द्विवेदी था, किन्तु साहित्य सृजन के क्षेत्र में आप 'शङ्कर द्विवेदी'नाम से ही विख्यात हुए। आपके पिता का नाम श्री चम्पा राम सारस्वत व माता का नाम श्रीमती भौती देवी था। आपके नाना का नाम पंडित हीरा लाल व नानी का नाम श्रीमती गरबो देवी था। आप सभी कुल मिलाकर आठ भाई थे जिनमें श्री शङ्कर द्विवेदी दूसरे नंबर पर थे। सभी के नाम इस प्रकार हैं: 1. स्व. कमला प्रसाद द्विवेदी, 2. स्व. श्री शङ्करलाल द्विवेदी, 3. स्व. डॉ. महावीर प्रसाद द्विवेदी, 4. स्व. नरेंद्र कुमार द्विवेदी जो 25-26 वर्ष की युवावस्था में ही चल बसे थे, 5. श्री बृज मोहन द्विवेदी, 6. स्व. लक्ष्मण प्रसाद, 7. श्री शिव नारायण सारस्वत और 8. श्री राम जो 5-6 वर्ष की बाल्यावस्था में ही शांत हो गए थे। आपकी दो बहनें भी हैं: श्रीमती गायत्री देवी एवं श्रीमती कृष्णा देवी। आपका मूल पैतृक गाँव जान्हेरा है जो कि अलीगढ़-खैर रोड पर अण्डला के उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित है। आपकी पत्नीका नाम स्व. श्रीमतीकृष्णा द्विवेदीथा,जो कि एक विदुषी महिला व कन्या इन्टर कॉलेज सासनी की प्राचार्या रहीं। वे अपने कॉलेज में श्री शङ्कर द्विवेदी जी के सहयोग से कवि सम्मेलन एवं अन्य साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित करती रहती थीं। आपकी संतानों में दो सुयोग्य-सुशील पुत्र हैं और दोनों ही अध्यापन के क्षेत्र में हैं। ज्येष्ठ आत्मज श्री आशीष द्विवेदी गत 24 वर्षों से हाथरस के प्रतिष्ठित पी.बी.ए.एस. इन्टर कॉलेज में गणित के अध्यापक हैं। कनिष्ठ आत्मज सुकवि राहुल द्विवेदी दिल्ली पब्लिक स्कूल, विंध्यनगर, सिंगरौली (म.प्र.) में हिन्दी प्रवक्ता एवं विभागाध्यक्ष के पद पर आसीन हैं जो अपने पिताश्री के सम्पूर्ण साहित्य के प्रकाशन के दायित्व का पूर्ण सामर्थ्य से निर्वहन कर रहे हैं।

कविश्रेष्ठ द्विवेदी जी की कक्षा 1 से 5 तक की प्रारम्भिक शिक्षा उनके पैतृक गाँव के पास गोंदोली गाँव में हुई। तत्पश्चात कक्षा 6 से 12 तक की माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक शिक्षा उन्होंने मदनमोहन मालवीय इन्टर कॉलेज, अण्डला से ग्रहण की। एक तो पिता की आर्थिक स्थिति पहले से ही दुर्बल और जर्जर, उसमें भी लंबा चौड़ा परिवार। इन सब के मध्य भी श्री शङ्कर द्विवेदी स्वयं के अथक परिश्रम और शिक्षा के प्रति अपनी सुरुचिपूर्ण लगन के बलबूते पैतृक गाँव जान्हेरा से अण्डला तक प्रतिदिन पैदल यात्रा कर 1958 में इन्टरमीडिएट की शिक्षा पूर्ण की। उसी वर्ष आपने श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़ में कला-स्नातक में प्रवेश लिया। श्री शङ्कर द्विवेदी का कद मझोला, देहयष्टि सुडौल और कसी हुई, व्यक्तित्व आकर्षक, सौम्य एवं फुर्तीला था। कबड्डी एवं वॉलीबॉल उनके प्रिय खेल थे, जो अंत तक बने रहे। किशोरावस्था में वे ऊँची कूद जैसे खेलों मे रुचि रखते थे। उसी समय की एक घटना है कि गाँव में एक मेंड़ा (मेल भेड़) बहुत मरखना था, हर कोई उस से डरता था। उसमेंड़े को उन्होंने अपने साहस के बल पर उसके सींगों को अपने घुटनों में दबाकर नियंत्रित कर लिया। जनवरी 1961 में जब वे एम.ए. प्रथम वर्ष में थे तब वहाँ प्रो. कुन्दन लाल उप्रेती हिन्दी प्रवक्ताके रूप में वार्ष्णेय कॉलेज में आए। श्री द्विवेदी जी ने स्नातकोत्तर (प्रथम वर्ष) की कक्षा को प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया तो प्रो. उप्रेती उनसे बहुत प्रभावित हुए क्यों कि उनकी उत्तर पुस्तिका के परीक्षक उप्रेती जी ही थे। तब तक द्विवेदी जी प्रो. उप्रेती के प्रिय शिष्य हो चुके थे तथा उन्ही के साथ

रहते थे। एम.ए.फाइनल के वर्ष के मध्य में ही संभवतया अक्टूबर/नवम्बर में एक ऐसी घटना घटी जिसका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है। श्री शङ्कर द्विवेदी जी का कुछ गुंडे विद्यार्थियों से झगड़ा हो गया, आप साहसी और जुझारू तो थे ही, आपने गुंडों में से एक को बुरी तरह चोटिल कर दिया। झगड़ा बढ़ता देख प्रो. कुन्दन लाल उप्रेती आपको आगरा कॉलेज आगरा में ले जाकर अपने विशेष अनुरोध पर पं.जगन्नाथ तिवारी, जो कि वहाँ के हिन्दी विभागाध्यक्ष थे और प्रो. उप्रेती के गुरु भी थे, के अधीन एम.ए. फाइनल में प्रवेश करा आए। अंततोगत्वा श्री शंकर द्विवेदी ने पं. जगन्नाथ तिवारी जी के अधीन 1962 में आगरा कॉलेज आगरा से स्नातकोत्तर (एम.ए. फाइनल) की परीक्षा उत्तीर्ण की। एक तो स्वभाव से स्वयं जुझारू, तिस पर पं. जगन्नाथ तिवारी के प्राप्त गुरुत्व ने सोने में सुहागा का काम किया।

श्री शङ्करद्विवेदी जी अपने अध्ययन काल से ही खड़ी बोली एवं बृज भाषा में छंद रचना करने लगे थे। आगरा का प्रवास उनकी रचनाधर्मिता के लिये एक वरदान सिद्ध हुआ। आगरा प्रारम्भ से ही साहित्यकारों की स्थली रहा है। यहाँ बड़े-बड़े ख्यातिलब्ध दिग्गज साहित्यकार हुए हैं। आगरा की संध्याएँ साहित्यिक संगोष्ठियों के निमित्त अत्यंत अनुकूल थीं और उदीयमान कवियों के लिए तो वे वरदान की गंगोत्री सिद्ध हुईं। अतः श्री द्विवेदी यहाँ अनेक वरिष्ठ व ख्यातिलब्ध कवियों के सम्पर्क में आए तथा ग़ज़ल और गीत की समानिधिकृत प्रतिभा से उनकी साहित्यिक सुरुचि और फलवती होती गई। यहाँ वे कविश्रेष्ठ सोम ठाकुर, चौधरी सुखराम सिंह, डॉ. घनश्याम अस्थाना इत्यादि कवियों के सम्पर्क में रहे। श्री द्विवेदी जी ने अपने अध्यापकीय जीवन का श्रीगणेश आगरा कॉलेज आगरा से किया, जहाँ आप हिन्दी विभाग में एक वर्ष तक सेवारत हुए। कुछ माह राजा बलवंत सिंह महाविद्यालय, आगरा में अस्थायी रूप से अध्यापन कार्य किया। इसी बीच आपका चयन सेंट्रल रिजर्व पुलिस में सब इन्स्पेक्टर के रूप में हो गया लेकिन सेंट्रल रिजर्व पुलिस में सब इन्स्पेक्टर की ट्रैनिंग छोड़कर अध्यापन ही चुना। उन्हें के. एल. जैन इन्टर कॉलेज, सासनी, जिला अलीगढ़ (वर्तमान जिला हाथरस) में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर नियुक्ति प्राप्त हुई और आगरा छोड़कर सासनी चले आए जहाँ सन् 1971 तक कार्य किया। सेवाकाल की व्यस्तताओं के मध्य भी वे देश के सुदूर भागों मेआयोजित कवि-सम्मेलनों में प्रतिभागिता करते रहे। जीविकोपार्जन इसी उठापटक के मध्य 11 दिसम्बर, 1968 को बरेली निवासिनी सुश्री कृष्णा पाण्डेय के साथ वे परिणय-सूत्र में बँध गए। सुश्री कृष्णा जी उस समय एक कन्या-विद्यालय में प्रधानाध्यापिका पद पर सेवारत थीं। कालान्तर में यह कन्या-विद्यालय इन्टर कॉलेज में परिवर्तित हो गया और वे यहाँ की प्राचार्या पद पर प्रतिष्ठित हुईं। विवाहोपरांत उन्हें श्रीमती कृष्णा द्विवेदी नाम से परिचय प्राप्त हुआ और 38 वर्षों तक प्राचार्या के पद पर आसीन रहते हुए शिक्षा-जगत की अतुलनीय सेवा-साधिका के रूप में समर्पित व प्रतिष्ठित रहीं। सन् 1971 में श्री शङ्कर द्विवेदी की नियुक्ति पूर्ववर्ती आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध श्री बृज बिहारी डिग्री कॉलेज, कोसी कलाँ, मथुरा में हो गई। वे सासनी से त्यागपत्र देकर कोसी कलाँ चले आए तथा अपने जीवन के अंतिम समय तक स्थायी रूप से इसी कॉलेज की सेवा से सम्बद्ध रहे। अग्रिम इसी महाविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर आसीन रहे। आपके देहावसान के पश्चात डॉ. लक्ष्मण प्रसाद शर्मा, जो उनके कनिष्ठ थे,महाविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे और अपनी सेवा-निवृत्ति सन् 2011 तक इस पद पर बने रहे। डॉ. तारा शर्मा (जो डॉ. लक्ष्मण प्रसाद की अर्द्धांगिनी हैं, वह वहाँ के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर अपनी सेवा-निवृत्ति सन् 2019 तक बनी रहीं।उल्लेखनीय है कि श्री बृजबिहारी डिग्री कॉलेज कोसी कलाँ के व्यवस्थापक मण्डल सेविवादस्वरूप एक विवाद उपकुलपति आगरा विश्वविद्यालय के अधीन चला। किसी गलत बात को किसी भी कीमत पर स्वीकार न कर पाने की प्रवृत्ति के कारण विवादों से उनका सदैव ही संबंध जुड़ता रहा। उनके 'शङ्कर कंगाल नहीं' नामक इस गीत में यही द्वन्द्व परिलक्षित होता है:

कल सारा जग था सगा, किन्तु अब कोई साथ नहीं।
इसलिए कि मेरे हाथ रहे अब कंचन-थाल नहीं।।
आकर भी द्वार सुदामा अब के होली मिला नहीं।
इसलिए कि कान्हा पर माँटी है, रंग-गुलाल नहीं।।
अब तिष्यरक्षिता खटपाटी पर है, पय पिया नहीं।
इसलिए कि आँखें खोने को तैयार कुणाल नहीं।।
शासन ने मुझको अब तक कोई उत्तर दिया नहीं।
इसलिए कि मैंने पूछे थे कुछ प्रश्न, सवाल नहीं।।
जनताने बुलालिया कवि को, पर कुछ भी सुना नहीं।
इसलिए कि उसने गाएथे कुछगीत,खयाल नहीं।।
माँगो! कोई याचक निराश हो वापस गया नहीं।
इसलिए कि काया भर कृश है, 'शङ्कर' कंगाल नहीं।।

श्री शङ्कर द्विवेदी जी का रहन-सहन बड़ा ही अभिजात्य, शौकीन एवं सदा मित्र-मंडली से आच्छादित रहने वाला था। वे मुक्त हाथ से खर्च करने वाले व्यक्ति थे। आज प्रतीत होता है, चूँकि ईश्वर ने उन्हें अल्पायु प्रदान की थी, शायद इसलिए उनकी प्रकृति में उन्मुक्तता और स्वच्छंदता थी। द्विवेदी जी अपने अध्यापन काल में चाहे इन्टर कॉलेज में रहे हों या डिग्री कॉलेज में, सदैव अपने विद्यार्थियों को साहित्यि रचना करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। इन शिष्यों में कतिपय हिन्दी साहित्य की सेवाओं में अपना उच्च स्थान रखते हैं। यथा, डॉ. इन्द्र सेंगर, डॉ. हरि मोहन, डॉ. नारायण सिंह इत्यादि। सौभाग्यवश मैं भी श्री शंकर द्विवेदी जी का ही शिष्य हूँ। डॉ. इन्द्र सेंगर हिन्दी के सुविख्यात हिन्दी भाषा विशेषज्ञ, लेखक और कवि हैं। डॉ. हरि मोहन हिन्दी की बहुआयामी विधाओं के लेखक हैं और हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे हैं। सेवा निवृत्ति के पश्चात आप जे. एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद) में

कुलपति के पद पर आसीन रहे। डॉ. नारायण सिंह श्री राधाकृष्ण इन्टर कॉलेज, उस्फार, मथुरा के भू. पू. प्रधानाचार्य हैं। कतिपय शिष्य न्यायालय से सम्बद्ध रहे यथा डॉ. डी. एन. शर्मा, बरेली और श्री शिशु पाल शर्मा, गाज़ियाबाद। कतिपय अध्यापन में रहे- यथा, श्री सत्यभान शर्मा, श्री लक्ष्मी नारायण एवं श्री पद्म सिंह।

कविश्रेष्ठ शङ्कर द्विवेदी जी के कृतित्व में जीवन का स्पंदन तथा द्वन्द्व सम-भाव से उपस्थित है। यह अक्षर-सम्पदा सचमुच अमूल्य सम्पदा है। उनमें गहन-सौन्दर्य-बोध विद्यमान था, यह उनके कृतित्व में भी परिलक्षित होता है। नारी-सौन्दर्य के प्रति उनके चिन्तन में दिव्य-चेतना दिखाई देती है। वे अनुरागी हैं, तो वैरागी भी हैं। उनके काव्य में ग्रामीण परिवेश की मानसिक संरचना बिल्कुल संतों की वाणी के समान सुनाई पड़ती है। राजनैतिक मतवादों के प्रति बंधन-मुक्त रहते हुए भी वे सामयिक राजनीति के प्रति काव्यात्मक स्तर पर संवेदनशील जान पड़ते हैं। किन्तु उनकी यह लोकचिन्तन-काव्य धारा, उनका समूचा कृतित्व विगत-वर्ष पूर्व तक केवल पांडुलिपियों के पन्नों में ही कैद रहा है। देहावसान के उपरान्त प्रकाशित उनकी प्रथम कृति '**अन्ततः**'का प्रकाशन1985 में आगरा के सुप्रसिद्ध व्यंग्य कवि श्री हरेश चतुर्वेदी द्वारा किया गया था जिसका विमोचन पद्मभूषण मूर्धन्य कवि श्री गोपालदास 'नीरज' के कर-कमलों से हुआ था। किन्तु समुचित प्रचार-प्रसार के अभाव में यह केवल पन्नों पर छप कर घर की दीवारों तक ही सिमट कर रह गयी। यह स्थिति अत्यंत दुखद व कष्टप्रद लगती है। वर्तमान में उनके '**तिरंगे को कभी झुकने न दोगे**' (देश भक्ति के पावन गीत) नामक राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना युक्त काव्य का प्रकाशन देश के प्रतिष्ठित प्रकाशन नमस्कार बुक्स, नई दिल्ली द्वारा गत वर्ष 2023 में किया गया है, जो साहित्य प्रेमियों व शोधकर्ताओं के पठन हेतु उपलब्ध है। इस पुस्तक के संकलनकर्ता व सम्पादक कविश्रेष्ठ के पुत्र श्री राहुल द्विवेदी एवं श्री आशीष द्विवेदी हैं। प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन-परामर्श में मेरा भीसामर्थ्यपूर्ण सहयोग रहा है। गुरुदेव श्री शंकर द्विवेदी जी के समग्र साहित्यके प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. इन्द्र सेंगर एवं मुझ जैसे शिष्य पूर्ण कटिबद्धता के साथ प्रयासरत है। हमारा मत है कि आपके साहित्य पर शोध होने की अपार संभावनाएं हैं। उनकी अप्रकाशित कृतियाँ है:- **1. हम-तुम एक डाल के पंछी (गीत-संग्रह), 2. प्यार पनघटों को दे दूंगा (सामाजिक व राजनैतिक विप्लव के स्वर), 3. बरसि पिया के देस (बृज-भाषा काव्य-संग्रह), 4. शङ्कर कंगाल नहीं (स्फुट-काव्य व ग़ज़ल-संग्रह) तथा 5. 'तितली'- एक आलोचनात्मक अध्ययन (समालोचना)।**

श्री द्विवेदी जी की सृजनात्मक पृष्ठभूमि के देश के जाने-माने कवि तथा साहित्यकारों के सानिध्य से उनका कवित्व निरन्तर ऊर्ध्वगामी होता हुआ साहित्य के उच्चतम शिखर पर विराजमान हो गया।जिनमें प्रमुख हैं:- राष्ट्रकवि सोहन लाल द्विवेदी, पं. राम अवतार त्यागी, वीरेंद्र मिश्र, उदय प्रताप सिंह, पद्मभूषण गोपालदास 'नीरज', सोम ठाकुर, प्रो. (डॉ.) कुंदन लाल उप्रेती, कैलाश बाजपेयी, मुकुट बिहारी 'सरोज' शिशुपाल सिंह 'निर्धन', बलवीर सिंह 'रंग', पद्मश्री बेकल उत्साही, देवी प्रसाद 'राही', पद्मश्री काका हाथरसी, चौ. सुखराम सिंह, आत्मप्रकाश शुक्ल, पं. सत्यदेव शास्त्री 'भोंपू', निर्भय हाथरसी, भारत भूषण, ओमपाल सिंह 'निडर', पं. रमानाथ अवस्थी, डॉ. बृजेन्द्र अवस्थी, शिव ओम 'अम्बर', डॉ. कुँवर बेचैन, किशन सरोज, राधेश्याम 'प्रगल्भ', गोपाल चतुर्वेदी, ओमप्रकाश 'आदित्य', माणिक वर्मा, बालकवि बैरागी, शैल चतुर्वेदी, प्रदीप चौबे, पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा, अल्हड़ बीकानेरी, निखिल 'सन्यासी', जैमिनी हरियाणवी, हुल्लड़ मुरादाबादी, डॉ. अशोक शर्मा, राधा गोविंद पाठक, प्रो. (डॉ.) शशि तिवारी, डॉ. महावीर द्विवेदी (शङ्कर द्विवेदी जी के अनुज), डॉ. उर्मिलेश शंखधर, पद्मश्री मोहन स्वरूप भाटिया, डॉ. श्रीकृष्ण 'शरद', प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी इत्यादि। राष्ट्रकवि सोहन लाल द्विवेदी ने तो उनकी काव्य-प्रतिभा व ओजस्वी वाणी पर मुग्ध होकर उन्हे हिन्दी काव्य-जगत का 'आधुनिक दिनकर' कहकर संबोधित किया था। पद्मश्री आचार्य क्षेमचंद्र 'सुमन' ने अपने वृहत शोध-ग्रंथ 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' के तृतीय खण्ड में उनके परिचय को संकलित करने हेतु अपेक्षित सामग्री एकत्रित की थी, किन्तु आचार्य-वर की लम्बी अस्वस्थता व सन् 1993 में निधन के साथ ही तृतीय खण्ड के इस प्रकाशन पर विराम लग गया था। अब पुनः डॉ. इन्द्र सेंगर व उनके अन्य साथियों के सदप्रयासों से तृतीय खण्ड का प्रकाशन अस्तित्व में है। शीघ्र ही वे इस महान ग्रंथ में हिन्दी-सेवियों की श्रंखला के अवयव होंगे। रचना पब्लिकेशन्स दिल्ली द्वारा डॉ. शालिनी का एक शोध ग्रंथ- 'हाथरस जनपद की साहित्यिक चेतना' हाल ही में प्रकाशित हुआ है। इस शोध ग्रंथ के पृष्ठ 45-46 पर कविवर शङ्कर द्विवेदी की साहित्यिक मनीषा का चिरंजीवी परिचय लेखिका द्वारा प्रकाशित किया गया है। विशेष उल्लेखनीय है कि गत फाल्गुन कृष्णपक्ष की सप्तमी-अष्टमी तदनुसार 3-4 मार्च, 2024 को साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) द्वारा आयोजित 'पाटोत्सव बृजभाषा समारोह' में हिन्दी साहित्य के अनुपम योगदानस्वरूप श्रद्धेय गुरुदेव शङ्कर द्विवेदी को 'हिन्दी काव्य शिरोमणि' की मानद उपाधि के साथ 2100 रुपए की राशि तथा एक प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। इस सम्मान को प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे मिला जिसके लिए मैं अपने आप को गौरान्वित अनुभव करता हूँ। इस समारोह का विस्तृत समाचार मेरे लेखन के माध्यम से हिन्दी साहित्य की प्रमुख त्रैमासिक पत्रिका 'नव-किरण' (जनवरी-मार्च 2024) में पृष्ठ संख्या 107 पर उपलब्ध है।

बृजभाषा पर श्रद्धेय शङ्कर द्विवेदी जी का विशेषाधिकार था, बृजभाषा में भी बड़े अधिकार के साथ लिखते थे। देश के अनेक आकाशवाणी केंद्रों से (प्रमुखतः आकाशवाणी दिल्ली, मथुरा से 'काव्य-सुधा' 'बृज-माधुरी'

इत्यादि कार्यक्रमों के अन्तर्गत) उनका काव्य-प्रसारण होता था।आपका समकालीन कवियों तथा कवि-सम्मेलनों में अखिल भारतीय स्तर पर विशिष्ट ख्याति व सम्मान था। गणतंत्र-दिवस पर लाल किले पर आयोजित अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन में आपने अनेक बार काव्य-पाठ किया। समकालीन समाचार/साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं एवं काव्य-संकलनों में समय-समय पर काव्य-प्रकाशन एवं संकलन होते रहते थे। यथा- 'अमर उजाला', 'नव-प्रभात', 'नवलोक-टाइम्स', 'सैनिक', 'नागरिक', 'अमर-जगत' (समाचार-पत्र), 'युवक', 'स्वदेश', 'साहित्यलोक', 'स्वराज्य' (साप्ताहिक), 'सृजन' (त्रैमासिक) इत्यादि।

उनके जीवन का वह कालखण्ड जहाँ एक ओर साहित्यिक शिखर पर बुलंदियों को छूने का था और वे अनवरत साहित्य-साधन में निरत थे, वहीं नियति के प्रवाह को कुछ और ही मंजूर था। 27 जुलाई, 1981 को मथुरा से कोसी कलाँ जाते समय एक बस दुर्घटना में उनका महाप्रयाण हो गया और वे 40 वर्ष की अवस्था में ही चल बसे। जीवनकाल में भी उनका बहुत सा समय कॉलेजों के विवादों की भेंट चढ़ गया। परिणामस्वरूप उनकी काव्य प्रतिभा को वह प्रकाश नहीं मिल सका।

उनके महाप्रयाण के पश्चात उनकी स्मृति में उनके एम. ए. प्रथम वर्ष के शिक्षक रहे आदरणीय प्रो. (डॉ.) कुंदन लाल उप्रेती जी ने उनकी स्मृति में एक ग़ज़ल लिखी थी:

प्रिय कवि शंकर द्विवेदी के प्रति

बादल में दफन शायरी का ख्वाब हो गया
होकर शहीद आज कोई माहताब हो गया
लेता रहा बेसाख्ता बोसा जो हश्र का
कितनी अजीब बात है वो चुप से सो गया
चश्मेतर! हम किस तरह इस दिल को थाम लें
इस हौसले पे तेरे मसीहा भी रो गया
तू बेमिसाल है तेरी मैं क्या मिसाल दूँ
इन्सान था इन्सानियत का बीज बो गया
आशनाओं में कहानी तेरी फैलेगी ऐसे
बेमुरौब्बत हो के तू तो ये गया औ' वो गया
शंकर न मरा है न कभी मरने पाएगा
पी-पी के जहर ज़ख का जाँबाज हो गया।

कतिपय हिन्दी-साहित्यकारों के पुस्तक-समीक्षा के विशेष अंश

डॉ. इन्द्र सेंगर (सुप्रसिद्ध हिन्दी सेवी, कवि, लेखक एवं समीक्षक):

भारत आदिकाल से ही विश्वगुरु रहा है। कवि उस विश्वगुरु को सदा-सर्वदा अपने उसी उच्चतम स्थान का निर्वाह करने लिए संबोधित करते हुए कहता है-

विश्वगुरु! तू हो न सहसा, यों अकिंचन शिष्य;नील-अम्बर में, कहीं बनकर बृहस्पति दीख!

अपने इस कथन के आलोक में कवि का स्वप्न है कि पुरातन गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की भारत में निश्चय ही पुनर्स्थापना होगी, जो निश्चय ही भारत के लिए सांस्कृतिक उत्थान की पराकाष्ठा होगी-

फिर कहीं एकान्त में हो, सघन तरु की छाँह; छन रही हो टहनियों से दो-प्रहर की धूप।
गुरु उठाए हाथ, देते हों विहँस आशीष; भाल चरणों में धरे हों- चक्रवर्ती भूप।।

इस संकलन की वैसे तो सभी रचनाएं श्रेष्ठ हैं लेकिन मैं 'विश्वगुरु के अकिंचन शिष्यत्व पर' शीर्षक रचना को संदेश पक्ष और कला पक्ष दोनों ही दृष्टि से सर्वोत्तम मानता हूँ। इस रचना में बिम्ब और प्रतीकों का संश्लिष्ट स्वरूप और उनका सफल प्रयोग कवि की रचना धर्मिता का श्रेष्ठ एवं अनन्य उदाहरण है।

डॉ. महेश चन्द्र गुप्त (वरिष्ठ हिन्दी भाषा विशेषज्ञ, पूर्व निदेशक रेलवे बोर्ड भारत सरकार):

ठीक ही कहा है- जहाँ न जाए रवि, तहां जाए कवि। 'देश की माँटी नमन स्वीकार कर' गीत काव्य का प्रखर रूप है। कविश्री ने महादेवी शकुंतला-पुत्र वीर बालक भरत का स्मरण 'शीश कटते है कभी झुकते नहीं' में कराकर पाठक को धन्य कर दिया है-

बाल-सिंहों के दशन गिनते हुए-
भरत' के निर्भीक कौतुक पर तुम्हें।
हो भले आश्चर्य; पर यह सत्य है,
गर्व है, उसके पराक्रम पर हमें।।

काव्य का यह जगा देने वाला संकलन कविश्री शंकर द्विवेदी के दिव्यत्व को प्रकट करता है। साथ-साथ पुस्तक में अनेक प्रेरक चित्र इसकी महनीयता बढ़ाते हैं। सम्पादक को तथा श्री शिव कुमार गौतम को साधुवाद!

श्री कौशल कुमार (वरिष्ठ साहित्यकार एवं भगत सिंह खण्ड काव्य के रचयिता):

'ग्रीष्मकालीन शुक्ल पक्ष और कैलाश' रचना ने मुझे कई कारणों से प्रभावित किया। इसका विषय संविधान की अंत्योदय व सर्वोदय की भावना के अनुरूप नगण्य व उपेक्षित तत्वों के प्रति सहानुभूति व संवेदना प्रकट करने के लोकतंत्रीय आदर्शों के अनुरूप है। भाषा तत्सम, प्रांजल, सात्विक तथा भवानुरूप है। चित्रण तथा वर्णन शैली मौलिक, नवीन व आकर्षक है। सौन्दर्य व शौर्य के चित्रण का अद्भुत प्रयोग दर्शनीय है:-

नृत्य गान के समय, कलुषमन-कपटाचारी- उच्छृखल युवकों को जैसे बृज-बालाएं।
खीझ भरे-सशंक-मन में आक्रोश जगाकर; नस-नस कर विदीर्ण, भू-रज में सहज सुलाएं।।

X xxxxx

निराभरण, सद्यः स्नाता गौरांग रमणियाँ- भाव-विभोर, नामित-नयना बन अर्घ्य चढ़ातीं।
कोमल कर-संपुट में जल से भरा पात्र ले- 'विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव' गातीं।।

उपरोक्त पंक्तियाँ मर्यादा का श्रेष्ठ प्रतिदर्श हैं जो भावना को वासनाग्रस्त होने से रोकती हैं। जैसे कि तुलसी की यह चौपाई:

'सोह नवल तनु सुन्दर नारी।जगज्जननिअतुलित छवि भारी।।'

डॉ. विजेंद्र पाल शर्मा (वरिष्ठ लेखक एवं गीतकार):

निश्चय ही पं. शङ्कर द्विवेदी पिछले जन्म में राष्ट्र पर मर मिटने वाले जुझारू योद्धा रहे होंगे, तभी तो इस जन्म में उन्होंने कवि के रूप में अपनी लेखनी को ही तलवार बना कर शत्रु को ललकारा और भारत के मानस में मातृभूमि के प्रति सर्वस्व न्यौछावर कर देने की प्रबल भावना को परिपुष्ट किया। द्विवेदी जी का मानना है कि स्वाभिमान ही मनुष्य का अनमोल खजाना है। कवि के शब्दों में इस भाव को यूँ पिरोया गया है:-

हम गरल पीकर जिए हैं, इसलिए- अब किसी फुत्कार से डरते नहीं।
बात सुनते हैं सभी की शान्ति से, पर किसी ललकार को सहते नहीं।।

समाज के प्रति कवि की सजगता अतुलनीय है। अब से 50-60 वर्ष पूर्व की कल्पना कीजिए जब कवि ने प्रदूषण पर लिखा-

गंध-वाही हवा अब कहाँ देश में, बस धुआँ ही धुआँ है, धुआँ ही धुआँ।

काव्य-संग्रह की एक-एक पंक्ति राष्ट्र को समर्पित है। कवि ने सहज-सरल भाषा में छंदोबद्ध रचना करके सामान्य जन तक अपनी पहुँच बनाई है, जो रचनाकर की सफलता का द्योतक है।

स्वनामधन्य प्रख्यात कवि श्री शङ्कर द्विवेदी बाल्यावस्था से ही स्वाभिमानी व जुझारू व्यक्तित्व के धनी थे, जिन्होंने अपने जीवन में अन्याय और अत्याचार के विषम झंझावातों के समक्ष कभी घुटने टेकना नहीं सीखा था। समकालीन कविता में उनका स्वर ज्वाजल्यमान नक्षत्र के समान मुखरित हुआ किन्तु क्रूर काल-गति ने एक सड़क दुर्घटना में मात्र 40 वर्ष की अल्पायु में ही काव्य-जगत से सदा-सदा के लिए दूर कर दिया, जबकि अपने कृतित्व से वे प्रसिद्धि के शिखर पर अपना परचम फहराने के अधिकारी हो चुके थे। उनकी कविता गहन-सामाजिकता से व्युत्पन्न कविता है तथा वे जनकवि के रूप में विख्यात रहे हैं। आप एक आदर्श शिक्षाविद भी रहे। श्रीवर द्विवेदी सौभाग्यवश स्नातक/स्नातकोत्तर कक्षाओं में मेरे शिक्षक रहे हैं जिनका आशीर्वाद आज भी मेरे ऊपर बना हुआ है।

निम्नांकित श्लोक के साथ मैं श्रद्धेय गुरुदेव शङ्कर द्विवेदी जी को शत-शत प्रणाम व चरणवन्दना करता हूँ!।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:।
गुरुर्साक्षात परम्ब्रह्म: तस्मै श्री गुरुवे नम:।।

डॉ राहुल श्रीवास्तव

ग्वालियर

मौत से संवाद

एक दिन मौत से सामना हुआ
मैंने कहा तुम आ ही गई
उसने कहा मै तो मेहबूबा हूँ
मुझे तो आना ही था
तुम्हें साथ ले जाना ही था
फिर सवाल जबाब का सिलसिला चला
उसने कहा - और सुनाओ मेरे मिलन से पहले जिंदगी संग कैसी बीती
मैं चुप था क्या बताता
पर हिम्मत जुटाकर बोला
क्या कहूँ जब तुम न थी
मिलने से डरता था और जिंदगी से प्यार करता था
अब तुम सामने हो
तो और किसी से भय और प्यार न रहा
अब लगता है तुम्हारा साथ ही सच्चा है
बाकी तो सब मिथ्या है
बात आगे बढ़ी उसने कहा -
मुझसे पहले जो तुम्हें मिली 'जिंदगी'
क्या अब उससे प्यार न रहा?
मैं अब फिर चुप था, क्या करता पहला प्यार तो' ज़िंदगी' ही था
मौत बोली अरे मेरे महबूब चुप क्यों हो
अब में निरुत्तर था
ज़िंदगी मेरा पहला प्यार था
और मैं मौत का पहला प्यार था
मैं 'मौत' की बातों में उलझ चुका था
क्या करता ?
फिर उसने कहा छोड़ो
मेरी बाँहों में हो लो
कुछ हिम्मत जुटाकर मै बोला
पहले प्यार से मैंने बहुत कुछ पाया है
कैसे उसको छोड़ूँ?
मौत बोली अरे! बहुत कुछ पाया है और हँसी
घ्रणा, राग, द्वेष और अभिमान
अब मैं निरुत्तर था
और अंतिम और सच्चे प्रेम के बक्ष स्थल से लिपटकर सोने को तत्पर था
मौत ने भी अब अपने हाथ खोले
लिटा कर अपनी गोद में
सुला लिया चिर शांति में।

लेख

आकांक्षा यादव
अहमदाबाद (गुजरात)- 380004
ई-मेल: akankshay1982@gmail.com

हिंदी दिवस, 14 सितंबर पर विशेष

भारतीय संस्कृति की अस्मिता की पहचान है हिन्दी

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त करते हैं और इसके लिये हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा मनुष्य के व्यवहार, विचार एवं जीवन जीने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। भाषा आभ्यन्तर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आभ्यन्तर के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है। विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से प्रमुख 'हिन्दी' भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को एकता के सूत्र में पिरोती है। हिंदी हमारी आत्मा में बसती है, हिंदी हमारे संस्कारों में बसती है, हिंदी हमारी संस्कृति में बसती है और हिंदी ही हमारी पहचान की बुनियाद है।

हिन्दी जिसके मानकीकृत रूप को मानक हिन्दी कहा जाता है, विश्व की एक प्रमुख भाषा है और भारत की एक राजभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में सह-आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। यह हिन्दुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी– फ़ारसी शब्द कम हैं। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया है। एथनोलॉग के अनुसार हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, वहीं विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है।

हिन्दी भारतीय संस्कृति की अस्मिता की पहचान है। हिन्दी शब्द का संबंध संस्कृत शब्द सिंधु से माना जाता है। 'सिंधु' सिंध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिंधु शब्द ईरानी में जाकर 'हिंदू', हिंदी और फिर 'हिंद' हो गया। वस्तुत: ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता में 'स्' ध्वनि नहीं बोली जाती थी। 'स्' को 'ह्' रूप में बोला जाता था। अफ़ग़ानिस्तान के बाद सिंधु नदी के इस पार हिंदुस्तान के पूरे इलाके को प्राचीन फ़ारसी साहित्य में भी 'हिंद', 'हिंदुश' के नामों से पुकारा गया है तथा यहाँ की किसी भी वस्तु, भाषा, विचार को विशेषण के रूप में 'हिन्दीक' कहा गया है जिसका मतलब है 'हिन्द का'। यही 'हिन्दीक' शब्द अरबी से होता हुआ ग्रीक में 'इन्दिके', 'इन्दिका', लैटिन में 'इन्दिया' तथा अंग्रेज़ी में 'इण्डिया' बन गया। अरबी एवं फ़ारसी साहित्य में भारत (हिंद) में बोली जाने वाली भाषाओं के लिए 'ज़बान-ए-हिन्दी', पद का उपयोग हुआ है। भारत आने के बाद अरबी-फारसी बोलने वालों ने 'ज़बान-ए-हिंदी', 'हिंदी ज़बान' अथवा 'हिंदी' का प्रयोग दिल्ली-आगरा के चारों ओर बोली जाने वाली भाषा के अर्थ में किया। भारत के गैर-मुस्लिम लोग तो इस क्षेत्र में बोले जाने वाले भाषा-रूप को 'भाखा' नाम से पुकारते थे, 'हिंदी' नाम से नहीं। 'देशी', 'भाखा' (भाषा), 'देशना वचन' (विद्यापति), 'हिन्दवी', 'दक्खिनी', 'रेखता', 'आर्यभाषा' (दयानन्द सरस्वती), 'हिन्दुस्तानी', 'खड़ी बोली', 'भारती' आदि हिन्दी के अन्य नाम हैं जो विभिन्न ऐतिहासिक कालखण्डों में एवं विभिन्न सन्दर्भों में प्रयुक्त हुए हैं। हिन्दी, यूरोपीय भाषा-परिवार के अन्दर आती है। ये हिन्द ईरानी शाखा की हिन्द आर्य उपशाखा के अन्तर्गत वर्गीकृत है।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी भाषा हुई। कबीर की निर्गुण भक्ति एवम् भक्ति काल के सूफी-संतों ने हिन्दी को काफी समृद्ध किया। कालांतर में मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत और गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की अवधी में रचना कर हिन्दी को और भी जनप्रिय बनाया। अमीर ख़ुसरो ने इसे 'हिंदवी' गाया तो हैदराबाद के मुस्लिम शासक कुली कुतुबशाह ने इसे 'जबाने हिन्दी' बताया। स्वतंत्रता तक हिन्दी ने कई पड़ावों को पार किया व दिनों-ब-दिन और भी समृद्ध होती गई। आज संसार भर में

लगभग 5000 भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। उनमें से लगभग 1652 भाषाएँ व बोलियाँ भारत में सूचीबद्ध की गई हैं जिनमें 63 भाषाएँ अभारतीय हैं। चूँकि इन 1652 भाषाओं को बोलने वाले समान अनुपात में नहीं हैं अतः संविधान की आठवीं अनुसूची में 18 भाषाओं को शामिल किया गया जिन्हें देश की कुल जनसंख्या के 91 प्रतिशत लोग प्रयोग करते हैं। इनमें भी सर्वाधिक 46 प्रतिशत लोग हिन्दी का प्रयोग करते हैं अतः हिन्दी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में राजभाषा को रूप में वरीयता दी गयी। हिन्दी और उर्दू दोनों को मिलाकर हिन्दुस्तानी भाषा कहा जाता है। हिन्दुस्तानी मानकीकृत हिन्दी और मानकीकृत उर्दू के बोलचाल की भाषा है। इसमें शुद्ध संस्कृत और शुद्ध फ़ारसी-अरबी दोनों के शब्द कम होते हैं और तद्भव शब्द अधिक। जिस हिन्दी में अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी के शब्द लगभग पूरी तरह से हटा कर तत्सम शब्दों को ही प्रयोग में लाया जाता है, उसे "शुद्ध हिन्दी" या "मानकीकृत हिन्दी" कहते हैं।

आधुनिक हिंदी का जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र को माना जाता है। वह हिंदी गद्य के एक महान लेखक थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी गद्य में विशेष योगदान दिया इसके कारण ही इनको आधुनिक हिंदी का जनक कहा जाता है। अंग्रेजी काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय हिन्दी के विकास में एक नयी चेतना आयी। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के समय महात्मा गाँधी सहित अनेक नेताओं ने भारतीय एकता के लिये हिन्दी के विकास का समर्थन किया। काशी नागरी प्रचारिणी सभा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रयासों से हिन्दी को एक नयी ऊँचाई मिली। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकार किया। भारत में 14 सितम्बर 1949 को हिंदी देश की राजभाषा बनी। चूंकि हिन्दी को संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया, इसीलिए भारतवर्ष में प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत के संविधान में किसी भी भाषा को राष्ट्रीय दर्जा नहीं दिया गया है । अतः भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है। भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं की सूची है। अनुच्छेद 351, एक निर्देशात्मक आदेश में कहा गया है कि हिंदी के प्रसार को बढ़ावा देना सरकार का कर्तव्य है।

भारत में 1600 से ज्यादा भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलन में हैं, लेकिन इनमें से 22 भाषाओं को ही संवैधानिक दर्जा प्राप्त है। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं का उल्लेख किया गया है। इनमें 1950 में 14 भाषाएं – हिंदी, गुजराती, मराठी, कश्मीरी, असमिया, बांग्ला, पंजाबी, उड़िया, संस्कृत, उर्दू, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, और मलयालम इस अनुसूची में शामिल थीं, जबकि 1967 में सिंधी भाषा को इस अनुसूची में शामिल किया गया। इसी तरह 1992 में कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली और 2003 में बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली इस अनुसूची का हिस्सा बनीं। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 29 यह संरक्षण प्रदान करता है कि भारत के नागरिकों के एक हिस्से को अलग भाषा, लिपि या संस्कृति अपनाने का अधिकार है। भारत में हिंदी सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा है। भारत की वर्ष 2011 में हुई जनगणना के आंकड़ों के अनुसार 57.1% भारतीय जनसंख्या हिन्दी जानती है, जिसमें से 43.63% भारतीय लोगों ने हिन्दी को अपनी मूल भाषा या मातृभाषा घोषित किया था। हिन्दी और इसकी बोलियाँ सम्पूर्ण भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। इसके अतिरिक्त भारत, पाकिस्तान और अन्य देशों में 14 करोड़ 10 लाख लोगों द्वारा बोली जाने वाली उर्दू, व्याकरण के आधार पर हिन्दी के समान है, एवं दोनों ही हिन्दुस्तानी भाषा की परस्पर-सुबोध्य रूप हैं। एक विशाल संख्या में लोग हिन्दी और उर्दू दोनों को ही समझते हैं। भारत में हिन्दी, विभिन्न भारतीय राज्यों की आधिकारिक भाषाओं और क्षेत्र की बोलियों का उपयोग करने वाले लगभग 1 अरब लोगों में से अधिकांश की दूसरी भाषा है। हिन्दी भारत में सम्पर्क भाषा का कार्य करती है और कुछ हद तक पूरे भारत में सामान्यतः एक सरल रूप में समझी जानेवाली भाषा है। वर्तमान में हिंदी में आम बोलचाल और सरकारी कामकाज में इस्तेमाल शब्द-भंडार पिछले 20 वर्षों में 7.5 गुना बढ़ा है। शब्दों की संख्या 20,000 से बढ़ कर 1.5 लाख पहुंच चुकी है। ये शब्द उन अनुमानित 6.5 लाख शब्दों की वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के अतिरिक्त हैं, जिनमें कि विज्ञान और मानविकी की सभी शाखाएं सम्मिलित हैं और इन सबको मिला कर हिंदी का व्यापक शब्द-भंडार बनता है। हिंदी मात्र भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता और परंपरा की विरासत को अपने में संजोए हमारे सांस्कृतिक गौरव, एकता व अखंडता की पहचान है, जो अखण्ड राष्ट्र को एक सूत्र में बांधती है।

हिंदी ने कई उतार-चढ़ाव देखे फिर भी हिंदी देश एवं दुनिया में सतत आगे बढ़ती जा रही है। आज हिंदी केवल भारत तक सीमित नहीं है, इसका विस्तार विश्व के तमाम देशों में हो चुका है। जनतांत्रिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि उसके बोलने-समझने वालों की संख्या संसार में तीसरी है । विश्व के 132 देशों में जा बसे भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग हिंदी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं। एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिंदी एशियाई भाषाओं से अधिक एशिया की प्रतिनिधि भाषा है। विदेशों विश्वविद्यालयों ने इसे एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में अपनाया है। आज 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। आज हिन्दी भारत ही नहीं बल्कि पाकिस्तान, नेपाल बांग्लादेश, इराक, इंडोनेशिया, इजरायल, ओमान, फिजी, इक्वाडोर, जर्मनी, ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, ग्रीस, ग्वाटेमाला, सउदी अरब, पेरू, रूस, कतर, म्यंमार, त्रिनिदाद-टोबैगो, यमन इत्यादि देशों में

जहाँ लाखों अनिवासी भारतीय व हिन्दी-भाषी हैं, में भी बोली जाती है। मॉरीशस, त्रिनिदाद-टोबैगो, सूरीनाम, गुयाना, फीजी, द. अफ्रीका जैसे देशों में 'गिरमिटिया' के रूप में गए भारतीय अपनी संस्कृति व हिन्दी को सहेजना चाह रहे हैं। स्पष्ट है कि हिन्दी आज दूसरे देशों में भी अपनी कीर्ति-पताका फहरा रही है। एथ्नोलॉग (2022, 25वां संस्करण) की रिपोर्ट के अनुसार विश्वभर में हिंदी को प्रथम और द्वितीय भाषा के रूप में बोलने वाले लोगों की संख्या के आधार पर हिंदी विश्व की की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।

वैश्विक स्तर पर एवं देश में भी हिन्दी का विस्तार काफी हो रहा है लेकिन दूसरी ओर स्कूली शिक्षा से लेकर उच्चतम शिक्षा के स्तर पर हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएँ सिकुड़ती जा रही है। हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषायी माध्यम के विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या में लगातार गिरावट आ रही है। किसी भी भाषा के संरक्षण हेतु उस भाषा में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा का उपलब्ध होना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। महान वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने भी स्वीकार किया था कि मेरी विद्यालयीन शिक्षा मातृभाषा में हुई इसलिए मैं अच्छा वैज्ञानिक बना हूँ। वैश्विक स्तर पर देखें तो दुनिया के जिन देशों ने अपनी मातृ भाषा को प्रोत्साहित किया, वह आज ज्यादा विकसित हैं। देश में शिक्षा व्यवस्था पर वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण अब मातृभाषा में शिक्षा की स्थिति कमजोर हो रही है। प्राथमिक शिक्षा में फिर भी हिंदी या मातृभाषा का विकल्प है किन्तु उच्च शिक्षा में तो अंग्रेजी का कोई विकल्प छात्रों के समक्ष दिखाई नहीं देता है। भाषाई गुलामी किसी भी देश की सांस्कृतिक अस्मिता पर सर्वप्रथम हमला करती है। विश्व में विगत 40 वर्षों में लगभग 150 अध्ययनों के निष्कर्षों की मानें तो शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए क्योंकि बालक को माता के गर्भ से ही मातृभाषा के संस्कार प्राप्त होते हैं। ऐसे में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। भारत में 1968 में लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति से लेकर 2020 में जारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति तक में भाषाओं विशेषकर मातृभाषा के संरक्षण की बात कही गई है। भारत में भाषाओं की विविधता इसे एक वैशिष्ट्य प्रदान करती है। त्रिभाषा फॉर्मूला के पीछे आरंभ से ही यही अवधारणा रही है कि मातृभाषा का ज्ञान सांस्कृतिक समन्वय कराएगा, हिन्दी राष्ट्रीय समन्वय कराएगी और अंग्रेजी लोगों को वैश्विक स्तर पर जोड़ेगी। लेकिन दुर्भाग्यवश अंग्रेजी को हमने इतनी वरीयता दे दी कि मातृ भाषाएँ और हिंदी का काफी पीछे छूट गईं।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिंदी राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने वाली तथा विभिन्न संस्कृतियों, विधाओं और कलाओं की त्रिवेणी है, जिसके साहित्य में समाज की विविधता, जीवन दृष्टि और लोक कलाएं संरक्षित हैं। इसके लिए जरुरी है कि हम हिंदी को लेकर अपने अंदर से किसी भी प्रकार की हीनता का त्याग करें। हिन्दी गर्व और गौरव की भाषा है। विश्व की समृद्धतम भाषाओं में अग्रणी हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता की प्रतीक है। यह हमें विविधता में एकत्व का बोध कराती है। अपनी भाषा बोलने और लिखने में संकोच का अनुभव न करें। अपनी भाषा बोलने से हमारा सम्मान बढ़ता है। दूसरों से आशा करने की बजाय खुद से और अपने घर से शुरुआत करें। आइए, हम सब अपने लेखन एवं वार्तालाप में अपनी मातृभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने का संकल्प करें, तभी हिंदी सर्वव्यापी होगी।

लेखिका परिचय:कॉलेज में प्रवक्ता। साहित्य ,लेखन और ब्लॉगिंग के क्षेत्र में भी प्रवृत्त। नारी विमर्श ,बाल विमर्श और सामाजिक मुद्दों से सम्बंधित विषयों पर प्रमुखता से लेखन। लेखन-विधा- कविता ,लेख ,लघुकथा एवं बाल कविताएँ। अब तक 4 पुस्तकें प्रकाशित-' प्रकृति ,संस्कृति और स्त्री' ,(2023) 'आधी आबादी के सरोकार' (' ,(2017 चाँद पर पानी' (बाल-गीत संग्रह- (2012एवं' क्रांति-यज्ञ : 1947-1857की गाथा) 'संपादित(2007 ,।

सम्मान: उ.प्र. के मुख्यमंत्री द्वारा "अवध सम्मान" , , काठमांडू में "परिकल्पना ब्लाग विभूषण" सम्मान , अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन ,श्री लंका में" परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान" ,विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ ,भागलपुर , बिहार द्वारा डॉक्टरेट (विद्यावाचस्पति) की मानद उपाधि , भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा " डॉ. अम्बेडकर फेलोशिप राष्ट्रीय सम्मान"" ,वीरांगना सावित्रीबाई फुले फेलोशिप सम्मान इटियादी अनेकों पुरुस्कारों से सम्मानित।

ग़ज़ल

हमीद कानपुरी,

अब्दुल हमीद इदरीसी

दूर हो व्यापार से।
हुक्म है दरबार से।

जीतना मुश्किलबहुत,
गर डरोगे हार से।

बाद में हमला करो,
पहले बचलो वार से।

हादसे का जा सबब,
पूछ लो रफ्तार से।

रूठे जानम को मना,
प्यार से मनुहार से।

डॉ. मुकेश 'असीमित'
गंगापुर सिटी, राजस्थान
पेशा: अस्थि एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ
प्रतिष्ठान-गर्ग हॉस्पिटल
drmukeshaseemit@gmail.com

इमानदारी की अकड़

इमानदारी अकड़ लाती है ।बिना रीढ़ के नहीं होती न । जबकि बेइमानी डरी सी , सहमी हुई एक कोने में सिकुड़ी रहती है। इमानदारी इसलिए पसंद नहीं की जाती है ।अकडती बहुत है ,सीधे मुह बात नहीं करती है । बेईमानी देखो न ,उसे मेहमान वाजी आती है । अवसरवादिता आती है । वह जब चाहे पल भर में गधे को भी बाप बना सकती है ! इमानदारी पैदाइशी नहीं होती है ,हालातों के द्वारा पैदा होती है । जिनको मौका नहीं मिला, वे इमानदार होते हैं। असल में, ये 'इमानदार' वे लोग हैं जिन्हें बड़ा हाथ मारने का अवसर नहीं मिला। छोटी मोटी बेईमानी से अपना इमान खराब नहीं करते, बल्कि बड़े हाथ मारने में विश्वास रखते हैं।

कुछ लोग जो अपने आपको 'पैदाइशी इमानदार' बताते हैं, ये वो लोग है जो हर डिपार्टमेंट में सरदर्दी का कारण बनते हैं। इनकी अकड़, जिद्दीपन और 'ईमानदारी की तूती' से ऑफिस का माहौल हमेशा खराब रहता है। इनसे निपटने के लिए लोग तरह-तरह की जुगाड़ें लगाते रहते हैं। इमानदारी टिकती नहीं है ,यहाँ से वहा टप्पे खाती रहती है ।

आदमी या तो बेइमान हो सकता है या कामचोर। जो इमानादारी का ढोंग रचता है वो सबसे बड़ा कामचोर होता है । ऑफिस में आपको कोने कुचारे में ऐसा कोई अड़ियल बाबू मिल ही जायेगा । 'अरे यहाँ एक पैसे के दागी नहीं है समझे । काम काम के तरीके से होगा ।त्यागपत्र अपनी जेब में रखते है।जाओ कर दो शिकायत ,डरते थोड़े ही है ।अब तो तुम्हारा काम करेंगे ही नहीं ।अगर दुसरे बाबू से ले दे कर करवाया भी न तो हम टांग अडायेंगे देख लेना।" ऐसा कुछ सुनने को मिल सकता है ।

'इमानदारी' इतनी बहुमूल्य बना दी ,बिलकुल जैसे की दुर्लभ प्रजाति ,जल्दी ही विलुप्त प्रजाती का दर्जा प्राप्त करके किसी कन्सर्वेसन सेण्टर में छोड़ दी जायेगी । देश में न जाने क्या हो गया, राजनीतिक पार्टियों ने भी इमानदारी का रंडी रोना शुरू कर दिया। इमानदारी के नारों,टोपियों,बैनर और पोस्टरों ने शहर का कचरा कर दिया । इमानदारी को ऐसे ढूंढा जा रहा है जैसे जंगली सफारी में टाइगर को । जंगल सफारी में टाइगर साइडिंग की है कभी ?लोग सुबह से निकलते हैं, घंटों कैमरा लेकर जंगलों में दौड़ते भागते हैं । अगर टाइगर नहीं तो उसकी पूंछ ही दिख जाए तो इतनी खुश होते है की जैसे काली पहाडी का खजाना मिल गया हो । उसे सोशल मीडिया पर वायरल करते है । इमानदारी के साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा है।

एक बार का वाकया सुनें -किसी ऑटोवाले ने पर्स लौटा दिया, जिसमें पूरे 105 रुपये सही सलामत थे । इस इमानदार ऑटो वाले की ख़बर पूरे शहर में आग की तरह फैल गई। इमानदारी की चर्चाएं होने लगीं, लोग आने लगे, उसके इंटरव्यू होने लगे। रातों-रात वह सेलेब्रिटी बन गया। बिग बॉस का ऑफर मिल गया । साथ ही कई लुभावने ऑफर भी बाजार से आने लगे । कोई उसके साथ रील बनान चाहता था ,कोई यू टूब और फेसबुक पर उसके साथ लाइव रिकॉर्डिंग डाल कर लाइक्स एंड कमेंट्स बटोर रहा था ।अब तो ये ज़िंदा इमानदारी का एक ब्रांड बन गया। कंपनियों में विज्ञापन के लिए भी उसके पास लंबे-चौड़े ऑफर लेकर आने लगे। इमानदारी का कब बाजारीकरण हो गया पता ही नहीं लगा ।

शहर के निठल्ले पड़े सड रहे अखबार वालों को भी ताजा मसाला मिल गया ।

इस इमानदार में एक खासियत थी, ये अकड़ू नहीं था। रीढ़ की हड्डी नहीं थी, बिल्कुल केंचुआ था। मामला यहाँ तक पहुँचा कि उसके घरवालों को भी लगने लगा, "चलो इसकी ऑटो चलाने की औकात से तो घर की रोजी-रोटी चल नहीं रही थी, अब कम से कम राजनीति में जाएगा तो कुछ तो काम आएगी इसकी इमानदारी।"

फिर राजनीतिक पार्टियां भी उसके घर के चक्कर लगाने लगीं। पार्टियों में होड़ मच गयी । इमानदार आदमी की चर्चा शहर से राज्य और फिर केंद्र तक तक पहुँची ।"ये तो हमारे पार्टी में होना चाहिए! ऐसे इमानदार की तो हमें जरूरत है।" उस इमानदार को अपनी पार्टी में शामिल करने के लिए, बोली लगाई जाने लगी । उसे पार्टी का ब्रांड एंबेसडर बनाया जाने का ऑफर । राजनीतिक पार्टियों को

भी कुछ ऐसे इमानदार आदमी की तलाश थी । लंबे-चौड़े ऑफर आए और उसे चुनावी मंचों पर ले जाया जाने लगा। इमानदारी धीरे-धीरे महंगी हो गई, और वापस नेताओं की कोठियों में पलने लगी। कब इमानदारी नेताओं की कोठियों की रखैल बन गयी पता ही नहीं लगा ।

दरअसल, पार्टियां भी चाहती हैं कि बेइमानी की छवि को साफ किया जाए। चुनाव नजदीक हैं, तो कुछ इमानदार दूसरी पार्टी के नेताओं को भी उचित कीमत देकर खरीद लिया गया है । अपनी पार्टी के बेइमान दागियों को कुछ समय के लिए निकाल दिया गया है, ताकि जनता की शॉर्ट मेमोरी का फायदा उठाया जा सके। बेइमानी के दाग मिटाने के लिए जो तेल-साबुन का खर्चा है, वो भी बेइमानी से कमाई हुई दौलत से ही आता है।

बेइमानी ही इमानदारी की इमारत खड़ी करती है। संस्थाएं बनती हैं इमानदारी के लिए, फिर बेइमान हो जाती हैं। फिर संस्था अपना रेनोवेशन करा लेती है, नए तमगे और ब्रांड लोगो के साथ।

"हम बेइमान नहीं, हमारी संस्था बेदाग है।" नेता जी इमानदार हैं, ये तो विरोधी पार्टियों की चाल है, जो उन्हें बेइमान साबित करने पर तुली हुई हैं।' जब वे सत्ता में थे, तब वो भी इमानदार थे । सत्ता ऐसी वॉशिंग मशीन है, जिसमें आते ही सारी बेइमानी धुल जाती है। बेइमानी ऐसी साफ़ दिखती है कि हर कोई उसे पकड़ने को तैयार है। जैसे ई डी और सी बी आई वाले पीछे पड़े रहते हैं ।, हर कोई भौंकने को तैयार रहता है। गली का कुत्ता भी पीछे पड़ा रहता है। अब ये मुश्किल से अपनी जान बचा पाती है। जैसे बेईमानी नहीं हुई मोहल्ले की सविता भाभी हो गयी , जिसे हर कोई छेड़ता रहता है।

इमानदारी तो कहीं नज़र ही नहीं आती, ऐसे गायब है कि दिखाई ही नहीं देती। पकड़ेगा भी कौन? आखिर, जो दिखेगा नहीं, वो पकड़ा भी कैसे जाएगा!

नेता लोग हर जगह इमानदारी दिखाते हैं। वो कहते हैं, "इमानदारी दिखाने की चीज है, निभाने की नहीं," तो जैसे हाथी के दांत दिखाने के होते हैं, वैसे ही हमारे इमानदारी के दांतों पर जनता वोट छिड़कती है। बेइमानी के पैसों को हम हाथ नहीं लगाते, सीधे खाते में जाते हैं।

इमानदारी का डंका बजाने में, लोग अपनी बगल में दबी बेइमानी को छिपाने में माहिर हो गए हैं। इमानदारी के इस पुछल्ले से सीटें हड़पी जा रही हैं, वोट कबाड़े जा रहे हैं ।

आजकल इमानदारी एक ऐसा शेर बन गई है, जिसकी खाल ओढ़कर गधे भी मैदान में कूद पड़े हैं।

अगर सच पूछो तो इमानदारी सबसे ज़्यादा बेइमानों में ही मिलती है । बेइमान लूट की राशि में बंटवारे में पूरी इमानदारी बरतते है। कभी देखा है किसी बेइमान ने अपने साथी के खिलाफ रिपोर्ट लिखवाई हो कि उसने मेरे साथ बेइमानी कर ली?

इमानदारी ड्रामा क्वीन है ।निकलती है तो पूरी सज धज के,अकड से ,किसी को भाव नहीं देती । बेईमानी दबे पाँव निकलती है, चुपके से । इशारों इशारों में बात करती है । हर कोई इसके वश में हो लेता है ।इमानदारी की रिज़र्व सीट होती है, किसी को बैठने नहीं देती ,बेईमानी आर ए सी की वेटिंग की तरह ,सेटिंग और जुगाड़ करके सीट कबाड़ ही लेती है ।

डॉ.सुमन शर्मा

१)
जीवन के कई रंग देखे,
जो भी देखे तेरे संग देखे।

अमीरी तो कभी फ़क़ीरी में,
दिन रात साथ,बन मलंग देखे।

उलझन की राहों पर भी चले
तो,कभी न खुले हाथ तंग देखे।

अपनी बसायी दुनिया सुहानी,
जहाँ ख़्वाब अपने अंतरंग देखे।

जीवन की नैया जब डगमगायी,
बनते सुर ताल मन के तरंग देखे।

२)
सावन के ये श्यामल बादल....!
बरसाते निर्मल पावस जल।
धीमें धीमें पर्वत की चोटी से उतरकर
मंद पवन संग गाते बादल...!
राग मल्हार सुनाते बादल...।
बरसाते निर्मल पावस जल
सावन के ये श्यामल बादल...!

मन हर्षित,तन भीग रहा है
धरती की धानी चूनर पर,
इठलाकर नाचें छमछम बूँदे
कान्हा संग रास-लीला रचाते बादल..!
बंसी धुन मधुर सुनाते बादल...!
सावन के ये श्यामल बादल...!

निहार गगन की अद्भुत शोभा,
सौंधेपन की उन्मत्त आभा में गायें
पाँखी चातक,मोर,पपीहा
विरही मन अकुलाते बादल...!
याद प्रिय की ले आते बादल....!
बरसाते निर्मल पावस जल..
सावन के ये श्यामल बादल...!

३)
गर्व हमें है भारत पर,जग में है इसकी शान,
है प्राचीन देश हमारा,हम ऋषियों की संतान।

ध्यान रहे आज़ादी ख़ातिर,वीरों ने दे दी जान,
व्यर्थ न जाने पाये अब,उन वीरों का बलिदान।

ध्येय हमारा रहा सदा से,हों सर्व धर्म समान,
देते हैं सम्मान सभी को,पढ़ते हम वेद क़ुरान।

सत्य राह चले,जगत को दिया गीता का ज्ञान,
हमने है सिखलाया सबको को योग और ध्यान।

करना काम सदा तुम ऐसा,मिले तुम्हें सम्मान,
शिक्षा का हो विस्तार,रहे अमर देश का नाम।

दिनेश गंगराड़े '
समरपार्क, निपानिया,
इंदौर452010मप्र

चौर्यकर्म पर विस्तृत निबंध....

गुरुजी ने बच्चों से कहा चौर्य कर्म व चोर पर चार लाईन लिख कर बताओ कि चोरी करना अपराध है। निबंध नही लिखना है।सातवीं कक्षा के होनहार छात्र,विलक्षण प्रतिभा के धनी, छात्र बुध्दि प्रकाश ने अपने बुद्धि कौशल से चार नही ,चहोत्तर लाईन बल्कि पूरा निबंध ऐसा लिख डाला कि टीचर अभी तक गहरी सोच में डूबे है,उधर बुद्धि पर प्रकाश डालने से छात्र पशोपेश में है।लाइनें देखिए चोर देश की अर्थ व्यवस्था की रीढ़ है।दुनिया में कई तरह के लोग अलग-अलग धंधा चुनते है।रात में कम नींद आने वाले ऐसे जागने वाले हुनरबाज ये बिजनेस छांटते है।लोगों को यह मजाक या गलत लग सकता है लेकिन यह वाकई ध्यान देने लायक विषय है।चोरों के लिए तिजोरियाँ, अलमारियाँ और ताले हैं।चोरों की वजह से घरों की खिड़कियों पर ग्रिल लगी होती हैं, दरवाजे लगे होते हैं,ये सारा लोहे का काम व दुकान इनकी ही बदौलत कायम है। दरवाजे बंद होते हैं, इतना ही नहीं बल्कि बाहर सुरक्षा के लिए अतिरिक्त दरवाजे भी होते हैं।चोरों के कारण ही मकानों, दुकानों और सोसायटी के चारों ओर एक परिसर बनाया जाता है, जहा गेट होता है, गेट पर चौकीदार चौबीसों घंटे रहता है और चौकीदार के लिए एक वर्दी भी होती है।चोर भाई साब के कारण ही चौकीदारी के पद बने है,जिससे एक परिवार व टेलर का परिवार पलता है।चोरों की वजह से न सिर्फ सीसी टीवी, मेटल डिटेक्टर बल्कि साइबर सेल भी होते हैं।चोरों के कारण पुलिस है, पुलिस चौकी है, पुलिस थाने हैं, गश्ती गाड़ियाँ हैं, डंडे हैं, राइफलें हैं, रिवाल्वर हैं और गोलियाँ भी हैं।चोरों के कारण ही अदालतें हैं, अदालतों में जज, वकील, क्लर्क और जमानतदार हैं।चोरों के कारण जेलें हैं, जेलर हैं, जेलों के लिए पुलिस भी है।इनसे जुड़े लोग,व उनकी फेमेली पलती है।धंधा,रोजगार है।ये न होते तो काफी कुछ न होता?मोबाइल, लैपटॉप, कोई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, साइकिल,जूते चप्पल, छाते, वाहन जैसी कई उपयोग में आने वाली चीजें चोरी हो जाती हैं तो लोग नई खरीद लेते हैं, इस खरीद फरोख्त से देश की आर्थिक स्थिति को मजबूती मिलती है।व्यापार चलता है,धंधा बढ़ता है,दुकानदार भी दाल रोटी पाते है। उच्च मान्यता,ख्यातिप्राप्त, कीर्ति प्राप्त और नाम वाला यदि कोई स्टेंडर्ड चोर होता है तो देश विदेश की मीडिया की भी रोजी रोटी चलती है।

ये सब पढ़ने के बाद अब आपको भी यकीन हो गया होगा कि चोर ही सारे सरकारी सिस्टम की रीढ़ हैं और समाज के लोगों की रोजी रोटी का साधन भी है।इनके कारण ही बाजार में व्यवसाय है,व्यापार है,चहल पहल है, चहल कदमी है, भीड़भाड़ है।थोकबंद बिजनेस अखबारों में पढ़कर ही चतुर,होनहार चोर अपनी कला का प्रदर्शन करते है?यह एक हुनर है,आर्ट है ख्यात कला है जो हरेक के बूते की नही है?इस आर्ट को बताने में गर चोर नही पकड़ाया तो ये कला हुई?धरा गया तभी ये निकृष्ट चौर्य कर्म हुआ जो अपराध माना जाता है लेकिन यह घोर नाइंसाफी है।न पकड़ाने वाले कुशल चोर के हुनर को सलाम ठोकना चाहिए पर पुलिस इन बेचारों(?) को ठोकती है।

इन चोर महाशय से कई गरीब लोगों को मदद मिलती है क्योंकि वे बेहद सस्ते दामों पर भी कीमती सामान बिंदास बेच देते हैं।पुलिस न जाने क्यूँ चोरी को अपराध मानती है जबकि यह एक तकनि की कार्य है बगैर आवाज किए, मध्य रात्रि में बेहद सतर्कता, सावधानी, चालाकी से कुशलतापूर्वक अंजाम दी गई इस क्रिया में कितना खटना, पिटना, चटकना पड़ता है?जैसे गहरे पानी पैठने पर मोती नसीब होता है,इन्हें हिकारत की बजाय सामान्य तौर से लेना चाहिए?चोर भाई साब का काम भी जोखिमदार होता है।ये लोग भी बगैर मेहनत की नही खाते हैं?एक बस स्टैंड पर दर्जन भर लोग एक बेचारे को जूते चप्पल, झापट,रेपट,मुक्का,घूँसों से बेरहमी से कूट रहे थे पता चला कि उसने किसी की जेब काटी थी।देखने पर ज्ञात हुआ कि उस बंदे ने इतनी सफाई से जेब उधेड़ी थी कि पूरा पॉकेट ही लटक गया था और अगले को कानों कान खबर न थी उसके इस हुनर को अंजाम देने की भी तारीफ तो बनती है??अपनी विलक्षणता प्रदर्शित करते हुए उपसंहार में टेलेंटेड छात्र चोरों पर रहम बरतने की गुजारिश करता है?

मनप्रीत कौर मखीजा
पता- गांधीनगर (गुजरात)
manpreetmak6@gmail.com

कहानी

इत्तेफ़ाक

आज फिर घर पर कुछ हुआ क्या!
इस सवाल पर जिस हैरानी से लकी ने सखी की ओर देखा , सखी ने उसके ताज्जुब पर फिर से वही मुस्कान बिखेरी जो वह हर बार लकी के बिन बताए सब कुछ बूझ लेने , और फिर लकी के मन ही मन "हाउ यू डु थिस!" पूछने पर बिखेरती। हाँ वह अब लकी का मन पढ़ने लगी थी वह लकी की दोस्त थी उसकी सखी थी।

"होना क्या था! वही रोज की कहानी। उन दोनों को समझ ही नही आता कि मैं किसी एक की साइड नही ले सकता। वे दोनों मेरे लिए इम्पोर्टेन्ट है। "

"इट्स ओके लकी, होता है। घर की स्त्रियों के अहम के टकराव में इकलौते पुरुष का सब्र बार बार परीक्षा से गुजरता है। तुम रिलैक्स हो जाओ।" आज सखी ने लकी को तुम कहकर पुकारा। दोनों को आपस में मिले हुए करीब पाँच दिन हुए है, आप से तुम के इस सफर पर पहुँचकर आज लकी को स्वयं पर थोड़ा गर्व महसूस हो रहा था ।

लकी अड़तीस वर्षीय पुरुष, अपनी गृहस्थी और बीवी बच्चों की जिम्मेदारी निभाता जब भी थक जाता परेशान हो जाता और पारिवारिक कलह से घिरे जीवन से चिढ़ जाता तब वह शहर के बाहर बने इस सनसेट पॉइंट पर आकर शाम बिता जाता। आकाश की ओर देखकर उसे एहसास होता मानो साँझ अपने आगोश में सूरज को समेट लेना चाहती हो। सूरज की दिनभर की थकान मिटाना चाहती हो। पक्षियों के झुंड का इधर से उधर विहरना भी जैसे आकाश में अपनी उपस्थिति की रेखाएं उकेरना हो। डूबती शाम के साथ उदासियों को विदा कहने का प्रयास करते हुए लकी भी यहाँ आ जाया करता। उसके जैसे और भी लोग यहाँ मौजूद रहते लेकिन वह किसी के पास खड़े न होकर एकदम दूर किसी बड़े पत्थर पर बैठे शाम को अलविदा कहते रहता। अपने मे गुम रहने वाला लकी अगर किसी से आकर्षित हुआ तो वह थी उसकी सखी।
सखी से पहली मुलाकात यही हुई थी सनसेट प्वाइंट पर। काले रंग के शिफॉन अनारकली में उसकी गोरी देह यूँ चमक रही थी जैसे रात के अंधेरे में आसमान पर चाँद लेकिन लकी के आकर्षण का कारण उस स्त्री की सुंदरता नही थी वह स्त्री उस प्वाइंट पर आए लोगो के स्कैच बनाया करती। अजनबी चेहरों को मुस्कुराने की एक वजह देते हुए उसके स्कैच इंसान के जीवन मे एक खूबसूरत लम्हा बुन दिया करते। और वहाँ से लौटते हुए वह स्कैच उन लोगो को गिफ्ट कर दिया करती। लकी उसे देखने भर से गुजारा नही कर पाया वह उससे बात करना चाहता था। पर शुरुआत कैसे करे ! लोगो से जल्दी न घुलमिल पाने का उसका स्वभाव आज उसके गले का फांस बन रहा था।

" हाय, हैलो , बहुत अच्छे स्कैच बनाती हो आप, मेरा नाम लकी है मैं यहाँ अक्सर आता हूँ आपको पहली बार देखा आप इसी शहर से है क्या! " लकी के शब्द और सवाल मुँह में ही जम गए मानो जैसे कुछ गले मे अटक गया न कहते बन रहा न चुप रहते। वह एकटक उस स्त्री को देखे जा रहा था। अब यह उस स्त्री ने भी भांप लिया कि कोई बगल में ही खड़ा उसे कब से घूरे ही जा रहा है! वह स्कैच बनाते रुकी, और हाथ अपनी गोल ठुड्डी पर रखते हुए बोली, " आप चाहे तो यहाँ बैठ सकते है , शाम के बीतने से पहले उसे भी निहार लीजिए। "
लकी झेंप गया। उसे अपने आप पर खीझ आ रही थी। वह कैसे किसी टीनएजर लड़के की तरह बिहेव कर रहा है! न जाने वह स्त्री क्या सोच रही होगी, न जाने क्या इम्प्रेशन पड़ा होगा उस पर। कुछ सोच विचार के बाद लकी वहाँ बैठ ही गया। अब बैठ गया था तो मुँह खोलने की हिम्मत भी जुटा ली।

" आप यहाँ रोजाना आती है !"

"नही। मैं आज पहली बार आई हूँ ... किसी पर्सनल काम से कुछ दिनों के लिए इस शहर में ही हूँ अब यहाँ आती रहूँगी।" उस स्त्री ने लकी का चेहरा बखूबी पढ़ लिया था। वह जानती थी अब अगला और फिर एक और अगला प्रश्न जरूर होगा इसलिए वह पहले ही स्वयं उत्तर दे गई और लकी की उत्सुकता को अल्पविराम देते हुए उसे बैठकर खूबसूरत शाम के नजारों को देख लेने का इशारा किया। एक मुस्कुराहट के साथ दोनों ने एक दूसरे को बाय कहा। लकी ने कोई प्रश्न नही किया। शाम बीत चुकी थी लकी कुछ शांत होकर घर लौट आया था।

लकी के तीन बार डोरबेल बजाने पर माही ने दरवाजा खोला। माही के हाथ आटे से सने थे कंधे के सहारे कान से लगा मोबाइल टिका था माही अपनी सहेली से बाते कर रही थी। एक फीकी सी नजर डालकर माही वापिस किचन की तरफ मुड़ गई और लकी ने रोज की तरह स्वयं को माही व इस घर का एक साधारण हिस्सा मानकर कुछ अपेक्षाओं को जूते के साथ बाहर उतारकर भीतर प्रवेश किया।

माही , लकी की पत्नी थी जो दिखने में लकी से बेहद आकर्षक , बेहद खूबसूरत, बहुत इंटेलिजेंट और एक गोल्ड मेडलिस्ट भी थी। लकी से अरेंज्ड मैरेज और एक बेटे की माँ होने के साथ वह एक ऑनलाइन योगा टीचर भी थी।

लकी के शादी से पहले उसके दोस्त माही की तस्वीर देखकर कहा करते, "साले लंगूर को अंगूर मिल गया। तेरी तो क़िस्मत ही खुल गई, तू तो सच मे लकी निकला।" लेकिन असलियत इन सबसे अलग थी।

लकी को अपनी शादीशुदा जीवन मे यह बहुत शीघ्र पता चल गया था कि वह माही की पसन्द नही, और यह शादी भी माही द्वारा जीवनपर्यंत निभाई जा रही एक जिम्मेदारी है। लकी ने कई बार सोचा भी, कि माही को बंधन से मुक्त कर दे लेकिन शादी के एक साल के भीतर ही पैदा हुए बेटे की मासूमियत ने उसे इस कदम की पहल करने से रोक दिया लकी बेहतर समझता था कि सिंगल पैरेंट की छांव में और माता पिता के अलगाव में पला बढ़ा बच्चा किस मानसिकता से गुजर सकता है इसके साथ ही माही ने भी कभी अलग होने की कोई दिली इच्छा नही जताई शायद माही को एक डर अपने माँ बाप की नाक कटाई का भी रहा इसलिए दोनों ही तरफ से रिश्ता एक औपचारिकता के साथ जिया जा रहा था।

सुबह नौ से रात आठ बजे तक लकी अपनी शॉप पर रहता। कभी बिजनेस के किसी उतार चढ़ाव तो कभी घर के किसी सास बहू कलेश से लकी का दम घुटने लगता तो वह अपनी साँसों को महसूस करने इस सनसेट प्वाइंट पर आ जाया करता।

आज दूसरा दिन , और आज शाम यहाँ आने की वजह कल की शाम थी। लकी जानना चाहता था कि कल वह जिस स्त्री से मिला, वह कौन थी उसका नाम क्या था, लकी उसके आकर्षण में खिंचता जा रहा था। उसने आज सूरज की तरफ नही देखा उसकी नजरें टिकी थी रास्ते पर, वह चाहता था कि वह जल्दी से यहाँ आ जाये उसके पास बैठकर कोई स्कैच बनाये वह उसे देखता रहे और ऐसे ही एक शाम और अपनी खूबसूरती दर्ज करा जाए। लेकिन काफी देर हो जाने के बाद भी वह नही आई लोग धीरे धीरे सीढ़ियां उतरकर लौट रहे थे अंधेरा घिर चुका था बल्ब की कृत्रिम रोशनी कल्पनाओं से यथार्थ की ओर लौटने को मजबूर कर रही थी वह भी जाने को हुआ तब आखरी सीढ़ी पर खड़ी वह उसे नजर आई।

आज संगमरमर से सफेद लिबास में क्या चाँदनी बिखेर रही थी! बेहद खूबसूरत लग रही थी, लकी ने करीब पहुँचने तक जी भरकर निहारा फिर एक शिकायती लहज़े में कहने लगा, "आज आपने आने में देर करदी, समय पर आना चाहिए था आपको।"

वह मुस्कुराई, उसे लकी का अंदाज पसन्द आ गया था। "हम वक़्त को रोक नही सकते न , बस उसके गुजरने का लुत्फ़ उठा सकते है।" लकी भी इस दार्शनिक अंदाज़ से इम्प्रेस हुए बिना नही रह पाया। दोनों ने इशारों में ही साथ साथ चलते रहने का मन बना लिया। कुछ बेवजह की आम सी बातों के बाद लकी ने साथ डिनर के लिए भी पूछ लिया।

"आज तो नही, लेकिन कल शाम चाय पर जरूर मिल सकते है, मैं वही सनसेट प्वाइंट पर मिलूँगी आपको।"

लकी इस मुलाक़ात की बात पर इतना खुश था कि उसने मुस्कुराती आँखों मे ही रात बिता दी। अगली सुबह वह ड्रेसिंग के सामने खड़ा इत्र से नहा रहा था तब माही ने एक अलग ही लकी को देखा । यूँ भी पत्नी को पति के स्वभाव व्यवहार चाल ढाल में जरा भी परिवर्तन जल्दी दिखाई दे जाता है बस वो हर बार कहती नही और यहाँ तो माही पहले ही लकी से मन भर खुश नही थी लेकिन जो अपना है उसे अपना ही बना रहने देने और घर की किसी भी बात को चार लोगों की बातों का हिस्सा न बनने का दबाव माही को अलर्ट कर रहा था।

माही ने बेड पर बिखरे कपड़ों का सहारा लेकर ताना शुरू किया जो कि चबाई च्विंगम की तरह खिंचते खिंचते एक कड़वाहट के साथ कलह में बदल गया। लकी का मूड खराब हो चुका था वह बिना नाश्ता ही घर से निकल गया। सिग्नल पर रुका तो वह फिर दिखाई दी। हरी बत्ती होते ही लकी ने स्पीड से गाड़ी दौड़ाई और उसी के पास जाकर हॉर्न बजा दिया

"आप पीछा करने वालो में से तो बिलकुल नही लगते।" सखी ने लकी की गाड़ी के काँच नीचे करते ही कहा

"जी नही, लेकिन मैं इत्तेफ़ाक़ में बिलीव करने वाला जरूर हूँ" सखी मुस्कुराकर कार में बैठ गई। स्लीवलेस कुर्ती , नीली जीन्स और टॉप बन बनाई हुई सखी, लकी की नजर बाँधे रखने को काफी रही। घूरते रहने की चोरी फिर न पकड़ी जाए इसलिए लकी ने पूछा "कुछ खाएंगी , यहाँ समोसे बहुत लज़ीज़ मिलते है।"

सखी खिलखिला उठी । "मेरे पास एक बेहतर ऑप्शन है।" सखी ने पर्स में से एक डिब्बा निकाल कर लकी के सामने किया, "ये मठरियां खा सकते है, और ड्राइव भी करते रहिए. सफर भी कट जाएगा और आपकी भूख व गुस्सा दोनों शांत हो जायेंगे।" भूख तो लकी को लगी ही थी सरप्राइज़ भी था कुछ और पूछने से पहले लकी ने दो मठरियां उठाई और खाने लगा।

"आपका नाम क्या है वैसे !"

"हम्म, नाम मे क्या रखा है ! हम साथ है बाते कर रहे है एक कम्फर्ट बन चुका है और विश्वास भी।" सखी ने मुस्कुराते हुए बड़े कॉन्फिडेंस के साथ अपनी बात कही।
"लेकिन फिर भी , मुझे आपका नम्बर फोन में सेव करना हो तो" लकी ने रिस्क लिया।
"
आप मुझे दोस्त, फ्रेंड, अजनबी दोस्त या सखी कहकर बुला सकते है।"

सखी... यह नाम मुझे पसन्द आया। आज से आप मेरी सखी। तो बताओ सखी, कहाँ ले चलूँ आपको आज घुमाने!"

"फिलहाल तो यही रोक दीजिये, मेरी मंजिल आ गई।"

तीसरी मुलाक़ात छोटी रही लेकिन दोनों एक दूसरे के दोस्त बन चुके थे। इस भागती दुनिया मे कुछ पल ठहरकर मुस्कुराने की वजह देने वाले दोस्त, कुछ मन की कहने और सुन लेने वाले दोस्त। अब लकी को इंतजार था आज शाम का , उसे यह भी जानना था कि दोस्ती से आगे भी कुछ है क्या ! सखी के शब्द बार बार कानों में मिश्री घोल रहे थे "डोंट वरी ! हमारी इस इत्तेफ़ाक़ वाली मुलाकात का हमारी वादे वाली मुलाकात पर कोई फर्क नही पड़ेगा, मैं जरूर आऊँगी शाम को मिलते है।"

और शाम भी आ गई, लकी साढ़े पाँच बजे तय जगह पर पहुँच गया उसके पेट मे तितलियां उड़ रही थी, और हार्टबीट तब और बढ़ गई जब सखी को वहाँ पहले से मौजूद पाया। "मतलब आग दोनों तरफ बराबर लगी है" लकी अपने दोस्तों को मिस करने लगा वे होते तो जोर जोर से चिल्लाते हुए खबर भर से शहर का माहौल बदल देते। लकी का मन हुआ कि दौड़कर सखी को गले लगा ले तभी उसके कदम अचानक रुक गए उसे रुचि याद आने लगी।

अतीत में मिली हुई हार की किसी स्मृति का वर्तमान पर हावी हो जाना , इंसान की अनेक उपलब्धियों पर व्यंग्य है। लकी एकदम से फ्रीज़ हो गया। "क्या हुआ रुक क्यों गए! आओ वहाँ बैठते है।"

सखी के स्वर पर लकी चेतना में आया जैसे। सूरज अस्त होने में अभी समय था, सखी द्वारा लकी के भाव पढ़ लेने के बाद लकी ने स्वयं ही सखी को रुचि और माही के बारे में सब कुछ बता दिया।
रुचि, लकी के पड़ोस में रहती थी। सामान्य सी कद काठी लेकिन स्वभाव की बेहद मधुर रुचि और लकी एक ही कॉलेज में पढ़ते थे। रुचि के पिता सरकारी अफसर थे और बेहद कड़क स्वभाव के भी थे। जब परिवार में मुखिया दकियानूसी सोच रखता हो तब घर की बेटियां पढ़ती तो है लेकिन आगे नही बढ़ पाती। रुचि और लकी की प्रेम कहानी उनके जुड़े घरों की छत पर शुरू हुई और एक दिन, लकी के पसंदीदा रंग गुलाबी साड़ी में रुचि छत पर तो दिखी लेकिन उसके हाथों में किसी और के नाम की मेहंदी रची थी।

उसी शाम रुचि की सगाई हो गई और तभी से डूबती शाम और उदासी के साथ लकी का एक अनकहा सा नाता जुड़ गया। आज सखी को उसी गुलाबी रंग में देखकर लकी को एक अजीब से डर ने घेर लिया।

कुछ न होकर भी सखी लकी के लिए बहुत कुछ बन चुकी थी और अब वह उसे खोना नही चाहता था।

लकी के बीते कल और आज के बारे में सब जानकर सखी ने उसके हाथों को अपनी हथेली में भर लिया, लकी को यूँ लगा जैसे किसी जन्म का कोई बंधन उसे किसी जकड़न से आज़ाद कराने आया हो, सखी के बिना कुछ कहे छुअन भर से लकी एक सुकून महसूस कर रहा था।

******

आज लकी और सखी की पाँचवी मुलाक़ात थी। "तुम रिलैक्स हो जाओ" कहकर सखी ने लकी की तरफ एक स्कैच बढ़ा दिया, डूबते सूरज को निहारते बेंच पर बैठे लकी और सखी उस स्कैच में दिख तो रहे थे लेकिन दोनों के बीच सखी ने एक फासला बना दिया था। लकी अनजान भी नही था, समझ रहा था कि सखी उसे छोड़कर जा रही है।
"और दोस्त समझते है मैं लकी हूँ.." कहकर लकी खुद पर ही हँसने लगा। सखी उसे देखते रहना चाहती थी। लकी ने फिर सवाल किया, "जाने की वजह मेरा शादीशुदा होना है न!"

सखी ने सहज सी मुस्कान बिखेर कर कहा, " तुम्हारे शहर आकर पता चला कि ज़िंदगी कम पड़ गई है..पर तुम्हारे ही शहर में ज़िंदगी को कुछ ही दिनों में भरपूर जिया है मैंने , क्योंकि अपनी मर्जी से जिया है मैंने।" और फिर सखी ने एक फाईल और बढ़ा दी लकी की तरफ। एक कैन्सर पीड़िता की रिपोर्ट थी, आख़री स्टेज थी और पेशेंट का नाम था लकी मल्होत्रा.

नाम पढ़कर दोनों जोर से हँसने लगे, इतना हँसे कि आँखे नम हो गई।
शाम ढलने वाली थी। सूरज अस्त हो रहा था और बहुत कुछ खत्म हो रहा था।

डॉ लेखराज
255, शहीद भगत सिँह नगर,
सुजानपुर (पठानकोट)

ekhrajsharma120@gmail.com

संघर्ष

संघर्ष जीवन का पर्याय है। यह पूरा जीवन आदमी के साथ साथ चलता रहता है। अगर हम यूँ कहें कि जब तक संघर्ष है तब तक जीवन है तो कोई आतिशोक्ति नहीं होगी। मनुष्य के जीवन में यहां संघर्ष समाप्त हो जाता है, समझ लेना वहीं से उसका जीवन ठहर सा जाता है। यही कारण है कि हमारे बुद्धिजीवियों, मनीषीयों और विचारकों ने समय समय पर इस बात का समर्थन किया है कि संघर्ष ही जीवन है। जो भी इस संसार में आया उसने संघर्ष किया और जो भविष्य में आएं गे वो भी संघर्ष करें गे। मैंने भी अपना रास्ता खुद तय करने की बात मन में ठान ळी थी। क्योंकि किसी के सहारे कभी भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता। सहारे और दूसरों से, रिश्तेदारों से रखी उम्मीदें आदमी को भीतर ही भीतर कमज़ोर और दुर्बल बना देती है। इसलिये अपने में जितनी शक्ति होती है, जितना बल होता है उस बल के आधार पर ही मैंने आगे बढ़ने की ठान ळी थी। स्वयं से अधिक अच्छा और नज़दीक का साथी इस संसार में और कोई नहीं होता। मनुष्य का शरीर ही उसका सबसे बडा दोस्त होता है। जब कभी कोई आदमी बीमार होता है तो सब से पहले उसका शरीर ही चुपचाप उस की बीमारी को ठीक और स्वस्थ करने में जुट जाता है। आज शाम तक घर पहुंचते पहुंचते मुझे खांसी होने लगी थी और थकावट से टांगे भी दुखने लगीं थीं। तेज़ बुखार से बदन भी टूटने लगा था। घर पहुंचते ही मैं बिस्तर पर लेट गया था। मेरी ऐसी हालत देख कर मेरी पत्नी पुष्पा थोड़ा सा घबरा गई थी। करोना का भय उसे भीतर ही भीतर सताने लगा था। सुबह से बाहर था इसलिए वह सोचने लगी थी कि पता नहीं इतनी दूर कहाँ कहाँ घूम कर और कैसे कैसे लोगों से मिल कर आया हूँ। इसने उसके भीतर एक खरोंच सी डाल दी थी। क्योंकि इधर आस पड़ोस के सभी लोग बड़ी इतिहाद बरत रहे थे। कोई भी कहीं भी विना ज़रूरी काम के इधर उधर आ जा नहीं रहा था। परन्तु उसे क्या पता था कि ये तो कोर्ट और कचहरी का काम है, इसके लिए हर हाल जाना ही पड़ता है। इस तरह के विचार उसके हृदय में एक प्रकार की कंपकपी छोड़ गए थे। उसने शीघ्र ही घर में रखी भाप देने वाली मशीन को बाहर निकाला, थोड़ा साफ किया और उसमें पानी डाल कर बिजली के स्विच से जोड़ कर चलाया था। पानी शीघ्र ही उबलने लगा था और स्टीम बनने लगी थी। मैंने भी हालात की गंभीरता को पहचानते हुए भाप लेनी शुरू कर दी थी। मेरे शरीर की तपस देख कर वह एकदम से परेशान हो उठी थी। इसलिए उसने जल्दी ही घर में पड़ी पैरासिटामोल की गोली ढूंढ निकाली थी। मैंने भी बिना देरी किये उसे अपने हलक में रख कर पानी से निगल लिया था। अगले ही पल उसने बच्चों को भी मुझसे दूर रहने के आदेश दे दिए थे। सभी मेरे कमरे से दूर दूर रहने लगे थे। अब कमरे के भीतर किसी को भी प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। उसने सभी को बड़े प्यार से समझाया था कि पापा की तबीयत खराब है। उन्हे आराम करने की बेहद ज़रूरत है। आज वह अपने काम से पता नहीं कहाँ कहाँ घूम कर और अलग अलग लोगों से मिल कर आए हैं। आज कल सारे मुल्क में करोना का कहर छाया हुआ है। यह बीमारी एक से दूसरे तक फैलती है। सभी सतर्क हो गए थे।

. मेरे गले में हो रही खराश, गले में, छाती में छन छन करती बलगम का बनना और आगे पीछे दौड़ना, छीकना, पानी से तर होती आँखें उसे मन ही मन करोना के मुझ पर पढ़े प्रभाव और दबाब की तरफ चलें जाने को शंका को पक्का कर रहे थे। वेशक मैं पूरा दिन भीड़ भाड़ से बचने का और लोगों से दूर रहने का प्रयास कर रहा था फिर भी किसी के माथे पर थोड़ा लिखा होता है कि उसको करोना का संक्रमण घेरे हुए है और आप को भी आ कर घेर लेगा। उसने पूरी इतिहात बरतनी शुरू कर दी थी। फिर वह मेरे पास आ कर धीरे से कहने लगी –

'अभी अंधेरा होने में कुछ समय शेष है। आप पास ही बाजार में जा कर डाक्टर साहिब से सलाह मशविरा करके दवाई ले आयो। रात लंबी है। रात को अगर किसी प्रकार की मुश्किल आ ख़डी हुई तो फिर उस समय कहीं जा पाना कठिनाई भरा रहेगा। 'बार बार खांसी करने और थकावट से मेरा बुरा हाल होते देख पुष्पा ने मुझे अपने दिल की बात बता दी थी। लेकिन मैंने हमेशा की तरह इसे साधारण सर्दी ज़ुकाम कह कर टाल दिया था। फिर उसने मुझे शीघ्र गर्मागर्म चाय जिसमें उसने तुलसी, लोंग और इलायची डाली हुई थी पिलाई। उससे मेरा सूखता गला कुछ कुछ नर्म और तर हो आया था। लाकडॉन के कारण हम पहले से ही कुछ कुछ बोखलाए हुए थे, इस लिए मैंने स्वयं भी मन ही मन विचार वना लिया था कि हमें इस करोना महामारी रूपी जाल को ध्यान और गंभीरता से लेना होगा। हमें इस

के साथ जुडी हुई बातों को समझने और अपनाने की कोशिश करनी होगी। अपने लाइफस्टाइल, जीवन जीने के ढंग में समय के अनुसार थोड़ी तबदीली करनी होगी। वैसे भी बैंक की नौकरी है, सारा दिन बैंक में लोगों का आना जाना लगा रहता है। किसी को रोका तो नहीं जा सकता था, इसलिए हमें अपना ध्यान रखने के साथ साथ बैंक में आने वाले ग्राहकों और बैक कर्मियों का भी ख्याल रखना होगा ताकि करोना किसी को संक्रमित ना कर सके। ऐसा सब कुछ सोचते ही उसने उसी समय अपना फोन अपने बैंक के डिप्टी मैंनजर को मिलाया था। दुआ सलाम के पश्चात उसे अपने स्वास्थ की जानकारी दी। मैंने उसे कहा कि मैं कल छूटी पर रहुँ गा। स्वास्थ ठीक ना होने के कारण मेरा बैंक आ पाना मुश्किल है। सोचा कि आप सब को सूचित कर दूँ। मैं कल अपना करोना टेस्ट करवाने के लिए हस्पताल जाऊंगा। आप बैंक का काम काज संभालें और सभी को करोना के संदर्भ में पूरी सावधानी बरतने की सलाह दें। बैंक में कोई भी विना मास्क के दाखिल ना हो और बैंक के अंदर आने के बाद भी ग्राहक और कर्मचारियों में फासला बनाए रखें। आने वाले ग्राहकों के हाथों को गेट पर ही भलीभांति सैनीटाइज करवाया जाए। इतना कुछ कहते हुए मैंने सोचा था कि अब करोना जैसी नामुराद बीमारी से निज़ात् पाने के लिए टैस्ट वी ज़रूरी है और इतिहात भी ज़रूरी। मैंने अब अपना मोबाईल फोन एक तरफ रख दिया था लेकिन मुझे किसी प्रकार से चैन नहीं आ रहा था। फिर मैं थोड़ी देर तक अपने विस्तर पर लेटा रहा। अचानक् एक बार फिर उठा और बैंक गार्ड को फोन लगाया ताकि उसे भी अच्छी तरह से सुचेत कर दूँ।

अगले दिन जब मैं प्रात :उठा तो मुझे अपने स्वास्थ में किसी प्रकार की राहत महसूस नहीं हुई। रात भर आराम करने के पश्चात भी मेरी टांगे मेरा साथ नहीं दे रहीं थीं। वह दुःख रहीं थीं। खांसी बराबर मेरा नाक में दम किये हुए थी। सिर में दर्द और कमज़ोरी भी महसूस हो रही थी। मैंने उठते ही पुष्पा को एक गिलास कोसा पानी पिलाने के लिए कहा था ताकि गले में हो रही खारिश और सूजन को थोड़ा कम किया जा सके। गर्म पानी में थोड़ा सेंधा नमक डाल कर गरारे करने से मेरे गले में काफ़ी सारी राहत महसूस हुई थी। इसके पश्चात मैँ यूँ ही लेटा रहा था। अपने स्वास्थ और मानसिक दशा को स्वयं ही नियंत्रण करने का प्रयास कर रहा था। दीवार पर टंगी घड़ी दस बजाने लगी थी। मैं विस्तर से उठ कर एकदम से दूर खड़ा हो गया था। बाथरूम मैं जाकर स्नान किया, कपड़े पहने और पुष्पा को कहा कि चलो अस्पताल चलते हैं। मैं अपना करोना का टैस्ट कराना चाहता हूँ। मैं काफ़ी दूर तक घूम कर ही नहीं आया बल्कि अनेक ऐसी जगहों पर भी गया हूँ जहां भीड़ भाड़ भी बहुत थी। क्या पता कभी करोना विषाणु ने पकड़ ही लिया हो। करोना का प्रकोप पूरे देश में अपना कहर ढाह रहा है। बेशक लॉकडान की बंदिश लगी हुई है फिर भी हमारा समाज इतनी इतिहात नहीं बरत रहा था। ऐसे मैं पूरी व्यवस्था ही सवालों के घेरे मैं घिरती दिखाई देती है। सरकार अभी वैक्सीन की कमी का दुखड़ा रो रही है और टीकाकरण की गति भी थम सी गई है। लोग खुद अस्पतालों में जाकर टैस्ट भी नहीं करवा रहे। टैस्ट कराने से स्थिति का ठीक ठाक पता चल जाए गा और उसके बाद ही दवाई और परहेज़ का रास्ता अपनाना ठीक रहेगा। ऐसे दुविधा में भी पडे रहना ठीक नहीं कहा जा सकता। सुविधा केंद्रों में भी करोना का टैस्ट किया जाता है और एक दो दिनों के बाद उसकी रिपोर्ट भी मिल जाती है। रिपोर्ट आने के बाद ही हम डॉक्टर के पास जाएं गए। मेरी बात को ध्यान में रख कर अपनी सहमति प्रकट कर दी।। लाकडाउन के कारण स्कूल बंद थे। ऐसे में बच्चों को स्कूल नहीं जाना था परन्तु ऑनलाइन पढ़ाई जारी थी। हमने बच्चों को सारी बात बता दी। पुष्पा ने उन्हें बीमारी के बारे में और उसकी गंभीरता को देखते हुए और इस स्थिति में क्या करना चाहिए, बताया। ऐसे समय उन्हें अपने कमरे में बैठ कर पढ़ने का मंत्र भी दिया था। हालांकि बच्चे ऐसी बातों को गंभीरता से नहीं लेते लेकिन पुष्पा ने उनके पढ़ने लिखने और खेलने के समय का नियोजन इस तरह किया कि वे ख़ुशी ख़ुशी अपने अपने काम में लग गए। फिर दोनों स्कूटी पर सवार होकर अस्पताल में बनाए गए सुविधा केंद्र में जा पहुंचें। वहां एक लंबी कतार पहले ही लगी हुई थी। वह भी उस कतार में सब से पीछे खड़ा हो गया। अपनी रजिस्ट्रेशन उसने पहले ही करा रखी थी। एक घंटे की लंबी प्रतीक्षा के पश्चात उसकी बारी थी। उसके बाद उसका टैस्ट हुआ तो उसको कुछ राहत महसूस हुई थी। अगर हमें इस जिंदगी को पटरी पर लाना है तो हर हाल में कुछ सावधानियां रखनी होंगी। तभी हम भविष्य में होने वाली मुसीबतों से बच सकेंगे। हमें खुद भी सबक लेना चाहिए और दूसरों को भी वैसा करने का आग्रह करना चाहिए। पहल खुद से ही की जाए तो अच्छा रहेगा। आप किसी भी हालत में करोना के खिलाफ अपनी ढ़ाल- मास्क, शारीरिक दूरी और सैनीताइज़र के इस्तेमाल में ढ़ील ना दें। अपने साथियों और बैंक कर्मियों के साथ साथ परिवार जनों को इन दोनों चीजों के प्रयोग में किसी प्रकार का समझौता ना करने दें। अच्छा हो अगर समय पर करोना टैस्ट भी करा लिया जाए। हमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि अपनी सेहत का स्वयं ही आकलन कर के दवाई खाते रहें। करोना टैस्ट के पश्चात किसी भी डॉक्टर के लिए काम बढ़ा आसान रहता है। इसलिये हमने जाँच में देरी नहीं की।

करोना टैस्ट के पूरे दो दिनों के पश्चात मेरे फोन पर रिपोर्ट आ गई थी। टैस्ट में मुझे करोना पॉजिटिव घोषित कर दिया था। मैं तो पहले से ही ऐसे महसूस कर रहा था। सेहत विभाग से जुड़े सिविल अस्पताल में करोना मरीजों से निपटने के लिए अच्छे प्रबंध नहीं थे। इसलिए मैंने विना किसी घवराहट के डॉक्टर की सलाह से स्वयं को अपने ही घर में आइसोलेट कर लिया था। मेरी हालत देख कर डॉक्टर साहिब ने विशेष निगरानी की सलाह दी थी। अस्पताल वालों के पास इतने इंतजाम नहीं थे। इसलिए उन्होंने घर में ही क्वारन्टाइन होने की सलाह दें दी थी। वे

हमें धीरज बँधाते हुए कहने लगे कि अभी आप को आई. सी. यू. की ज़रूरत नहीं है। फिर पुष्पा को भी उत्साहित करते हुए कहने लगे कि आप इनका घर में भलीभांति ख्याल रख कर ही इन्हें स्वस्थ कर सकती है। मेरा फोन नंबर अपने मोबाईल में सुरक्षित कर लो जब भी कोई मुश्किल आए तो शीघ्र ही मुझे फोन लगायो मैं उसी समय आप को फोन लाइन पर मिलूंगा। आपको किसी किस्म की तकलीफ नहीं होने दूंगा। मैंने पुष्पा को अपनी पॉजिटिव करोना की रिपोर्ट पहले ही बता दी थी। उसने भी शीघ्र मेरा कमरा अपने घर से अलग थलग कर दिया था। कमरे में आने जाने के लिए सभी को मना कर दिया था। फिर अगले ही क्षण मैंने अपने करोना पॉजिटिव होने की बात अपने बैंक के डिप्टी मैंनेज़र को बता दी थी और अगले पंद्रह बीस दिनों तक ना आ पाने की असमर्थता बताई थी। उन्हें कार्यस्थल पर शारीरिक दूरी बनाए रखने की हिदायत भी दी थी।

अब मैंने घर आ कर अपने मानसपटल को पूरी तरह से शांत कर लिया था। अपना ज़रूरी रोज़मर्रा का सामान अपने कमरे में उचित स्थान पर रखने के निर्देश दिए थे पुष्पा ने भी एक शिक्षित नर्स की भूमिका निभाना शुरू कर दी थी। उसे इस तरह काम करते देख कर मैंने भी सलाह दी थी कि आप स्वयं भी ध्यान पूर्वक रहें। बाहर कहीं बाजार कहीं सब्जी लेने या फिर कोई और सामान लेने जाना हो तो वापिस आने पर हाथ धोएं और कपड़े बदलें। सीधे आ कर किसी से ना मिलें। बच्चों को भो मास्क पहनने और हाथ धोने को प्रेरित करें। मेरे कमरे में आने से पहले और बाद स्वयं को सैनेटाइज करें। मास्क पहन कर आएं। लेकिन वह मेरी बातों को हवा में उड़ा कर कहती है कि मुझे कुछ नहीं होगा। हम पर ऊपर वाले कि दुआएं रहती है और हमेशा रहेंगी। पतिदेव की सेवा करते हुए अगर मुझे कुछ हो भी गया तो भी मैं स्वयं को भाग्यशाली ही समझूंगी। आप किसी प्रकार की चिंता ना करें। अपना ख्याल रखें। लेकिन उसकी इस तरह की बातें सुन् कर मैंने उसको किसी प्रकार की लापरवाही ना बरतने की सलाह दी थी। क्योंकि करोना के खिलाफ लड़ाई तभी संभव है जब हम सावधानी पूर्वक सभी नियमों का पालन करें। लेकिन पुष्पा तो मेरे लिए पूरी सुहानुभूति और पूरा स्नेह बरसाने और हँसते हँसते हर प्रकार का जोखिम उठाने को तैयार वर तैयार दिखाई दे रही थी। उसके ह्रदय में मेरे प्रति अद्भुत निर्मल व्यवहार ने मुझे उत्साहित ही नहीं किया था बल्कि मेरे मन में छायी उदासी और निराशा को भी पल झपकते ही उड़ा दिया था।

पहले दो तीन दिन तो मुझसे बुखार के कारण उठा ही नहीं जा सका था। खांसी, वुखार और वदन दर्द ने कारण बुरा हाल हुआ हुआ। लेकिन पुष्पा ने मेरी हर तरह से पूरी सहायता की। नियमित रूप से मुझे सक्रिय रखा। हर रोज सुबह समय पर उठाया, योगा के लिए प्रेरित किया। उसने नियमत रूप से रोज तीन चार वार पानी गर्म कर के दिया। बार बार भाप लेने को कहा। दिन में चार बार हल्दी, गलो, तुलसी, काली मिर्च, सोंफ, लौंग, इलायची और गुड़ का थोड़ा थोड़ा काडा भी बना कर पिलाया। सावधानी से छाती रोग विशेषगय डॉक्टर की सलाह के अनुसार दवाई दी और उनके निर्देशन में रहते हुए खिलाई। समय समय पर वह फोन पर उनसे सलाह मशविरा भी लेती रही। नार्मल मैडीसन फतेह किट की दवाई खिलाई। समय समय वह घर में आइसोलेट रहते हुए उसने खुद मेरा टैमपरेचर आकसीमैट्रो से आक्सीजन लेबल और ब्लड प्रेशर बगैरा चैक किया। शुक्र इस बात का रहा कि मेरा आक्सीजन लेबल बराबर ठीक बना रहा।

कुछ ही दिनों में मैं पूरी तरह से सक्रिय हो गया था। रोजाना सुबह उठता। आँगन में रखे गमलों में लगाए पौधों को पानी देता, पीछे किचन गार्डन में जाकर भिंडियों, वैगनो और टमाटरों के पौधों की गुडाई आदि करने के लिए स्वयं को लगाया। घर आंगन में झाड़ू लगाना और छोटा मोटा काम भी करने से आदमी की हिम्मत और उत्साह ही नहीं बढ़ता बल्कि छोटे छोटे कामों में व्यस्त हो जाने से मन मस्तक में उभरने वाली नकारात्मकता को भी धक्का लगता है और
सकारात्मकता उभरने लगती है।

देखते ही देखते मैं स्वयं को स्वस्थ महसूस करने लगा था। खांसी कम होने लगी थी। बुखार भी अब कभी कभार ही होता था। अब मैँ अपनी मनपसंद पुस्तकों को पढ़कर अपना समय गुजारने लगा था। पुष्पा अपने पढ़ने के लिए जो दो तीन मासिक पत्रिकाएं खरीद कर लाती थी अब मैँ उन्हें पढ़ने लगा था। एक दिन मैंने उसे दो पत्रिकाओं के नाम लिख कर दिए ताकि जब वह खरीदारी के लिए बाजार जाए तो बुक स्टाल से उन्हें भी खरीद लाए। इसमें उसने ज़रा सी भी देर नहीं की और वह अगले दिन वह दोनों पत्रिकाएं ख़रीद लाई।

मेरा पढ़ने लिखने मैँ मन फिर से लगने लगा था। बीमारी की तरफ से ध्यान हटने लगा था। मुझे धीरे धीरे अपने स्कूल कालिज के दिनों की रात दिनों में लगातार की पढ़ाई की याद आने लगी थी। कितनी कितनी देर रात भर जग कर पढ़ाई किया करते थे। क्लास में एक दूसरे से आगे निकलने के लिए खूबसूरत होड़ लगी रहती थी। जब पेपर समाप्त हो जाते तो पिता जी कई पत्रिकाएं हमारे पढ़ने के लिए लाया करते थे। इस तरह दोबारा पुस्तकों से जुड़ने का अवसर मिला। इस से मेरी मानसिक परिस्थितियां परिवर्तित होने लगीं थीं। ऐसे समय अपने ह्रदय और मानसिकता को शांत रखना ज़रूरी होता है। इसके लिए ज़रूरी है कि आप वो काम करें जो तुम्हारे ह्रदय और मानस को शांति और उर्जा प्रदान करें। पूरे पंद्रह दिनों के पश्चात मैंने स्वयं को विल्कुल स्वस्थ अनुभव किया था। फिर डॉक्टरों की सलाह के मुताविक एक बार फिर कीरोना टैस्ट कराया। लौट कर कुछ दिनों के लिए फिर आइजोलेशन मैँ रहा। जब कुछ दिनों पश्चात अस्पताल से रिपोर्ट आई तो वह नैगेटिव थी। चारों तरफ घर परिवार मैँ प्रसन्नता हिलोरे लेने लगीं थी। जब इसका पुष्पा को पता चला तो वह खुशी से झूमने, नाचने और किलकारियां भरने लगीं थी। वह एकदम से उर्जित हो गई थी। उसके पावों मैँ

अद्भुत सी हिम्मत और साहस भर गया था। उसके पावों को पहिए लग गए थे। उसमे गतिशीलता और सक्रियता पहले से भी अधिक दिखाई देने लगीं थी। उसके पिछले दिन बहुत कठिनाई भरे और थका देने वाले गुज़रे थे। जब जीवन साथी बीमार हो तो कोई भी अपना साहस छोड़ सकता है लेकिन आज मेरे करोना नैगेटिव हो जाने का समाचार सुन कर उसके मुँह से स्वयं ही निकल पड़ा था -----

'कठिनाई भरा समय आता है और अपने प्रभावो से हमे दुःख भी देता है लेकिन ऐसे कठोर अनुभव जिंदगी जीना सिखाते है। जब जिंदगी की रेलगाड़ी पटडी पर सीधे आगे बढ़ती है तो सभी साथ चलते है। लेकिन ज़रा सी भी पटडी ऊबड खाबड़ होने लगती है तो साथ छूटता चला जाता है। हमें अपनी ज़िन्दगी की पटरी से गाड़ी को नीचे नहीं उतरने देना हैं। विफलता हाथ लगने पर भी हमें बैठना नहीं है। किसी ने ठीक ही कहा है कि पतझड़ के विना वृक्षों पर बहार नहीं आती, नये हरे भरे पत्ते नहीं आते। कठिनाईयों और संघर्ष के विना ना अनुभव ही ग्रहण होता है और ना ही जिंदगी सजती संवरती है। 'पुष्पा कहती चली जा रही थी और उसकी आँखों से बहते आसू उसकी गालों से नीचे की तरफ बहते जा रहे थे।

डा लता अग्रवाल "तुलजा"

भोपाल

मन द्वारिका मित्र सुदामा

खोकर
तुझको ऐ मित्र
क्या कहूं क्या बीता है
सावन सा था जो
जीवन
अब मरू सा रीता है।

बिछड़कर तुझसे
जाना मित्र सुदामा भी हो
तो छोटा नहीं होता
क्योंकि
चेहरे पर उसके
कोई मुखौटा नहीं था।

तारे भले न
तोड़कर वो लाया
मझधार में
हिचकोले लेती नैय्या को
हम बार मेरी
किनारे पर ले आया।

सूरत से नहीं
सीरत से था प्यार जिसे
बिन कहे
दर्द का मेरे अहसास था उसे
आइने सा
चेहरे को मेरे पढ़ लेता था
कितना भी हूँ उदास
पल में होठों पर मेरे
मुस्कान सजा देता था।

सच कहती हूँ
ऐसा मित्र अगर कोई
मिल जाए
अंधकार में सिमटी
मन की द्वारिका
फिर रोशन हो जाए।

रश्मि वैभव गर्ग

कोटा राजस्थान

एक उत्सव ऐसा हो जाए..

यूँही..
विसर्जन से पहले,
एक
ख़्याल मन में
आया..
गणपति बप्पा को
हम इंसान ने ही बनाया..
फिर उनको,
रोली ,चंदन से
सजाया..
कर दी प्राण प्रतिष्ठा,
मन के भावों से..
और...
आस्था का दीप
जलाया..
कर देंगे, विसर्जन..
अपने भावों का..
दे देंगें , भाव भीनी विदाई..
क्यूँ ऐसा..
हमने ये पर्व बनाया..
काश ...
इसबार.. एक उत्सव,
ऐसा हो जाये..
जिसमें, अपने अवगुणों का
विसर्जन.. हो जाये..
रहें.. न कोई..
वैमनस्य, आपस में...
तो...
विघ्नहर्ता का उत्सव..
सच में, सार्थक
हो जाये

डॉ. मनोहर अभय

सम्पर्क : प्रधान सम्पादक अग्रिमान
अमृत कुञ्ज ७ -८, रामनाथ सिटी,
राजगढ़,(पी.ए.सी. के सामने),
ललितपुर रोड, झाँसी - २८४ १३६

जिन्दा मछली

कस्वा सलिमपुर | सरकारी अस्पताल | जून की तचती दुपहर | तोता कहार की घरवाली,चम्पी का पहला प्रसव | उसे मूज की खटिया पर लिटाकर अस्पताल लाए, चार आदमी |लंच का समय | डाक्टर - नर्स कोई नहीं | चौकीदार ने सहारा देकर चारपाई आपरेशन थियेटर के आगे वरामदे में रखवा कर डाक्टर को खबर करने चला गया |

एक ओर प्रसव पीड़ा ,दूसरी ओर शरीर को जला देने वाली चिलचिलाती धूप|करीब एक घंटे बाद पधारीं डाक्टर चन्द्रप्रभा |आते ही चौकीदार को फटकार लगाई |

'ओ टी क्यों नहीं खोला '?

'चाबी आपके पास थी '।

माँग नहीं सकता था ।

तकरार के बीच बोल पड़ा तोताराम मेम 'सा डाँट - फटकार बाद में कर लेना ,मेरी मेहरारू को सम्हालो '।

' क्या बकते हो ? सरकारी काम में दखल देते हो' ।

चुप हो गया गरीब । ओ टी खोला । जंग लगी ऑपरेशन टेबल । कमरे में धूल -धक्कड़, मकड़ी के जाले । इसी गंदगी के बीच चम्पी को टेबल पर लिटाया गया। सीजेरियन करने की कोशिश । हुआ तो जाने क्या हुआ । चम्पी की देह पीली पड़ रही है । बैठती जा रही है उसकी साँस । बैठ गई हमेशा हमेशा के लिए। मरा हुआ बच्चा । पसीना -पसीना हो गई डाक्टर । कुछ सम्हल कर बाहर आई । 'मरी हुई औरत लेकर आए । पहले नहीं आ सकते थे । लो थामो ये पर्ची और ले जाओ मरे हुए बच्चे और माँ को

'मरी हुई औरत ! क्या कहतीं हैं मेम 'सा ?अच्छी भली दर्द में भी बात करती कमरे में आपके साथ गई ,आप कहती हैं मरी हुई' ।

'ज्यादाबक- बक मत करो ,जल्दी उठाओ इस लाश को । , आपने मारा है!नहीं ले जाऊँगा मेरी घरवाली को । तोता कातर स्वर में जोर से बोल रहा था। साथी भी उसी -साथ में आए संगी की आवाज दुहराने लगे। गुल-शोर । , सड़क चलते लोगफेरी वाले, आस- पास के दुकानदारों ने घेर लिया अस्पताल । हंगामा । नारेवाजी। किसी ने मोबाईल से सूचित कर दिया पुलिस को। घेर डाक्टर अपने क्वाटर की ओर भागती डाक्टर को भीड़ ने लिया । पुलिस का दस्ता मय असलाह हाजिर। लोग नहीं हो रहे टस से मस । डाक्टर को बर्खास्त करो । शव नहीं आएगा कोई मंत्री या विधायक तक जब नहीं उठेगा। भीड़ बढ़ रही है।

पत्थर- वाजी । ईंट का टुकड़ा सिपाही के कंधे को छू निकल गया कर । लाठीचार्ज। भगदड़। किसी का पाँव , कुचलाकोई नीचे गिरा । देख सी एम हालत बिगड़ती सब व्यर्थ ओ को सूचित किया । ,हाँखबर जरूर मीडिया के हाथ लग गई । सुबह अख़बार और टी वी पर ग्राउंड ,रिपोर्टसचित्र । रोंगटे खड़े हो गए अफसरों के। स्वास्थ्य ,मंत्री का फोनजिलाधिकारी को । तत्काल प्रभाव से नर्स निलंबित-डॉक्टर । स्टाफ की पोस्टिंग नए । सी एम सदस्यों की जांच समिति गठित ओ की अध्यक्षता में तीन हुई। एक सदस्य स्वास्थ्य मंत्रालय का उच्चाधिकारी। स्थानीय विधायक को अपनी चिंता। चुनाव नजदीक। निम्न वर्ग का बहुमत । विधायक उच्च वर्ग का। तोता के हितैषी चाहते हैं कि सरकार उस के दर्द को समझे । अपने दर्द हैं-सबके अपने । अंदर खाने बात चल रही है कि डाक्टर को बचाया जाय। साख की अन्यथा सरकार चली जाएगी। मीडिया खींच लाया भीतरी बात। जंग लगी ऑपरेशन टेबल से इंफेक्शन। एनस्थिया से लेकर सीजेरियन अकेले डॉक्टर ने ही किया । की एनेस्थिया डोज उपयुक्त नहीं थी। मरीज रिकवर नहीं कर , पायाहार्ट सिंक कर गया । डाक्टर ने लीपापोती कर था दिया मरीज सर्जरी से पहले ही मर चुका लिख । पोस्टमार्टम केवल दिखावा था। तोता को आभास हो गया अब कुछ होना नहीं है । बिजली गिरेगी तो उसी पर । और किसी का कुछ बिगड़ने वाला नहीं। उसका घर तो बिखर गया। पार्थिव शरीर लेकर लौट आया। सूखी घास बबूल की गीली टहनियों में जल कर राख हो गयी चम्पी। न बेटा न बेटी । अकेला सोच रहा है । चम्पी थी गरीब बाप की बेटी । पांच सौ में खरीद लाया । उमर कोई खास नहीं । रसोई से पानी खींचने के धंधे में वह भी शमिल ।

सुबह खाली पेट दोनों निकल जाते । रोटी के वक्त से पहले लौट आती । इंतजार करती तोता का। मजाल हैकि उसके आने से पहले एक निवाला भी मुँह में डाले । उसे खिला- पीला कर जो बचता वही खा कर चैन की जिंदगी बिता रही थी । कभी कोई शिकायत नहीं । यही हाल शाम की व्यालू का । तीज -त्योहार पर बड़े घरों से पकवान मिल जाते ।

तोता चम्पी को अपनी जिन्दगी से ज्यादा चाहता था । कभी हाट- बाजार जाता तो उसकी पसंद की जलेवी - कचौड़ी जरूर ले कर आता । एक बार उसे सनेमा दिखा ने ले गया । बोला आज गरम -गरम जलेबी -कचौड़ी खाएँगे । सिनेमा घर में, पहली बार कुर्सी पर बैठे दोनों हाथ में हाथ डाले । जब हँसी मजाक का सीन आता तो हँस -हँस कर कुर्सी से उछल पड़ती । प्यार -मुहब्बत के दृश्य पर तोता के कान में कहती है " हाय कैसे बेशरम हैं । हमने तो कभी ऐसे नहीं किया । 'आज करेंगे । देखती रह' । शो खत्म हुआ । गरम- गरम जलेबी -कचौड़ी खाईं, पेट भर के । फिर लौट चले घर को । सूरज डूब चुका था । शहर पीछे रह गया । खामोश लम्बी राह । तोता ने कहा 'थक गई होगी । आ मेरे कंधे पर बैठ जा' । 'अरे! कोई क्या कहेगा'?

' कहेगा सो कहता रहेगा ' और उसने छरहरी चम्पी को गोद में उठा लिया। प्यार करते -करते पहुँच गए गाँव की पोखर तक । दोनों प्रेम की फुहारों में भीग हुए थे । ऐसा सुहाना दिन फिर कभी नहीं आया । अब क्या आएगा ? अतीत में खोये तोता की आँखों से आँसुओं के बादल फट पड़े । वह मुँह धोनेअंदर जा ही रहा था कि चमचमाती कार उसके घरके सामने थी । कार से उतरी डॉ चंद्र प्रभा ।

"मेम सा' आप !कैसे तकलीफ की ?
'तुम्हारी मदद की जरूरत है' ।
'हुकम करें'।
'हुकम नहीं निवेदन है । ये रखो पचास हजार रुपए सरकारी इमदाद के' ।

'इमदाद या मेरी घरवाली के कफन की कीमत ?ये रुपए आप उठा ले जाइए' ।
'ऐसा मत कहो । मैं तुम्हारे दर्द को समझती हूँ । सवाल मेरी जिंदगी का है । नौकरी चली जाएगी । इस कागज पर दस्खत कर दो' ।
' कैसा कागज '?
'यही कि तुम्हारी घरवाली की मौत मेरी लापरवाही से नहीं ,वह रस्ते में ही मर गई थी' । 'सरासर झूठ'।

'मैं जानती हूँ और तुम भी जानते हो। सच्चाई ये नहीं है। पर ये कागज मेरी जिंदगी और मौत का कारण बन सकता । इस पर , अंगूठा मार दो तोता राम'!
मैं जिन्दा मछली निगलने वालों में नहीं हूँ । मेरा घर तो बिगड़ चुका है । अब जिन्दगी में रहा ही क्या है? किसके लिए झूंठ बोलूँ ?
अपना सा मुँह लेकर लौट गई डाक्टर चंद्र प्रभा । कार के बच्चे पीट रहे थे और ताली पीछे कुत्ते भौंक रहे थे ।

प्रेरणा यादव
ड्रीम वैली, सिलीगुड़ी

मेरी समानंतर दुनिया

इस दुनिया के
समानांतर
एक दुनिया और है,
वास्तविक दुनिया में
मेरे सर
इलज़ाम बहुत हैं..
कांधो पर जिम्मेदारी,
नाकामयाबीयों
का बोझ है,
मान - मर्यादा का सवाल है..
वह जो दूसरी
दुनिया है ना,
पूर्णत:
मेरी है
वहाँ आज़ाद हूँ मैं,
मेरे ख्याल आज़ाद हैं,
वहाँ मैं बस मैं हूँ!

बदलाव

समानता, स्वतंत्रता
सहभागिता
जैसे बड़े -बड़े
भारी - भरकम शब्द
वह मन ही मन दोहरा
सहज होने का प्रयास करता है,
पितृसत्तात्मक समाज में
जन्मा वह,
अपने अंतस में प्रतिदिन
एक जटिल लड़ाई लड़ रहा है,
ख़ुद को नये ज़माने
के साचे में
ढालने का प्रयास कर रहा है,
उसके बर्दास्त की सीमा तो
चौका देती है!
सच, यह एक सुखद बदलाव है!

वह शहर

उस शहर में
जो एक समय
मेरा पता भी था..
मैं छोड़ आयी हूँ
उसे..
मगर
दर्पण पर
रंग - बिरंगी
बिंदिया
और
चौखट पर
स्वास्तिक का निशान
शायद मिल ही जाए!

कहानी

राजेन्द्र कुमार सिंह
लिलीआर्केड,फ्लैट नं-101
मेट्रो जोन बस स्टैंड,महाजन हास्पिटल समोर
नाशिक-422009,(महाराष्ट्र)
ईमेल rajendrakumarsingh4@gmail.com

बिखराव

बाप को रिटायर्ड होते ही दोनों बेटे बहू का माथा ऐसा ठनका कि वह रह-रहकर उल्टा मां-बाप पर बमक जाते।गृहस्थी के भार से मुक्त होकर अब सारा भार बेटों पर क्या डालते,परिवार में बिखराव की दरार स्पष्ट दिखने लगी।रामलाल को यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करें ।बड़ा बेटा लखन बहू सीमा और दो बच्चों नवीन,विजय के साथ एक ही शहर में पास वाले कॉलोनी में अर्ध निर्मित बिल्डिंग में सुरक्षा प्रहरी का कार्य संभालते ही सपरिवार वहीं रहने चला गया था।बिल्डिंगआधे-आध में भरी हुई थी।इसलिए पगार के अलावा महीना में गाड़ी धोने व नये मकान मालिक के गृहप्रवेश के समय घर के साफ-सफाई से कुछ अतिरिक्त पैसा बना लेता था।छोटा बेटाआशीष और उसकी बहू सुष दोनों प्राइवेट जॉब में थे।एक छोटा बच्चा था दो साल का,जो सुष सासू मां के जिम्में छोड़कर जाती थी।दोनों अलग-अलग जगहों पर थे किंतु उधर से एक ही गाड़ी पर साथ आते थे।शाम को वापसअक्सर साथ में आते थे कभी-कभार ट्राफिक जाम कीअधिकता की वजह से सुष बस से पहले निकल जाती थी। रामलाल को सेवानिवृत हुए अभी दो माह भी नहीं हुआ था बिखराव की एक छोटी चिंगारी पैदा होकर इधर-उधर बिखरने लगी थी।क्योंकि रामलालअब घर खर्च नहीं चलाने का इतिश्री करके सारा भार वह आतिश व सुष पर डालकर निश्चितता की नींद सोने वाले थे। किंतु पति के निर्णय सुनकर उनकी पत्नी अंशा को आभास हो गया था कि घर में बिखराव की आग लग चुकी है। मामला कब विस्फोट हो जाए।

एक तो रामलाल दोनों प्राणी शुगर और बीपी के पेशेंट थे दिन भर में दोनों प्रणानियों को दस-बारह कैप्सूल व टैबलेट तो खाना होता था।इसलिए बहू कुछ ग़लत करती तो वे कभी-कभी सुष का गलत कह देते थे।रामलाल समझाने के क्रम में कुछ कह देते तो बहू के साथ बेटा भी नाक सिकोड़कने लगता था।लेकिन बेटे के नाक मुंह सिकुड़ना या भीतर से मां-बाप का प्रति कसैलापन व्यवहार पूरी तरह स्पष्ट भी नहीं हो पाया था कि दिवाली के दो दिन पहले रामलाल को जिसका डर था वह विस्फोट की तरह घर में ब्लास्ट कर गया।एक हल्की से खरोच से सुष ने ससुर को अपने वक्तव्यों से नोचकर रख दिया।

'आप मुझ पर हुक्म चलाने वाले कौन होते हैं ?अपने पैरों पर खड़ी हूं किसी का दिया हुआ नहीं खाती हूं।अच्छा खासा कमाती हूं।मैं किसी का रोब व आधिपत्य में रहने वाली नहीं।'बहू का इस तरह के कटु व्यवहार से रामलाल तो भीतर से आहत हुए ही सासू अंशा का मन लावा की तरह बहू पर फट गया।

'हम तो चार-पांच गोतिनी थी।लेकिन अपने सास-ससुर को एक शब्द भी नहीं बोल पाती थी।तो क्या हमलोग का नहीं निबह पाया।'

'वो सब आपके जमाने में था।अब कि बहूएं सहने वाली नहीं।' 'गलती करोगी तो डांटेंगे नहीं तो फिर कैसा परिवार ?'

'परिवार रहे चाहे जाए भाड़ में।'सुष इतना कह फोन करके वह अपने पिता को बुला ली थी।

सुष का मायका उसी शहर में था और दो-तीन किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित था।इसलिए फोन करते ही आध घंटे में धमकआते थे।देर-सबेर बेटी के द्वारा पारिवारिकआंदोलन को हवा पानी देकर देख लेने की धमकी देकर बेटी कोअपने यहां ले जाने में सफल हो जाते थे।

किंतु इस बार थोड़ा अधिक हो गया था।रामलाल के अवकाश ग्रहण के बाद का यह आंदोलन था।आजू-बाजू के लोग दो माह पहले निमंत्रण स्वीकार कर पड़ोस वाले काफी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिए थे।आपलोग के प्रति बहू बेटे के सेवा भाव के प्रवृत्ति को देखकर लंबी उम्र का आशीर्वाद व स्वस्थ रहने का आशीष देकर चले गए थे।अपने आजू-बाजू के लोगों द्वारा उनके परिवार के प्रति रखें कृतज्ञता का भाव से रामलाल का हृदय प्रदेश में हंसी खुशी के फूल खिल गए थे।अभी वह इसी आवेग के झूले में झूलते दो माह का वक्त ही सरक नहीं पाया था कि सुष ने उनकी सारी आशाओं पर यकायक पानी फेर दिया।एक हल्की-फुल्की बातों ने बहू ने अपने जोश को बेकाबू कर प्रहार रूपी प्रकोप में तेजी लाकर शांत सरोवर में पत्थर चलाकर प्रकंपन मचा दिया।

दिवाली के दो दिन पहले की ये घटित घटना त्योहार के उमंग को बेरंग करके रख दिया था।सुष के पापा प्रकाश भी आए थे और अपने बेटी के करतूत पर पर्दा डाल,उल्टे वह अपने समधी रामलाल को ही दोषी करार देकर बेटी के करतूतों पर पर्दा डाल, अपने बेटी को लेकर चले गए।जाते-जाते बोलते गए-'रामलाल जी मुझ में अभी हिम्मत

है अपनी बेटी को पाल लूंगा।लेकिन इस घर मेरी बेटी आपकी दहलीज पर पांव नहीं रखेगी।पिता की द्वारा कही गई बातें सुन बेटी सुष सुनकर एक बार फिर से दोहरा दी-'अब मैं आने वाली नहीं।'

'जाओ मत आना।'रामलाल ने अपना उदगार आखिर निकल ही गया था।बेटा तो तटस्थ बना रहा।सुष की गलती होते हुए भी बेटा मां के बातों में गलतियां ढूंढ निकाली।

सुष तो उसी शाम चली गई थी अपने छोटे एकलौते बेटे को लेकर।उसका पतिआतिश जाने के बाद अपने खुमारों को मां-बाप को प्रति फटकार कर बाहर निकाल दिया।

दो दिन बाद ही भैया दूज था।रामलाल की एकलौती बेटी रीता ससुराल से भाई दूज के लिए आई थी।किंतु यहां का नजारा देख वह भी भीतर से टूट गई थी।उसने भाई को समझाने की अथक प्रयास की।किंतु वह सुष के गलती को मान नहीं रहा था।सारा दोष मां के उपर डालकर एक बार फिर से बरस पड़ा।क्योंकि बेटा मां-बाप को कुछ तरजीह नहीं दे रहा है तो बहन को क्या देगा ?रीता ने सुष से मिलकर मामला को रफा-दफा करने की प्रयास की।किंतु उन दोनों केभीतर क्या था किसी को मालूम नहीं था। पर अब से घर का राशन भरने के बाद चली तो मामला उलटा पड़ गया।हालांकि सुष को घर लाने की बात चल ही रही है लेकिन गलती होने पर रामलाल घर का बुजुर्ग होने के नाते समझौता तो करके चलने वाले हैं नहीं।गलती होगी तो बड़े बुजुर्ग होने के नाते डांटेंगे ही।

रामलाल घर के मामला को आपस में सुलझाना चाहते थे लेकिन उनके संभावना के विरुद्ध इसकी तंतु कमजोर पड़ने के बजाय और रफ्तार पकड़ लिया।क्योंकि वक्त के साथ सुष काफी मुंहजोर हो गई है।शरीर का कोई भीअंग जब काम नहीं करें तो उसका इलाज किया जाता है।लेकिन यहां इलाज की गुंजाइश बची ही नहीं थी।पेड़ का कोई टहनी रोगग्रस्त हो गया हो तो उसे काटकर हटा दिया जाता है।

रामलाल छोटे बेटे बहू को परिवार से अलग करने का मन बना लिए थे।यदि बीमारी हाथ से निकल जाता है तो उसको काटकर फेंक दिया जाता है।जब भी कोई सिरा कमजोर होगा वह अंगड़ाई लेना शुरू कर देगा।इसलिए जिसको साथ रहना है तो स्वागत है। खाना-पीना साथ खा लेने से परिवार नहीं कहा जाता।आपस में एक-दूसरे के प्रति प्रेम,विश्वास,समर्पण की भावना जब भरी होती है तभी परिवार है यदि ऐसा नहीं तो उसे संयुक्त परिवार कहना बेकार है।'

रामलाल तो हार मान लिए थे अपनी तरफ से।क्योंकि उनके दृष्टि में पानी सर से ऊपर बहने लगा है।लेकिन उनकी पत्नी अंशा को अभी भी विश्वास है की वह समझाने से समझ जाएगा।

रामलाल पत्नी की बचकानी बातें सुनकर हंस दिए थे।अंशा कुछ समझ नहीं पाई थी।

वह मुस्कराते हुए अंशा से कह रहे थे-'सुष और तुम्हारा बेटा वापस आ जाएं तो क्या तुम खुश हो जाओगी ?क्या आपस में वैसा मेल मिलाप,वैसा स्नेहात्मक लगाव रहेगा।मुझे तो ऐसा कतई लगता नहीं।'

जहां पैसा से प्यार करना आ गया वहां रिश्तों की सम्मान बेमानी हो जाती है।सारा ध्यान एक ही बिंदु पर केंद्रित होकर उसी के इर्द-गिर्द घूमते रहती है।उपेक्षा का फसल उगाने का शुरुआत यहीं से शुरू होता है।जो बहू खींच-तानकर तीन-चार साल हमलोग के स्नेह के छाया में गुजारी वह स्नेह नहीं बल्कि अपना पांव मजबूत कर पलायन का राह तलाश रहे थे।घर के बुजुर्ग सदस्यों का बोलना बच्चों पर जब बोझ लगने लगे तो समझिए आज नहीं तो कल बिखराब निश्चित है।किंतु समझाने-बुझाने से बिखराव रुकता नहीं बल्कि उससे कहीं बेहतर सटीक रास्ता चुनने का प्रयास करता है।ताकि चूक न हो और टीस की आंच से दोनों पक्षों में से कोई झुलसे नहीं।किंतु सबका सोच एक जैसा नहीं किसी-किसी में लोच की प्रवृत्ति पाई जाती है।

रामलाल का परिवार हाल-फिलहाल इसी दौर से गुजर रहा है।बड़ा बेटा तो मिला-जुलाकर ठीक है।हालाकि बेटे में तो नहीं बहू में हल्की-फुल्की बिखराव की हवा लगते देखा था।किंतु बेटे ने साफ कह दिया था-' देखो नेहा,यदि मां-बाप को छोड़कर जाने के लिए कहोगी तो मैं आजीवन उनका दिल नहीं दुखाऊंगा।गलती हो गई तो उनका बोलना बिलकुल जायज है।वह जो सोचेंगे हमलोग के भलाई के लिए सोचेंगे।क्योंकि प्रकृति का नियम है कुछ दिन के बाद हम भी अपने बेटों पर अवलंबित हो जाएगें।जीवन का यह सिलसिलाअनवरत चलता रहता है।इसलिए पांव फूंक-फूंककर सोच-समझकर,आगे बढ़ाना है।ताकि हमारे व्यवहार से उन्हें लाचार न होना पड़े।छोटे भाई व उसकी पत्नी का लक्षण कुछ अच्छा नहीं दिख रहा है।यदि मां-पिताजी के साथ हमलोग छोटे जैसा व्यवहार करने लगे तो वे दोनों पूरी तरह से टूट जाएंगे। क्योंकि हमें तोड़ना नहीं उनको जोड़कर रखना है।ताकिअपना सब कुछ हमलोगों पर अपना सर्वस्व न्योछावर करते रहे।अब उसका उपकार हमें चुकाना है।नेहा समझ गई थी।फिर उसने किसी को शिकायत की मौका नहीं दी।

किंतु छोटी बहू जैसे ही जॉब में लगी फिर उसके तो पंख निकल आए।बड़ा बेटाअधिक पढ़ा लिखा नहीं था।काम चलाऊं था। जो छोटे-मोटे कंपनी या बिल्डिंग में सुरक्षा गार्ड का कार्य कर रहा था। किंतु छोटा एम बी ए किया हुआ था और जॉब में था।

कितना तनख्वाह है यह किसी को मालूम नहीं था।दोनों की बातें आपस में ही साझा सीमित रहती थी।हकीकत किसी और को ज्ञात नहीं था।छोटा तो शादी से पहले जब जॉब में था तभी वह इसकी भनक भी नहीं लगने दिया था।अब तो पत्नी आ गई थी।अब कहां संभव था।लखन तो पहले ही घर से निकल गया था लेकिन उसका एक ध्यान हमेशा अपने माता-पिता पर रहता था। जब साथ में एक साथ एक छत के नीचे सभी रहते थे तब छोटी बहू अक्सर बड़ी बहू को लेकर मां के कानों में छोटी-मोटी बातों को लेकर उकसाते रहती थी और सासू अंशा ने उसके बातों में आकर डांट लगाई देती थी।ऐसा करने में उसको

बड़ा मज़ा आता था।तभी रोज-रोज के खीच-खीच से उसके पिताजी ने सुरक्षा प्रहरी के काम में रखवा दिया था।लखन पहले जिस कंपनी में अस्थाई रूप से कार्य करता था उससे बढ़िया था क्योंकि कंपनी में तो आठ घंटे की ड्यूटी उसमें रात्रि पाली की ड्यूटी भी।लेकिन अब उसको इन सारी समस्याओं से निजात मिल गया था।

दिन पूर्ववत जैसे-तैसे बीत ही रहा था कि एक दिन बातों-बातों में रामलाल ने घर का राशन मैं नहीं लाऊंगा यह बात कहकर बुझा हुआ दिया एक हल्की सी चिंगारी से शनै-शनै सुलगने लगा।कुछ खाने-पीने की चीजों को लेकर मामलाअक्सर तूल पकड़ लेता था।

रामलाल ने एक दिन सुष के पिताजी को बुलाया।लेकिनआकर बेटी को क्या समझाते मामला उल्टा तूल पकड़ लिया।उन्होंने बेटी का पक्ष लेने में कोई कमी नहीं की।बोले-'रामलाल जी मेरी बेटी बिल्कुल ठीक है।आज मैं अपने बेटी को लेकर जा रहा हूं।'

संयुक्त परिवार है छोटी-मोटी घटनाएं तो होती रहती है।उसके पापा बेटी को समझाने की प्रयास क्या करेंगे।उल्टा वह अपने बेटी को लेकर चले गए। चलते-चलते उन्होंने कहा-' मेरी बेटी ठीक है।वह जो कह रही है ठीक कह रही है।आपके दहलीज पर अब हरगिज पांव नहीं रखेगी।'

और आज उसका आखिरी फैसला था।अंशा और ननद रीता एक बार फिर से जुड़ने के प्रयास के क्रम में उसके घर आई।आतिश तो नहीं था किंतु काफी मशक्कत के बाद भी वह टस-से-मस नहीं हुई।सासूअंशा कहती रही-'घर के बुजुर्ग हैं,बच्चे गलती करते हैं तो डांट-डपट करना उनका फर्ज बनता है।इसे तुम दिल पर लेकर मत चलो।किंतु वह सास के फरियाद को अनसुना कर गई।

सासू मां के बात की अनसुना करते देख सुष की मां ने कहा-'वह मेरी भी नहीं सुनती।'

सुष के यहां से लौटते वक्त शाम हो गया था।आतिश ड्यूटी से आ गया था।अंशा व रीता का फरियाद पर कोई असर नहीं हुआ तो रामलाल आतिश के तरफ मुखातिब होकर कहा-'आतिश फैसला तुझे करना है।अब तुमको क्या करना है।मेरे संग रहना है या बहू- बेटे के साथ।'

किंतु रामलाल को मालूम था कि ऊंट किस करवट बैठेगा।क्योंकि निर्णय क्या होने वाला है उससे अच्छी तरह वाकिफ हैं-'तुमको जो सामान ले जाना है कोई रोक-टोक नहीं है ले जा सकते हो।कहीं भी रहना शांतिपूर्वक जीवन यापन करना।क्योंकि किसी को ऐसा मत बोलना जिससे तकलीफ पहुंचे।तुम्हारा गलती माता-पिता सह लेंगे ,दूसरा बर्दाश्त नहीं करेगा।'

'ठीक है पापा।'आतिश यह कहते हुए भीतर से भावूक हो गया था-'पहले क्वार्टर तो मिल जाए।'

और आज रामलाल का संयुक्त परिवार में बिखरावआ गया। आखिर वे भीतर से जर्जर हो गए रिश्ते पर कब तक लबादा डालते रहेंगे।जब अगला खुद नहीं रहना चाह रहा है।

अमलेन्दु शुक्ल
सिद्धार्थनगर उ०प्र०

न भूला परिपाटी को

तोड़ दिया सब रिश्ते नाते,
चूम लिया फिर माटी को,
भूल गया सम्बंध नेह के,
न भूला परिपाटी को,

परिपाटी जिसने गौरव पर,
जीना मरना सिखलाया था,
राष्ट्र प्रथम का बोध यहां,
जिसने सबको बतलाया था,

हवन हो गए होकर समिधा,
याद रखा इस माटी को,
भूल गया सम्बंध नेह के,
न भूला परिपाटी को,

भूल गया हाथों के कंगन,
भूल गया नयनों के अंजन,
भूल गया वो सेज महकती,
भूल गया सावन की मस्ती,

मां की बातें सब भूल गया,
प्यारी रातें सब भूल गया,
भूल गया त्योहार वो सारे,
देने थे उपहार वो सारे,

भूल गया अपने हर रिश्ते,
न भूला इस माटी को,
भूल गया सम्बंध नेह के,
न भूला परिपाटी को,

भले छोड़कर चला गया वो,
लेकिन न जा पायेगा,
देकर प्राणों की आहुति,
हम सबको राह दिखायेगा,

उसका गौरव अमर रहेगा,
चूम चूम इस माटी को,
भूल गया सम्बंध नेह के,
न भूला परिपाटी को।

कहानी

(गुजराती से हिन्दी में अनूदित)

कहानीकार: वर्षा अडालजा

अनुवादक: डॉ.रजनीकान्त एस.शाह

लिक्विड लाउंज बार

`टु `चिल्ड बियर अँड वन जीरो कोक।''

कामकाजी दिन में भी लिक्विड लाउंज बार में दोपहर के बाद भारी जमावड़ा हो जाता था। आदित्य, विवेक और भावेश परम मित्र।

गोल्डीसिंह ने बार के पीछेवाली छोटी दुकान खरीद ली और वहाँ अतिरिक्त टेबल रख दिये थे। आदित्य लाउंज के आखिरी छोर पर रखे टेबल पर बैठा। लाउंज के एगले हिस्से में ही ज्यादा भीड़ बनी रहती थी। वहाँ वाइल्ड लाइफ और जंगल का वातावरण बनाया गया था। दीवार पर प्राणियों के चित्र, प्लास्टिक के पौधे, झाड़ियाँ और उनमें बंधा हुआ झूला। वहाँ सेल्फ़ी लेने के लिए कई लोग पंक्तिबद्धपांत बनाए खड़े थे।

धमाकेदार म्यूझिक, काँच के ग्लास की झंकार और विविध प्रकार की आवाज़ों का अस्खलित प्रवाह यहाँ आखिरी छोर पर आकर छितरा जाता था। यहाँ शांति का अहसास हो रहा था। गोल्डी ने बियर के केन और झीरो कोक भेजा ही था कि विवेक और भावेश आ गए।

``अरे आदि! सॉरी ब्रो, भावेश की बाइक उसका भाई ले गया, मैं पिकअप करके आया इसलिए हम....''

`नो प्रोब्लेम। मैं भी अभी अभी आया।''

विवेक ने ठंडे बियर की चुस्की ली, ``हा.....अरे ओ भावेशिया, तुम बियर पीना नहीं सीखे तो नहीं ही सीखे। निरा देशी का देशी जो ठहरा।''

``कॉलेज में एडमिशन लिया तभी मम्मी ने प्रतिज्ञा लिवायी थी, तुम कभी नोनवेज नहीं खाओगे...''

``और शराब को छूएगा तक नहीं वी नो। हजार बार तुम्हारे मुंह से सुना है पर क्या ये हमारे कॉलेज के दिन हैं अब! मैं हमारे डायमंड के फेमिली बिज़नेस में हूँ। आदित्य कॉर्पोरेट वर्ल्ड में तुम नौकरी करते हो। तुम्हारी शादी की भी तो बात चल रही है ना! भावेश अब तो बिज़नेस पार्टी में स्कॉच का स्विमिंगपुल बांधना होगा, उसमें क्लायंट तैरेंगे और डूबेंगे तभी डील हो सकती है।''

``मात्र शराब! और भी बहुत कुछ भावेश। लेस सेइड धेन बेटर! विवेक।''

``अरे भाई मेरी तो ऐसी कौन सी मजबूरी है! दस से पाँच की बंधीबंधायी नौकरी,कजीन्स या बहनों के साथ किसी फिल्म में जाना, छुट्टी के दिन चाचा, मामा या बुआ के घर जाना और मम्मी-पापा के साथ ज्ञातिहितवर्धक मण्डल में योजित गरबा देखने के लिए जाना – यह मेरी सोशियल डायरी, और आप दोनों ने उस डायरी को तो पढ़ा ही है ना!''

विवेक ने कपार पर हल्की सी चपत लगायी।

``हे भगवान! तुम कभी नहीं सुधरोगे, बाय धी वे, आदि, इसबार तुम पोरबंदर में ज्यादा दिन तक रहे!''

``यस बॉस, दादा के रेटिना का कुछ कोंप्लीकेटेड ऑपरेशन था। हॉस्पिटल में उनके साथ करीब दस दिन रहा, घर जाकर भी मैं कुछ वक्त के लिए रुक गया, दादा जो अकेले ठहरे इसलिए कुछ ठीक हो जाए उसके बाद वहाँ से निकला। पापा अभी वहाँ रहेंगे।''

``आदि मैं तो तुम्हारे दादाजी का बहुत बड़ा फ़ेन हूँ।''

``रियली!''

``हाँ विवेक इस उम्र में आदमी अकेला रहे, अपना काम खुद करे हेट्सऑफ। दो एक दिवाली पर आए थे ना यहाँ! तब मिलने गया था, व्होट आ पर्सनालिटी! अभी भी बिना झुके चलते हैं। क्या तो उनकी याददाश्त है!''

``सॉरी, तब मैं योरोप था।''

``भावेश, इसबार मैंने आराम से दादा जी के फ़्रीडम मूवमेंट की तस्वीरें देखी, न्यूजपेपर सब अच्छे से संभाले हुए!''

``अरे वाह!''

``अरे यार, दिनभर करना क्या! टी.वी. भी डिब्बे जैसा। पापा ने कहा दादा जी की अलमारी को ठीक से सजा दो। मैंने तो अलमारी को खोला और आई वाज स्पेलबाउण्ड!''

``क्या उसमें सोना-रूपा भरा हुआ था!''

``वोट!''

``देखो आदि, उस जमाने में सोना कितना सस्ता था! हमारे बापदादे भी क्या यार, थोड़ी सी सोने की ईंटें खरीदकर रखी होती...''

``तुम तो कुछ बोलना ही नहीं, तुम्हारे दादा तो बरसों पूर्व एन्टवर्प पहुँच गए थे और वहाँ हीरे की अमराई बो रखी है। तुम तो तैयार माल पर बैठे हो।''

``जस्ट जोकिंग ब्रो।''

``ओ.के. मैंने अलमारी को खोला तो ठूंस ठुँसकर भरी हुई पुस्तकें! फ़्रीडम मूवमेंट के उस समय की फोटो के आल्बम, अनेक फ़्रीडम मूवमेंट में थे उनके पत्र दादा के नाम थे! सारी फ़ाइल
भरी हुई। उसमें गांधीजी का भी, ही हिमसेल्फ हेड रिटन महादेवभाई का भी पत्र, गांधीजी'स सेक्रेटरी यु नो।''

``आदि मुझे तो ऐसा लग रहा था, कि तुम कोई संपत्ति लेकर आया होगा। दादाजी के पास प्रॉपर्टी तो होगी ना!''

``बड़ा मकान है, हवादार। तत्पश्चात् दादाजी की सारी किताबें सजायी, फटी हुई पुस्तकों को ठीक करके रखी गई, दवाई छिड़कवायी। वे तो मना करते रहे थे पर पापा ने नयी चादरें और तकिया आदि सब नया सजा दिया, सीझन था इसलिए।''

``मैं आफूस ले गया तो उन्होंने बच्चों में बाँट दिये।''

``अरे व्हाय!''

``क्योंकि उन्होंने बरसों से आम खाना बंद किया है। पूछो क्यों?''

``लो पूछा, बोलो।''

``मुझे कहते थे आदि बेटे! इस देश में गरीब लोग अनाज के कौर से वंचित हैं तो मेरे मुंह आम कैसे लग सकता है?'' ये उनके एक्झेट वर्ड्स।''

``दोस्त, भगवान के पास अब वह माटी ही बची नहीं है कि उसे चाक पर चढाकर ऐसे सुरेख हूबहू मनुष्य बनाये जा सके।''

``भावेश, तुम तो गुजराती मीडियम में पढे थे मेन! व्होट अ लेंगवेज़! गोल्डी....अनधर राउंड।''

दो चिल्ड बियर के टीन और झीरो कोक आ गये।

``जब मैं निकला तब दादाजी ने एक किताब मेरे हाथ में रखी, माय एक्सपीरियंस विथ ट्रूथ...''

``मारा सत्यना प्रयोगो' गांधीजी की आत्मकथा।''

``वापसी यात्रा में ही रास्ते में ही पढ़ ली मैंने तो। व्होट आ फेंटास्टिक बुक!''

``विवेक वह तो संसार की हाइएस्ट सेलिंग सूची में दर्ज है।''

``भावेशिया यु सी, वैसे तो मालूम है, मैंने रिचर्ड एटनबरो की फिल्म गांधी देखी थी ना! यस ही वोज आ ग्रेटमेन।''

भावेश भी यकायक उत्साहित हो गया।

``दोस्तो! हमें भी कुछ करना चाहिए। सोसायटी को समथींग कोन्ट्रीब्यूट करें।''

बियर पीते पीते विवेक हँस दिया।

``आम त्याग की प्रतिज्ञा लेनी है। सॉरी आदि, नो ओफ़ेन्स, जस्ट किडिंग।''

``विवेक! यह किडिंग नहीं है, गंभीर बात है। मैं तो आत्मकथा पढ़ते पढ़ते क्लीनबोल्ड! भावेश की बात सही है, लेट अस डु समथींग....यु बॉय एग्री?''

विवेक ने हाथ ऊपर किया।

``ओ.के. एनवायर्नमेंट के लिए अवेरनेस के क्षेत्र में कुछ करते हैं। इन दिनों वह तो हॉट सब्जेक्ट है, ग्लोबल वोर्मिंग एंड ऑल धेट। फेसबुक और इन्स्टा पर पोस्ट छोड़ते रहना है। सब लोग उन पर बहुत एक्टिव होते हैं ना!''

``प्लीज तुम बकवास बात मत करो। तुम लोग यदि तीसरी बार बियर पीना चाहते हो तो ठीक है। मैं तो दो में ही तृप्त हो गया।''

``मैंने यू-ट्यूब पर मोटिवेशनल स्पीकर डॉ.विकास बेनर्जी का वीडियो देखा है। बहुत सारे फोलोअर्स हैं! नेक्स्ट वीक यहाँ मुंबई में ही ताज लेंड एंड बांद्रा में उनका वर्कशॉप है, दो दिन के लिए।''

``और उसमें कौन तीर मारनेवाली बात है।

``भावेशिए! **तनिक** सुन तो सही, वाह पॉज़िटिव थिंकिंग पर लेक्चर दे और हमें लाइफ के गोल समझाये।''

``और कलदार?''

``इक्यावनहजार,परंतु दो दिन वर्कशॉप और लंच के साथ। लेण्ड्स एंड का खाना अमेजिंग होता है।''

``देखो विवेक...''

``अरे भाई आपको कहाँ पैसा जमा कराना है, मेरे ओफ़िस से जमा हो जाएंगे।''

``विवेक, वह अपनी लाइफ का गोल सैट कर रहा है, तगड़ा बैंक बेलेन्स। क्या कहते हो आदि!''

`ओफकोर्स। पैसे बरबाद करने नहीं हैं चलो अब उठते हैं। कहीं जाकर डिनर कर लेते हैं, मुझे भूख लगी है।''

विवेक ने बिल अदा किया और वे लोग बाहर निकले।

``ऐसा करो, मेरे घर चलते हैं। मेरे पेंटहाउस में बैठकर गपशप करेंगे। डिनर भी लेंगे। हमारे काम की भी कोई बात करनी हो तो।''

विवेक की कार आयी। ड्राइवर ने दौड़कर सबके लिए दरवाजे खोले। पेरेडाइज के पेंटहाउस में तीनों मित्रों ने महफ़िल जमायी। महाराज को चाइनीज़ फूड का ऑर्डर दिया।

`अरे विवेक, तुम्हारा बर्थडे तो पास में ही है। इसबार पार्टी कहाँ रखी है?''

``नो यार। पापा मम्मी एंटवर्प गए हुए हैं। चाचा की फेमिली ज्वेलरी एक्जिबिशन के लिए जयपुर है। चलो हम सब लॉन्गड्राइव पर चलते हैं। बहुत वक़्त हुआ हम गये नहीं हैं,सेल्फ ड्राइव ओ.के.!''

``वेधर भी बहुत अच्छा है। जलसा करेंगे। रोक ट्रिप, जिंदगी न मिलेगी दुबारा, राइट!''

``भावेश तुम्हें तो कई फिल्में याद हैं। साथ में रुचि भी आएगी, माय गर्लफ्रेंड।''

``अरे वाह, हमें बताया भी नहीं!''

``मुझे भी अभी पता चला।''

तीनों हँस दिये। कि गर्म चाइनीज़ फूड आया और खाते हुए ट्रिप का आयोजन कर दिया। दो दिन के बाद की अलस्सुबह विवेक की एकदम नयी एसयूवी में वे लोग निकल पड़े। बातें, हंसी मज़ाक मे दूर में कहाँ से कहाँ पहुँच

गए। रुचि भी बतरस का आनंद लेती रही। उसने कार को रुकवाया।

``विवेक, लुक। यह स्मोल विलेज। वाउ वॉट अ ग्रीनरी! और कितनी शांति!''

कार से सब लोग उतरे और भावेश ने देखा।

``लीजिये, यह बंधु तो हमारे लिए ही चाय की टपरी खोले बैठे हैं। यहाँ ही अठे द्वारका कर लेते हैं!''

``रुचि ने पिकनिक बास्केट से नास्ता निकाला। भावेश चायवाले के पास खड़ा रहा। चाय में शक्कर कम और अदरक छोडने के लिए कहा।

``क्या नाम है भैया!''

``रामू।''

``बिहार से हो? उनमें यह नाम कॉमन है।''

``जी बाबूजी, आया था दर्शन करने के लिए, यहाँ ठहर गया। बड़ी शांति है।''

``दर्शन?''

``जी बहन जी। यहाँ पास में ही राधाकृष्ण का बहुत प्राचीन मंदिर है, बहुत ही प्यारी मूर्ति है। कहा जाता है, सौ साल पहले किसी रानी ने बनाया था।''

``भाईलोग हम यहाँ राइट प्लेस पर राइट टाइम पर आए हैं, जय हो!''

``तुम पहले यहाँ खड़ी हो जाओ, फ़िर बोल।''

``पहले दर्शन कर लेते हैं बाद में मैं समझाता हूँ। चलो रामूभैया। दर्शन के लिए ले चलो।''

पास में ही मंदिर था। वाउ, हाऊ ब्युटीफूल कहते ही रुचि बलिहारी गई। चप्पल उतारकर
मंदिर के आँगन में आयी। वहाँ मंदिर के परिसर में बैठा एक वृद्ध पूजारी दीये के लिए बाती
बना रहा था।

रुचि ने फोटो निकाली।

परफेक्ट शॉट। पत्थर में नक्काश किया हुआ अद्‌भुत शिल्प। दूर से दिखाई पडनेवाली संगेमरमर की मूर्तियाँ और पंडित जी इज कंप्लीटिंग ध पिक्चर।''
सब ने मोबाइल से फटाफट मंदिर के, आजूबाजू की हरियाली के और एकदूसरे के चित्र लिए और घूम फिरकर सबने मंदिर दर्शन किया। रुचि ने पालथी मारकर वहाँ बैठक जमा दी।

``आई लव धिस प्लेस। पंडित जी आप यहाँ कब से सेवा कर रहे हैं?''

``बस अब श्वेतकेशी हुआ हूँ, तब मैं दस-बारह वर्ष का था। मेरे बापू धरमदास गोस्वामी पूजा करते थे।

``बहुत सारे लोग यहाँ दर्शन करने के लिए आते होंगे ना?''

``छोटा सा गाँव है, वे लोग आते रहते हैं यहाँ से कार से गुजरनेवाले लोग यहाँ सुसताते हैं और दर्शन भी करते हैं।''

``और आपको पगार या माहवार, वॉट एवर भत्था कौन देता है!''

``गाँव ही देता है, सीधा(कच्चा अनाज,तेल,घी आदि)-सामान आदि भी देते हैं, अकेला जीव सदाशिव।''

आदित्य उतावला हुआ।

``रुचि, उनका इंटरव्यू लेना बंद करेगी प्लीज! दानपेटी में कुछ रख दो तो चले यहाँ से। रास्ते में वडा सेंटर तो देखा ना! वडा खाकर मुंबई की ओर अभी और दो घंटे का ड्राइव है। कम ऑन विवेक, भावेश।''

रुचि आराम से सीढ़ी पर आकर बैठ गई।

``इतनी भी क्या जल्दी है! बैठो भी।''

``अरे,लेकिन...''

``प्लीज लिसन, आई हेव अ प्लान। और जबर्दस्त प्लान।''

``रास्ते में बात करना ना! देरी हो रही है।''

``यस, पर अब देर करने जैसा नहीं है।'' विवेक चिढ़ गया।

``चलो ना रुचि! और घुमा फिराकर बात मत करो। फटाफट बोलो,जो भी कहना हो सो।''

``मैं जल्दी ही बोलूंगी, पहले आप सब बैठ जाइए।''

``आओ, चलो भाई, बैठ जाइए सब। तुम तो बहुत जिद्दी हो।''

`` हम समाज सेवा और ओल धेट की बातें करते थे ना। धिस इज धी प्लेस। यहाँ हम
एक मस्त रिजोर्ट बनाएँगे....लिसन....इस मंदिर की पब्लिसिटी करके, उसकी बगल में ही रिजोर्ट! अफलातून। लोग वीकएंड में होलिडेज में लोनावला, महाबलेश्वर या लॉन्ग ड्राइव पर छुट्टियाँ मनाने के लिए निकल पड़ते हैं। इस न्यू प्लेस पर लोग खींचे चले आएँगे, बिलीव मी।''

रुचि आगेवाले प्रांगण में उतरी और चारोंओर देखती रही।

``जगह को क्लियर करना पड़ेगा, थोड़े घर...ट्रीज़...यू नो....तो बिगर प्लॉट मिलेगा।''

``रुचि तुम्हारा दिमाग तो ठीक काम कर रहा है ना!''

``एबसोल्यूटली मेन। तनिक सोचो, यहाँ यह पेड़ काटेंगे तो वहाँ पैसों के पेड़ उगेंगे पेड़। विवेक तुम्हारी कंपनी तो कंस्ट्रक्शन में जानेवाली है ना! लो यह तुम्हारा पहला प्रोजेक्ट। अरे, सब देख क्या रहे हो! मिलाओ हाथ!''

विवेक कुछ सोचते हुए खड़ा रह गया। वह चारोंओर देख रहा था, फाइव स्टार रिजोर्ट उसके सामने था। ए.सी. लक्जरी रुम्स, बेस्ट कूक बाय शेफ़, कार्डरूम, बच्चों के लिए विशेष खेल और मनोरंजन सुविधा...माय गोड! वोट पोसिबिलिटीज़!

रुचि,ब्रिलियंट आइडिया! क्या कहते हो दोस्तो! हम सब इस प्रोजेक्ट में एकसाथ। एक काम दोस्ती के नाम।''

भावेश गर्म हो गया।

``पर इसमें एनवायर्नमेंट या सोश्यल वर्क कहाँ आया! उल्टे यहाँ की इकोसिस्टम को गड़बड़ा देना है! आदि तुम चुप प क्यों हो?''

``देखो इसमें परमिशन, लेंड डील आदि हजार सरकारी लफड़े होंगे। तुम शांति रखो भावेश। कुछ होनेवाला नहीं है।''

``तुम भूल रहे हो मित्र। होगा सब होगा। तुम लोग रिजोर्ट का फर्स्टक्लास नाम खोजने लगो। भावेश तुम्हारी क्लर्की की नौकरी खतम करने के दिन अब आ गए हैं।''

``मतलब!''

``मतलब! बुद्धू, तुम इस रिजोर्ट के मेनेजर। बढ़िया फ्लैट,गाड़ी...तुम जो मांगो वह यार।''

``आदित्य सीढ़ियाँ उतर गया।

``विवेक और रुचि दिनदहाड़े सपने देखना बंद करो। चलो अब घर की राह लेते हैं।''

``भूल करते हो, आदित्य एक छोटे से विचार से बड़े बड़े बिज़नेस पैदा हुए हैं। उनकी सक्सेस स्टोरीज़ में हमारी भी एक स्टोरी।''

``तुम्हें क्या सच में ऐसा लगता है! देखो मैंने या भावेश ने कभी बिज़नेस किया नहीं है,
इसलिए...''

``अरे, पर इसमें समाजसेवा कहाँ से आयी?''

``जो कमाएँगे उसमें से दो-तीन नामी संस्थाओं को डोनेशन दे देंगे....यह मंदिर ही कमाई करा देगा यार। जैसे खजुराहो फेस्टिवल में होते हैं वैसे जन्माष्टमी का मेला, कल्चरल प्रोग्राम! मेरी पी.आर. टीम अपना काम शुरू कर देगी ना!''

रुचि ने भावेश के कन्धे पर हाथ रखा।

``देखो भावेश, पैसा होगा तभी तो सेवा होगी ना! यहाँ शोप्स के कोंट्रेक्ट्स दे देंगे, भाई इस गाँव का भी उद्धार हो जाएगा। तुम जरा समझा करो। सारा प्रोजेक्ट प्रोफेशनल्स के पास प्लान कराकर श्रीगणेश करेंगे ताज लेंड एंड लेंड में...येस व्हाय नोट! `विज्ञनरिज ऑफ टुमोरो' एक लेविष प्रेस कोन्फ़रंस...।''

विवेक ने झुककर मंदिर को प्रणाम किया।

``आशीर्वाद दीजिये प्रभु।''

सब कार की ओर बढ़ने लगे। रुचि घुमकर यकायक रुक गई।

``एक मिनट, अनधर ब्रिलियंट आइडिया।''

आदित्य हँस दिया।

``तुम्हारा दिमाग तो बहुत तेज़ है ना क्या! जल्दी बोल, अब सच्ची में देर हो रही है।''

``आदि हमारा रिजोर्ट दो-एक वर्ष में तो तैयार हो जाएगा। होगा ही नो डाउट। तो तुम्हारे दादाजी के हाथों ओपनिंग सेरेमनी कराएँ तो! रिजोर्ट को क्रेडिबिलिटी मिल जाएगी। अर्थात् दादाजी का सन्मान करेंगे।''

आदित्य चौंककर रुचि को देखता रहा,फिर लंबे कदम लेते हुए कार में बैठ गया। भावेश चूपचाप सबसे पीछे। विवेक ने रुचि को चुप्पी साधे रहने का इशारा किया। कार मुंबई की दिशा में दौड़ने लगी। भावेश ने मोबाइल से मंदिर और सबके साथ खींचे गए फोटो डिलीट कर दिये और सीट पर माथा रखे आँखें बंद कर ली।

संपर्क:
लेखिका: गुलबहार A-2,B/H मेट्रो इनोक्स थिएटर, बराक रोड, मुंबई 400020. Mobile:9833076673.
E.mail.Id: varshaadalja@gmail.com
अनुवादक: 2,`शीलप्रिय',विमलनगर सोसायटी, नवाबजार, करजण. जिला. वडोदरा.
पिनकोड:391240.गुजरात. मोबाइल: 9924567512.
E.mail.i'd: navkar1947@gmail.com

लघुकथा
पंच प्रस्थान

दीपक कुमार

रामलाल लोहार की बेटी एक निषाद जाति के लड़के के साथ भाग गयी। गांव में हंगामा हुआ, मारने-काटने की बात हुई, और धीरे-धीरे मामला शांत भी हो गया।
स्थिति सामान्य होते ही प्रेमी जोड़ा गांव आ गया। अब रामलाल की लड़की अपने निषाद प्रेमी अर्थात पति के साथ गांव में ही रहने लगी।
गांव में कांड और गांव में आकर रहना छाती पर मूंग दलने से कम न था।

एक दिन कुछ इज्जतदार लोगों ने पंचायत बुलायी। पंचों ने रामलाल को ऐसे कोसा कि वह इज्जत के लिए मरने या मारने को विकल हो उठा। घर के अंदर गया। एक हाथ में गड़ांस और एक हाथ में कागज का एक टुकड़ा लेकर बाहर आया। पंचों से बोला- मैं अभी जाके अपनी बेटी और उस मल्लाह के लड़के को इस गड़ांस से काट देता हूँ लेकिन आप सभी इज्जतदार लोगों से विनती है कि इस कागज पर लिखकर दीजिए कि मेरे जेल जाने के बाद मेरे परिवार का भरण-पोषण आपलोग करेंगे।
सभा खामोश थी।

धीरे-धीरे पंच लोग बिना कुछ कहे प्रस्थान करने लगे।

लघुकथा

डॉ. मीना बैस रघुवंशी
ई-7/20, चित्रगुप्त सोसाइटी
अरेरा कालोनी (म.प्र.) 462016

संकल्प

मैं और मेरी सहेली अलका न्यू मार्केट शॉपिंग के लिए गए थे। अलका को अपनी बहन की शादी में पहनने के लिये डिजाइनर ड्रेस खरीदनी थी इसलिए हम लोग एक लेडीज गारमेंट्स की दुकान में गए।

अलका ने अपने लिए जो ड्रेस पसंद की वह एक डमी ने पहनी थी। हमारे सामने यह समस्या थी कि दुकानदार के पास वह उस पैटर्न की वह एक मात्र ड्रेस थी जो उस डमी ने पहन रखी थी। दुकान के नौकर ने डमी के शरीर से वह ड्रेस उतार कर दे दी। ड्रेस के उतरते उस वस्त्रहीन डमी को देखकर हम दोनों की आँखे शर्म से झुक गईं ऐसा लगा जैसे किसी स्त्री को सरेआम नंगा कर दिया गया है। दुकानदार को जल्दी-जल्दी ड्रेस का पेमेंट कर हम दुकान से निकल कर एक रेस्टारेंट में चाय पीने चले गये। अलका और मैं दोनों काफी देर तक खामोश बैठे रहे क्योंकि उस घटना के कारण हमारा मन विचलित हो गया था। अचानक अलका बोली - "मुझे डमी के शरीर से ड्रेस उतरवाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगा।" मैने भी अल्का की बात का समर्थन किया। हम दोनों ने संकल्प लिया कि भविष्य में कभी ऐसी ड्रेस नहीं खरीदेंगे जो सिर्फ डमी ने पहनी हो।

मृत्यु पूर्व बयान

पिछले महीने मैं भोपाल की सेंट्रल जेल में प्रोजेक्ट के सिलसिले में गई थी। जेल में मेरी मुलाकात एक महिला कैदी कमला से हुई। कमला अपने पति की हत्या के जुर्म में आजीवन कारावास की सजा काट रही थी।

मैंने देखा कमला बहुत गंभीर प्रवृत्ति की थी। उसे देखकर यह लगता नहीं था कि वह किसी की हत्या कर सकती थी। एक दिन मैंने कमला से पूछा-"कमला तुमने अपने पति की हत्या क्यों की ?" कमला ने गहरी साँस लेकर कहा-"मैंने किसी की हत्या नहीं की। मेरे पति एक सरकारी कार्यालय में सफाईकर्मी थे। शादी के आठ साल बाद मेरे पति को एक नाबालिग लड़की से प्रेम हो गया। वह उस लड़की से शादी करना चाहते थे। वे सरकारी कर्मचारी थे अगर उस लड़की से शादी कर लेते तो उनको नौकरी से निकाल दिया जाता व नाबालिग पड़की से शादी करने पर जेल भी जाना पड़ता।" मैंने अपने पति की दूसरी शादी का विरोध किया तो मेरे पति भड़क गए उन्होंने कहा-"अगर मुझे उस लड़की से शादी नहीं करने दी तो मैं आत्महत्या करूँगा व तुम पर हत्या का आरोप लगाऊंगा। ऐसा कहकर मेरे पति ने अपने ऊपर मिट्टी का तेल छिड़क लिया व अपने आप को आग लगा ली। मैंने तुरंत एम्बुलेंस बुलवाकर अपने पति को जिला हॉस्पिटल में भर्ती करवाया लेकिन वह 90 प्रतिशत जल गए थे। उन्होने मृत्युपूर्व बयान में कहा कि मैने उन्हें जलाकर मारने की कोशिश की है। उनके मृत्यु पूर्व बयान को सत्य मानकर मुझे उनकी हत्या का दोषी मानकर आजीवन कारावास की सजा हुई। मैं पिछले नौ साल से आजीवन कारावास की सजा काट रही हूँ और मेरा बेटा अनाथ आश्रम में पल रहा है।"

अपनी व्यथा सुनाकर कमला काम में लग गई और मैं यह सोचने पर विवश हो गई कि अदालत में मृत व्यक्ति के मृत्यु पूर्व अंतिम बयान को ही सच माना जाता है क्योंकि ये मान्यता है कि मृत्यु पूर्व व्यक्ति झूठ नहीं बोलता। कमला के पति ने बदले या प्रतिशोध की भावना से ग्रस्त होकर मृत्यु पूर्व गलत बयान दे दिया इसे कमला का दुर्भाग्य ही कहेंगे जिसके कारण निर्दोष कमला को सजा हो गई।

शोभा गोयल
265/24 सेक्टर 26
प्रताप नगर सांगानेर
जयपुर-302033

लड़की भाग गयी

सुबह के पांच बज रहें थे। एक पैतालीस वर्ष की युवती सवेरे जल्दी उठकर भैसों को नहला धुलाकर दूध निकाल रही थी और कोई बेसुरी आवाज़ में भजन गुनगुना रही थी। दूध दुहकर वह चौके में गयी। चूल्हा सुलगाकर दूध का भगोना चढ़ा दिया। सहसा उसे ध्यान आया अब तो छ: बजने को आये; आज मेरी लाडली जागी नही! यदि आज बेटी को जल्दी जगने की आदत नही लगी तो कल ससुराल में मेरे नाम के ताने पड़ेंगे। वैसे भी बीस दिन बाद आखा तीज को उसका मंड़प है। सभ्य घर की औरतों को मुंह अंधेरे उठ जाना चाहिए। देर सवेर उठने वाली महिला को अच्छा नही माना जाता। मन ही मन विचार कर चूल्हे की आंच मंदी कर वह सपना को जगाने बाहर बैठक में आ गयी। सपना मुंह तक चादर ओढ़े बेफिक्र सो रही थी। माँ का पारा चढ़ गया।

वो दरवाजे से ही चिल्लाई-सपना ओ सपना उठ, सूरज सर चढ़ आया। धुप निकलने तक सोना अच्छी बात नही। चारपाई पर कोई हरकत नही हुई। यह देख माँ का गुस्सा सातवे आसमान पर पहुंच गया। वह खाट को हिलाते हुए गुस्से में बोली-"कब तक सोएगी नासपीटी, उठ जा, पराये घर जाना है, कुछ तो अच्छी चीज़े सीख ले।"

लगातार बडबडाते हुए उसके हाथ चलने लगे। उसने गुस्से में चादर खींच दी। सपना वहां नही थी, उसकी जगह पर तकिये लेट कर आराम फरमा रहे थे। हे भगवान, ये लडकी कहाँ गयी? उसने घर के हर कोने में देखा, छत का चक्कर भी लगा आई। पखाने में देख लिया। सपना घर में होती तो मिलती। वह आजाद परिंदे की तरह वहां से उड़ गयी। माँ का धैर्य जवाब दे गया। सिर पकड़ कर चीख पड़ी। “सपना के बापू सपना घर से भाग गयी। मुंह काला कर गयी, कलंक लगा गयी। हे भगवान! मै किस कुँए में जाकर गिरुं।” वह अपना सिर दायें हाथ से पीटने लगी। जब थक गई तो पल्लू से आंसू पोंछते हुए सुबकने लगी।

खबर आग की तरह पूरे गाँव में फैल गयी। घर के भीतर रिश्तेदार जमा हो गये और दहलीज के बाहर वो चार लोग जिन्होंने जमाने भर का ठेका लिया हुआ था। रिश्तेदार इस अनहोनी का जिम्मेदार माँ को ठहरा रहे थे-”कैसी माँ हो? एक लड़की सम्भाली नही गयी। कैसे संस्कार डाले है कि घर से ही भाग गयी अपने आशिक के साथ। अब चिड़िया चुग गयी खेत तो पछताने से क्या होगा। जब लगाम लगाने का समय था; तब ध्यान दिया नही।”

सपना के भाई भी बोले-”एक बार सपना कहीं मिल जायें तो हाथ-पैर तोडकर जमीं में गाढ़ देंगे। ऐसा सबक सिखायेगे की वो बरसों याद रखेगी।”

पिता ने झुके हुए सिर से हकलाते हुए बोला-”अब समधी को किस मुंह से कहूँगा कि अब बारात न लाना। बेटी ने कहीं मुंह दिखाने लायक नही छोड़ा। मेरी तो इज्ज़त की धज्जियां उड़ गयी।”

दरवाजे के बाहर खड़े लोग हाथ नाचते हुए फुसफुसाने लगे। ये तो होना ही था। हमने तो पहले ही इन लोगो को समझाया था। लडके-लडकी साथ पढ़ते है। लड़कियां लडकों से पढाई के बहाने नैन मटक्का करती है और बाद में ये रंग दिखाती है। तौबा-तौबा, अब इस घर से रोटी-पानी का व्यवहार ख़त्म। एक ने कान में कहा-”मैंने तो पहले ही उसके लक्षण देख लिए थे। जब एक लडके से कॉपी देने लेने के बहाने हँस-हँस कर दोहरी हुई जाती थी।” जितनी मुंह उतनी बातें। सब नमक-मिर्च लगाकर बात का बतंगड़ बना रहे थे।

सुबह के दस बज गये। धीरे-धीरे वे चार लोग अपने कामों पर निकल गये। रिश्तेदार भी कुछ सहानभूति दिखा कर लौट गये। सबके अपने काम थे, कब तक रुके रहते। यह कोई पहली या आखिरी घटना नहीं थी। दो चार बात करके लोग अपनी रूटीन दिनचर्या में व्यस्त हो जाते। देहरी पर बैठे पिता सिर पकड़कर हिसाब-किताब करने लगे कि शादी में लगने वाला कितना खर्च बच गया। भाइयों ने कहा "माँ भूख लगी है कुछ खाने को बना दो।" लुटी-पिटी माँ ने अपने पल्लू से आंसू पौछे और चौके में चली गयी। दूध गाढ़ा होकर मावा बन गया। दिन चढने के साथ ही जिंदगी ने रफ्तार पकड़ ली।

दूसरी तरफ सपना जिला कलेक्टर के सामने गुहार लगा रही थी-"सर, हमे ब्याह नही करना, हमें पढ़ लिख कर अपना सपना पूरा करना हैं। अपने पैरों पर खड़ा होना है...।”

सतीश कुमार नारनौंद
जिला हिसार हरियाणा

वह आखिरी रात

अपने जीवन में शुरू से ही वंतिका एक होनहार व संघर्षशील महिला रही है। गेहुंआ रंग,मध्यम कद (साढे पांच फुट) गठीला बदन तेज-ललाट हमेशा सजग व फुर्तीली दिखने वाली यह स्वाभिमानी औरत जीवन के 48 बसंत पार कर चुकी है।

पेशे से अध्यापिका,वंतिका अपने कार्य के प्रति सदैव समर्पित रही है। समय की पाबंद,ईमानदार सभी के साथ तन्मयता रखने वाली मां सरस्वती की यह साधिका किसी भी काम को कल पर नहीं छोड़ती थी।

जब वंतिका ने राजकीय सेवा में अपनी नौकरी शुरू की तो उनकी योग्यता केवल एक प्राथमिक शिक्षिका की थी ।व्यक्तिगत रूप से उन्होंने हरियाणा के कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से स्यमपाठी के तौर पर चार-चार विषयों में स्नातकोत्तर डिग्रियां प्राप्त कर तीन-तीन विषयों में UGC-NET,B.ed, M.ed की परीक्षाएं उत्तीर्ण की। पुरुषार्थ की पर्याय वंतिका अनवरत पदोन्नति करते हुए विद्यालय स्तर पर प्राध्यापिका के पद पर नियुक्त है।

आज हमारे राष्ट्र चंको स्वतंत्र हुए लगभग 80 वर्ष हो चुके हैं परंतु आज भी भारत में जाति-प्रथा का पूर्वाग्रह से ग्रसित दैत्य अपना वर्चस्व कायम किए हुए है।

वंतिका दलित समाज से संबंध रखने वाली एक सर्वगुण सम्पन्न महिला है। अपनी अनवरत 25 वर्षीय सेवाओं में वंतिका ने जाति प्रथा को कभी महत्व नहीं दिया व सभी को स्वतंत्र भारत का नागरिक माना व सही को सही तथा गलत को गलत कहा। सभी वंतिका के इस गुण से परिचित थे। कोरोना काल के समय वंतिका के विद्यालय की प्राचार्या का स्थानांतरण होने पर वरिष्ठता के कारण विद्यालय का सारा कार्यभार वंतिका के कंधों पर आ गया।

समाज के सभी वर्गों में सभी व्यक्ति एक समान नहीं होते। कुछ पूर्वाग्रह से ग्रस्त समकक्ष रुचियों और योग्यताओं वाले व्यक्ति अपना एक समूह बना लेते हैं। ऐसा समूह अपनी अयोग्यता और कमियों को छिपाने के लिए प्रशासनिक अधिकारी का सहयोग न कर उसके कार्यों में बाधा उत्पन्न करता है।

यह एक सार्वजनिक सच्चाई है कि जब कोई पिछड़ा या दलित वर्ग का प्रशासनिक अधिकारी अपने पुरुषार्थ से पुराने ढांचे को बदलकर समाज में मानवता के विकसित आदर्शों से गुणवत्ता युक्त परिवर्तन लाना चाहता है तो लोग उसका विरोध कर देते हैं।इसका उदहारण स्वयं वंतिका थी।क्योंकि इस कार्य के लिए सारे स्टाफ का संयमित, पुरुषार्थी,समय का पाबंद तथा अपनों संस्था या विद्यालय के प्रति समर्पित होना आवश्यक है।

वंतिका ने विद्यालय की प्राचार्या के पद को संभाल लिया है।

प्रातः कालीन प्रार्थना सभा में विद्यालय की प्रगति उत्थान और विकास के लिए प्रत्येक पहलू को छूकर उसने (सुखसहायक से लेकर सभी अध्यापकों)सभी को सचेत नियमित और संयमित अनवरत कर्म के सिद्धांत की याद दिला दी। कुछ अयोग्य,अकर्मण्य और अनियमित कर्मचारियों को यह रास नहीं आया। उन्होंने वंतिका की इस नीति का विरोध करते हुए एक सम रुचियों वाले डंसाथियों का समूह तैयार किया। इन्होंने वंतिका की झूठी शिकायत तैयार की। इस शिकायत पर कर्मचारियों को अपनी जाति का वास्ता देकर, कुछ कर्मचारियों को बिना विषय बताएं उनके हस्ताक्षर करवाकर,एक दलित महिला के प्रति चक्रव्यूह रचकर उच्च अधिकारियों को शिकायत दे दी। उच्च अधिकारी भी वंतिका की कर्तव्यनिष्ठा के प्रति सब जानते हुए मूक हो गए । वंतिका के बार-बार आग्रह करने पर उन्होंने एक बार भी दोनों पक्षों को सुनने हेतु नहीं बुलाया। बल्कि इसके लिए उच्च अधिकारी महोदय ने जांच बैठा दी। क्योंकि उच्च अधिकारी महोदय का एक नाती इसी विद्यालय में लिपिक के पद पर कार्यरत था,जो वंतिका के खिलाफ था। कहते हैं "सांच को आंच नहीं" इसी युक्ति को चरितार्थ करते हुए कुछ अध्यापकों ने लिखित में वंतिका को यह प्रमाण दिया कि हमारे से बगैर पढ़ें इस शिकायती-पत्र पर लिपिक व अन्य अध्यापकों ने हस्ताक्षर करवाए हैं।

पर अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

वंतिका के कार्य कौशल,कर्तव्य निष्ठा तथा समर्पण से परिचित उच्च अधिकारी द्वारा निर्मित कमेटी कल विद्यालय में जांच करने के लिए आने वाली है।

आज की रात वंतिका सो नहीं पायी उसके जहन में अनेक प्रश्न उठ रहे थे। वह स्वयं से बातें करती हुई कह रही थी कि भारतीय समाज में आज भी जाति-प्रथा के दानव के गहन अंधकार को,स्वतंत्रता के दिनकर की रश्मियों का तेज आलोक पूर्णतया मिटा नहीं पाया जो पूर्णिमा के चंद्रमा में एक बड़े धब्बे के समान बिल्कुल साफ प्रतीत हो रहा है। आज वंतिका के भावात्मक प्रश्नों को रात के सन्नाटे में केवल भावों के झिंगुर ही सुन रहे थे।

मनोज जैन
संपादक वागर्थ
(सोशल मीडिया का चर्चित समूह)
भोपाल मध्यप्रदेश
manojjainmadhur25@gmail.com

गीत

सुख के दिन

सुख के दिन छोटे-छोटे से,
दुख के बड़े-बड़े।

सबके अपने-अपने सुख हैं,
अपने-अपने दुखड़े।
फीकी हँसी, हँसा करते हैं,
सुन्दर-सुन्दर मुखड़े।

रंक बना देते राजा को,
दुर्दिन खड़े-खड़े।
सुख के दिन छोटे-छोटे से,
दुख के बड़े-बड़े।

सबकी नियति अलग होती है,
दिशा, दशा सब मन की।
कोई यहाँ कुबेर किसी को,
चिन्ता है बस धन की।

समझा केवल वही वक़्त की,
जिस पर मार पड़े।
सुख के दिन छोटे-छोटे से,
दुख के बड़े-बड़े।

हाँ, यह तय है चक्र समय का,
है परिवर्तनकारी।
सबने भोगा सुख-दुख अपना,
चाहे हो अवतारी।

अंत नही होता कष्टों का,
जी हाँ बिना लड़े।
सुख के दिन छोटे-छोटे से,
दुख के बड़े-बड़े।

एक अघोषित युद्ध

अंतर्मन में चले निरन्तर,
एक अघोषित युद्ध।

धता बताए प्रगतिशीलता,
चुप हो जाती जड़ता।
पारे जैसा मन है अपना,
चरम बिंदु पर चढ़ता।

साम्य भाव हम रक्खें कैसे,
बन न सके हम बुद्ध।

धसे द्वंद्व में गहरे जाकर,
क्या योगी क्या भोगी।
अपना चिंतन छोड़ पराया,
लगता है उपयोगी।

प्रश्न खड़ा है परिणामों को,
कैसे रखें विशुद्ध?

कौन सगा है कौन पराया,
क्या रिश्ते क्या नाते?
समय सरकता पल-पल क्षण-
क्षण,हँसते,रोते,गाते।

चिंतन उठता ऊपर-नीचे,
पथ करता अवरुद्ध।

जीवन चलता अपनी लय में,
अपने रंग बदलता।
पूर्व दिशा से सूरज निकले,
पश्चिम में जा ढलता।

भावदशा आनन्दमयी हो!
कब हो जाए क्रुद्ध?

व्यग्र पाण्डे,

गंगापुर सिटी
(राजस्थान)

पौधे की व्यथा

मैं खुश था अपनों के बीच
माली बाबा समय समय पर
हमको रहे थे सींच
एक दिन अचानक
कुछ लोग आये
और ले गये मुझे
उस सुनसान जगह पर
जहाँ पहले से ही थे
कुछ प्रकृति प्रेमी मौजूद
गड्ढा खुदा हुआ था
मुझे रख दिया उसके पास
जैसे शमशान में
कंधों से उतार कर
अर्थी रख दी जाती
जमीन पर एक तरफ
तब ही एक गाड़ी आकर रुकी
उसमें से निकले
एक खादी वेशधारी
उपस्थित जनता
उन पर थी बलिहारी
मुझे प्यार से रोपा गया
कोई मिट्टी दबा रहा था
कोई पानी पिला रहा था
सब प्रसन्न थे
खुशी के रथ पर आसन्न थे

फोटुओं का क्रम चला
दिखावटी मुस्कराहट का भ्रम पला
अगले दिन अखबार में
सुंदर सी खबर आई होगी
लोगों ने उसे सराही होगी
दुर्भाग्य मैं अब मृत्यु की तरफ
धीरे धीरे बढ़ रहा हूँ
अपनी क़िस्मत पर कुड़ रहा हूँ
कोई नहीं आता मुझे संभालने को
अभागे को पानी पिलाने को
अपनी सद् दृष्टि डालने को
कुछ दिन बाद मैं शहीद हो जाऊंगा
अगली साल फिर इस अभियान में
रूप बदलकर आऊंगा...

चक्रधर शुक्ल

एल आई जी-1 सिंगल स्टोरी
बर्रा-6 कानपुर-208027 उ प्र

क्षणिकाएँ

मुखौटे
मुखौटे
काम निकल जाने के बाद
नाम तक नहीं लेते,
'पर'
कतर देते !

दर्पण में
पुरस्कार पाकर
उसके चेहरे का
रंग उड़ा,
दर्पण में
उसे,ऐसा क्या दिखा?

ग्राफ बढ़ा
आदमी
नक चढ़ा,
गाली-गलौज का
ग्राफ बढ़ा!

धमकाना
बेटा
बाप को
वसीयत बेचने के पहले
धमकाता है,
पराधीन बाप
मंदिर पर बैठकर
बेवसी पर
आँसू बहाता है!

नवतपा
सूरज
जाने क्यों खफा,
लू का प्रकोप
चल रहे
नवतपा!

लू का चलना
ताल गया
झील गयी,
सूरज का आक्रोश
जिन्दगी
लील गयी!

बेशर्मी ओढ़े
माँगने वाले
बेशर्मी ओढ़े,
सम्बन्ध
सभी से जोड़े!

पानी का दोहन
पानी का दोहन
संकट गहराता,
जल का स्तर
तेजी से गिर रहा
समर्सिबल
धोखा दे जाता!

पारा हाई
सूरज का ताप
इतना बढ़ा,
अच्छे-अच्छों ने
मुँह ढका!

डोरे डालना
वह
मित्रता का
धर्म कैसे निभाता है?
चुपके-चपके
डोरे डालता है!

पानी का दुरुपयोग

पशु-पंछी
प्यासे बेहाल,
कार धो रहे हैं
शहजादे कमाल!

प्रभाव
अवस्था ने
प्रभाव डाला,
बुढ़ापे में
माँ के हाथों में
माला!

बलविन्दर बालम

ओंकार नगर गुरदासपुर (पंजाब

ग़ज़ल

ग़ज़ल बालम की हो फिर शाम हो फिर कौन नहीं पीता।
छलकता जाम तेरा नाम हो फिर कौन नहीं पीता।
पहाड़ी टीन की छत्तों पे रिमझिम, चमन की खुशबू,
सुहानी रूत्त का पैग़ाम हो फिर कौन नहीं पीता।
शरारत से भरे वो दिन जवानी की सभी यादें,
पुराने यार हों फिर जाम हो फिर कौन नहीं पीता
नई प्रभात की आमद तेरी यादों के आंगन में,
कली के खिलने का अंज़ाम हो फिर कौन नहीं पीता।
मेरे आगे सिकंदर क्या मैं सारे जग का बिजयी हूं,
तेरी आंखों में हां ईनाम हो फिर कौन नहीं पीता।
रक्त बीजों की भांति लाखों हैं सुकरात मेरे में,
तेरे लब पर मेरा इल्ज़ाम हो फिर कौन नहीं पीता।
खुशी का इक न्यौता है याराने हैं पैमाने हैं,
मैखाने में मुफ्त का दाम हो फिर कौन नहीं पीता।
भरी महफिल में उसने खुद किसी कासद को भेजा है,
गुलाबी गुल में खत बेनाम हो फिर कौन नहीं पीता।
भरी महफिल में बालम की ग़ज़ल को गा रहा कोई,
सुरीली शाम का इंतजाम हो फिर कौन नहीं पीता।

ग़ज़ल

भीड़ में भी नज़र का पैग़ाम पढ़ सकते हैं हम।
कौन इस गाथा का लेखक नाम पढ़ सकते हैं हम।
किसने इस आगाज़ को अंज़ाम तक पहुंचाया है,
हौंठ के चिन्हों से हर एक जाम पढ़ सकते हैं हम।
सृजना की एक बनावट अपना अस्तित्व बता देती,
गिर रहे आंसू से हर इल्ज़ाम पढ़ सकते हैं हम।
बीज के आगाज़ में ही धरत की खुशहाली है,
खिल रहे फूलों का क्या अंज़ाम पढ़ सकते हैं हम।
चांद तारे रहम की प्रार्थना में झुक रहे,
डूबते सूरज के तन पर शाम पढ़ सकते हैं हम।
अर्चना पूजा के अवसर और कोई नाम नहीं,
राम पढ़ सकते हैं या फिर श्याम पढ़ सकते हैं हम।
पलक गर झुक कर लपक की आस तक है पहुंचती,
नज़र के दर्पण से सिर्फ सलाम पढ़ सकते हैं हम।
ना वह ईधर का रहा और ना वह उधर का रहा,
दोग़ले बंदे का क्या है दाम पढ़ सकते हैं हम।
वह रहे दरियाओं का संगम कुदरती मिश्रण है एक,
लालसा की पूर्ति में काम पढ़ सकते हैं हम।
नमृता की आस में सजदा उजाले भालता,
चढ़ रहे सूरज में फिर प्रणाम पढ़ सकते हैं हम।
चमन मारूस्थल, सागर, चांद तारे धरती से,
बालम तेरा हर इक कलाम पढ़ सकते हैं हम।

डॉ.उमेश चन्द्र शुक्ल
उपप्राचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
महर्षि दयानंद कॉलेज
परेल,मुंबई -12

ग़ज़ल

1

हाले दिल इजहार करके देख
यूँ रौशन किरदार करके देख।।
रात-दिन खोजते हो तुम सुकून
स्नेह का दीप जगा करके देख ।।
बिखरने की बातें करते लोग
सभी के लिए दुआ करके देख।।
दुनिया को ये तरकीब बता दें
प्यार कि दरिया बहा करके देख।।
सभी गिला शिकवा मिट जाएगा
बातें सच सच बयांँ करके देख।।
रंजिशों से कब कोई बचा है
बागे गुलिस्तांँ सजा करके देख।।
जीवन का रस्ता कठिन डगर है
उमेश रिश्ता बना करके देख।।

2

किसका सच में उतर गया पानी
झूठे चेहरों पर चढ़ गया पानी ।।1
हमें बादलों ने नहीं दिया धोखा
अब मौसम का बदला गया पानी ।।2
सूना आकाश बिखर रहा जीवन,
रहबरी फितरत मचल गया पानी ।।3
महफ़ूज़ नहीं हमारी नयी पीढ़ी
गलत सोहबत में पड़ गया पानी ।।4
गंगा जमुना बेजार सरस्वती लुप्त हुईं
नदी झरने का बदल गया पानी ।।5
बद्चलन हवाओं ने डेरा डाला
मौसमी घात,बिखर गया पानी ।।6
जड़ों को सींचना,संवारना उमेश
पीढ़ियों का उछल रहा पानी ।।7

3

हाथों पे दही जमाते हैं
क्यों रिश्तों को भरमाते हैं।।
दिल से दिल की दूरी रख
झूठों से हाथ मिलाते हैं।।
चांँदी की जूती आँखों में
अदना सी जान गंँवाते है ।।
वक्त के हाथों गिरवी रख
ज़मीर का नारा लगाते हैं।।
धोखा,नफा, नशा गद्दारी
दंगा,रंजिश फरमाते है।।
धन का नशा चढ़ा सर पे
रिश्तों में सेंध लगाते हैं।।
हैरान हूंँ बागवान ही क्यों
विषबेल से बाग सजाते हैं।।
बाज़ारू रंग रंगें सभी
कागज़ पे रिश्ते बनाते हैं।।
दर्द औ सुख के बीच उमेश
भाव की दरिया बहाते हैं।।

4

गर तुम पूछ लेते हाल-चाल यूं ही
बिमारी का हो जाता इलाज यूं ही ।।1
ज़माने के निग़ाहों का मतलब नहीं
उड़ती नजरों से देख लेते यूं ही ।।2
वैद्य कहता मेरे रोग कि दवा नहीं
बस रोगी को याद कर लेते यूं ही ।।3
लट झूमते मचलते हैं कपोलों पर
चुरा नज़रें आप सिसकते है यूं ही ।।4
कदम ठिठकते बहकते रुकते उमेश
रगों में भीनी-भीनी खुशबू यूं ही।।5

शेफालिका सिन्हा

रांची, झारखंड।

क्षणिकाएँ

1

तिनके तिनके घोंसला बनाते,
लायक बन बच्चे उड़ जाते
फिर अपनी दुनिया बसाते
जन्म देने वाले कब शोक मनाते?

2

मौसम भी मुताबिक,
हर समय कहां होता है
हर मौसम में जी लें
वही जहां होता है।

3

शरीर चले या न चले
मन चलता ही रहता है
मन को जिसने थाम लिया
उसने जग को जीत लिया।

4

जरूरत से ही मांग होती है
परिभाषाएं बनती -बिगड़ती हैं
कोई अपना बन जाता है
अपना पराया हो जाता है!

विनोद वर्मा दुर्गेश,

तोशाम, जिला भिवानी, हरियाणा

दोहे

1)

फर्ज़ बड़ा है कर्ज़ से, इतना ले तू मान।
रह जाए सब कुछ धरा, तज झूठा अभिमान।।

2)

अपना-अपना फर्ज़ है, अपना-अपना काम।
सबको अपने कर्म से, मिलती है पहचान।।

3)

आन बान से है बड़ा, सब पूतों पर कर्ज़।
बलिहारी हों मात पर, इतना सबका फर्ज़।।

4)

सरहद पर सैनिक डटे, कर बाधाएं पार।
डर के आगे जीत है, सब सारों का सार।।

5).

डर का अपना दाव है, भय का अपना भाव।
पलक झपकते ही करे, मन में गहरा घाव।।

टीकम चन्दर ढोडरिया,

अधिवक्ता,
पंचायत समिति के पास छबड़ा
जिला बाराँ राजस्थान 325220

।।मेरी मधुशाला।।

अनुभव कीभट्टी में तपकर,
बनी आज मेरी हाला।
खट्टा-मीठा कड़ा-कसैला,
रस इसमें मैंने डाला।
मुस्कायेगी कभी अधर पर,
आँसू कभी बहायेगी।
मन अधीर हो जब भी प्रियवर,
आ जाना तुम मधुशाला।।

**

भावों का आसव निकला है,
तपकर अनुभव की ज्वाला।
शब्दों के प्याले में भरकर,
लाया हूँ मैं मतवाला।
समय मिले मन हो पढ़ने का,
मान इसे भी दे देना।
आप सभी को अर्पित मेरी,
छन्दों की यह मधुशाला।।

**

जीवन के उस काल-खण्ड में,
चला राह मैं मतवाला।
नीरव वन था पथ था दुर्गम,
प्रखर भानु की थी ज्वाला।
थकित देह थी मन भी व्याकुल,
थी मंजिल भीदूर बहुत।
तुम ही तो आयी थी बनकर,
प्रियतम मेरी मधुशाला।।

**

घिर-घिर आयी मधुर यामिनी,
धरे रूप वह मधुबाला।
उडुगण की चूनर को ओढ़े,
लिये हाथ में विधु-प्याला।
छलकी धवला अमिय कौमुदी,
वसुंधरा के आँचल पर।
झूम उठे लतिका तरूवर सब,
सजी सुभग नव मधुशाला।।

**

बचपन से पीता आया हूँ,
पीड़ाओं की मैं हाला।
और पिला दे और पिला दे,
घबरा मत साकी बाला।
सुख की चाह नहीं मुझको अब,
नहीं स्नेह का अभिलाषी।
आह कराह अश्रु से सिंचित,
मेरी जीवन मधुशाला।।

**

दिनकर डूबा संध्या उतरी,
लेक रकर में मधुप्याला।
झील किनारे लगी विचरने,
सिन्दूरी वह सुरबाला।
रसिक रिन्द की बातें छोड़ो,
कभी नहीं पीने वालों।
यदा-कदा ही पीकर देखो,
आकर तुम भी मधुशाला।।

**

जाति-धर्म से ऊपर उठकर,
चले राह जो मतवाला।
दीपज्ञान का जला चुकी हो,
जिसके विवेक की ज्वाला।
श्रम-सीकर से शोभित तनले,
आये कोई रिन्द यहाँ।
आगे बढ़ करती है स्वागत,
उसका मेरी मधुशाला।।

**

धीरे-धीरे छम-छम करती,
आयी थी तुम सुर-बाला।
दृग-मूंदे कंपित अंधेरों से,
मुझे पिलाने मधु-प्याला।
दिवस मास वर्षों बीते पर,
प्रीति अहा! कब मन्द हुयी।
बनी रहो चिर-नूतन प्रियतम,
चिर-नूतन हो मधुशाला।।

**

नदिया बहती निर्मल पावन,
वन सुभग सघन हरियाला।
भ्रमर हठीले चुन-चुन कलियाँ,
पीते मकरन्दी हाला।
शीत-पवन करता आह्लादित,
हर्षित था जीवन सारा।
उमंग भरी रसवन्ती प्रिये,
कहाँ गयी वह मधुशाला।।

**

नेह-भाव से जिनको भर-भर,
रहा पिलाता मैं हाला।
पात्र नहीं थे उसके वे सब,
समझा अब भोला-भाला।
मैंने अपना कर्म किया बस,
उनकी तो वे ही जानें।
सबको गले लगाती आयी,
मेरी जीवन मधुशाला।।

**

जाति-धर्म का भेद न होगा,
हो को ईपीने वाला।
श्रम अनुसार भरेगी साकी,
सबके हाथों का प्याला।
मार्ग सभी होंगे निष्कंटक,
अवसर सब ही पायेंगे।
वर्ग- हीन संरचना वाली,
होगी मेरी मधुशाला।।

**

बालक भूखे तड़प रहे हैं,
खाने को नहीं निवाला।
फटी कमीजें टूटी चप्पल,
बनता फिरता मतवाला।
जर्जर काया रोग-ग्रस्त है,
काम नहीं कुछ कर पाता।
लकड़ी टेके फिर भी क्यों तू,
आ जाता है मधुशाला।।

**

कम्पित अधेरों से जब प्रिय ने,
अधरों पर चुम्बन डाला।
नहीं होश आया पीकर फिर,
प्रथम मिलन की वह हाला।
उसकी ही चाहों में खोया,
उलझा उसकी बाँहों में,
वो ही है रसवन्ती साकी,
वो ही मेरी मधुशाला।।

**

न्यायालय में आये कोई,
कभी साक्ष्य देने वाला।
साकी की सौगंध खिलाना,
और पिलाना तुम हाला।
चेतन होगी मानवता।
जागृत होगा पौरुष उसमें,
चेतन होगी मानवता।
झूठ बुलाये ग्रन्थ भले सब,
सत्य बुलाती मधुशाला।।

**

याचक बनकर ही जाता है,
देवालय जाने वाला।
हाथ जोड़ता शीश झुकाता,
हो कैसा भी बलवाला।
सीना ताने जाते हैं सब,
सभी लुटाकर आते हैं।
स्वाभिमान की रक्षा करती,
एक यही तो मधुशाला।।

**

अखिल सृष्टि इक मदिरालय हो,
और जलधि का हो प्याला।
ताप हरे तीनों पल-भरमें,
हो ऐसी उसमें हाला।
त्रिविध-हवा करती हो स्वागत,
साकी बन अमराई में,
निर्मल मन हो जिसका पीने,
आये वो ही मधुशाला।।

**

संस्कारों में पला बढ़ा हूँ,
व्यसन नहीं कोई पाला।
चखने की तो बात दूर की,
छुई नहीं अब तक हाला।
पूर्वजन्म का शायद मद्यप,
नशा उसी का हो बाकी।
उसी खुमारी में रच डाली,
मैंने भी यह मधुशाला।।

**

अक्षर-अक्षर जोड़ बनाया,
मैंने शब्दों का प्याला।
और उँडेली अपने करसे,
उसमें भावों की हाला।
जितनी बार पिओगे इसको,
नशा नया देगी तुमको।
मन चाहे जब पीने आना,
तुम छन्दों की मधुशाला।।

**

कनक किशोर
राँची(झारखंड)

गाँव के जीवन के हर कोने में झांकता कवि

लक्ष्मी कांत मुकुल गाँव के आदमी है,गाँव में रहते हैं और गाँव को पढ़ते - लिखते हैं। मूलतः किसान कवि हैं। मुकुल की सद्यः प्रकाशित कविता संग्रह है ' घिस रहा है धान का कटोरा '। मुकुल का धान का कटोरा है पुराना शाहाबाद जिला का पूर्ण क्षेत्र और कवि मुकुल उसी धान के कटोरा में पले बढ़े हैं।कल और आज में आये परिवर्तन पर कवि की पैनी निगाह है।जो उसने देखा है,भोगा है,उसी अनुभूतियों को विचार की चासनी में डूबों कविता का रूप दिया है। मुकुल की कविताएं कल्पना के आकाश में उड़ना पसंद नहीं करतीं,वह तो खेत में,बधार में,,गाँवो के ऊबड़-खाबड़ जमीन और गली में, गिरते - भहराते मकान में, रिसते रिश्तों में, व्यवस्था के सड़ांध में, किसान - मजदूर के थकान में अपने लिए कुछ खोजती नजर आती हैं जिसे शब्दों में पिरो कविता का रूप दे सकें। माटी के सपाट कवि मुकुल की कविताएं भी सपाट होती हैं। बिना लाग लपेट के कविता लिखना जानते हैं मुकुल।आप पायेंगे ये मैं नहीं कह रहा, उनकी कविताएं कह रही है ये बातें जब आप कविताओं से गुजरेंगे। मैं नहीं जानता कि मुकुल इतिहास के विद्यार्थी रहे हैं आ नहीं पर इनकी निगाहें इतिहास पर टिकी होती हैं और कविताएं इतिहास समेटे रहती हैं।हम यहाँ इस संकलन की कुछ कविताओं पर बात करेंगे।यहाँ मैंने ' हम ' इसलिए लिखा है कि इन कविताओं पर बात करते हुए मेरे साथ मुकुल की कविताएं होंगी। कवि और कविता को छोड़ समीक्षा का कहाँ कोई अर्थ रह जाता है। कवि ने इस संकलन को किसान संस्कृति को बचाए रखने वाले कृषि योद्धाओं को समर्पित किया है। एक किसान कवि का कवि कर्म है किसानी संस्कृति को बचाए रखना। अतः किसान - मजदूर को पुस्तक समर्पित किया जाना कवि के कद को ऊँचा कर दिया है।इस कविता संकलन पर संक्षिप्त मंतव्य देनी हो तो इस संकलन के ही कविता का एक अंश कवि से उधार लूंगा,जो निम्नवत है -

ग्राम्य और शहरी काव्य रूपों के बीच
एक सीढ़ी था वह कवि (था वह को यहाँ है यह पढ़ें)
जिसने समझाया हिन्दी कविता में स्थानियता का बोध
निजता में विश्व दृष्टि का फलक
जैसे वीराने में खड़ा एक पेड़
देसावर से आये पंछियों को सुनाता है
अपने संघर्ष की मिथकीय कथाएं

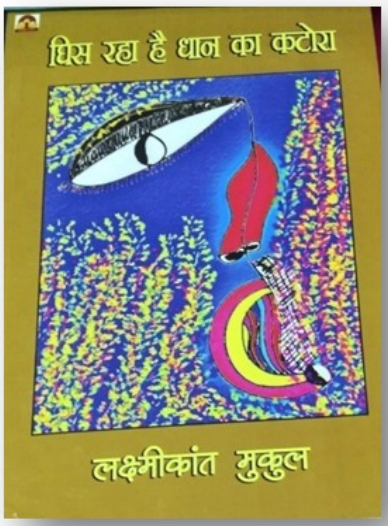

सीधा शांत दिखता
एकदम खेतिहर कवि लगा था वह
(लगा था - लगता है पढ़ें)
जिसकी कविताओं में फूटती है
धनरोपनी के अविरल गीतों की
ध्वनियाँ।

इस संकलन की पहली कविता है ' छोटी लाइन की छुक-छुक गाड़ी ', जो आरा सासाराम लाइट रेलवे पर केंद्रित है । परंतु कविता केवल कवि के स्मृति में बसे छोटी लाइन पर दौड़ती गाड़ी की बखान नहीं करती है।बखान करती है मां,मामा,ममहर के स्मृति को, तत्कालीन समाज के रिश्तों की गर्माहट को,आज के बदलते परिवेश को,बाल विवाह और दहेज उत्पीड़न को, किसान और चरवाहों इत्यादि के साथ और बहुत सारी बातों को। कवि को रेल के डिब्बे धौरी - सोकनी -मैनी दिखाई पड़ते हैं, कवि अजनबी आगंतुक के प्रेम की तुलना गुड़ के पाग और कुआं के मीठे जल से करता है, कवि कहता है कि तब धीमी रेलगाड़ी की तरह जिंदगी धीमी थी पर संबंधों के लिए लोगों के पास समय था जो आज बुलेट ट्रेन के जमाने में नहीं रहा। कवि गाँव और किसानी संस्कृति के कितने करीब है यह खुद ये कविता बोल रही है।अंलकरण के लिए भी उसे किसानी शब्द ही मिलते हैं।

तब तो कवि कहता है-
दौड़ा करती थी जैसे धौरी - मौनी - सोकनी गायें/जा रही हों घास चरने के लिए परती पराठ में।

स्मृतियों को सहेजते लोग अचानक जुड़ जाते थे/घर - परिवार - गाँव के भूले - बिसरे संबंधो के धागे में/गुड़ के पाग और कुआं के मीठे जल सा।

अनुभवों का आधार हो और विचारों के स्तंभ का सहारा दे कविता को खड़ा किया जाय तो कठिन और गूढ़ बातें बड़ी सरल भाषा में कही जा सकती है। मुकुल की कविताओं में अनुभव और विचार का सम्मिश्रण भरपूर नज़र आती है।जो कविताओं को त्रिआयामी बनाती हैं। कविताओं में लंबाई - चौड़ाई से गहराई अधिक है। पढ़ते समय गहराई में डूबने पर मोती भी हाथ आती है।कवि केदारनाथ सिंह ने कहा है कि ' अकेले मेरा दुख नहीं है। मैं सृष्टि के, समाज के दुख को देखता हूँ, मुझे बगल वाला दुख ज्यादा लगता है।तो मैं उसको देखता हूँ।अब दुख की कोई एक जगह नहीं है'। संवेदनशील लोगों को दुसरे का दुख सदा अपने दुख से बड़ा लगता है।इस संकलन की कविताओं में कवि मुकुल का चेहरा कुछ इसी प्रकार के एक संवेदनशील कवि का सामने आता है जो जगह - जगह पर अपनी कविताओं में किसी दूसरे के दुख को उद्धृत करते हैं चाहे वह किसान हो,चाहे पलायन या विस्थापन का मारा हो,या एक निविदा पर नियोजित शिक्षक हो,या बाजारवाद से त्रस्त गरीब और मध्य वर्गीय हो,या भ्रष्टाचार से त्रस्त आम नागरिक। पलायन एक व्यथा है जो आदमी के भीतर जा घर बनाती है और ताउम्र टीसती रहती है। पलायन चाहे दबाव में हो या स्वैच्छिक,कारण विस्थापन हो या रोजी - रोजगार का चक्कर अपनों एवं अपने परिवेश से दूर होने का दर्द भुलाये नहीं भुलता।माई, माटी एवं गाँव की यादें पीछा नहीं छोड़ती। इतिहास साक्षी है कि भोजपुरिया इलाका एवं पूर्वोत्तर प्रदेश पलायन को लंबे समय से झेल रहा है और आज भी पलायन की गति धीमी होने का नाम नहीं ले रही है। कवि अपने छत पर चढ़ता है तो आकाश के चाँद - तारे नहीं देखता। उसे दिखाई देता है बगल के टूटे घरों की खिसकती ईटें, बेचिरागी घर। पलायन के दुख पर कवि क्या कहता है हम देखें -

कुलधरा की तरह/ शाप के भय से नहीं/कुछ पेशे बस, कुछ शौक से छोड़ दिए घर - गाँव/खो गए दूर - सुदूर शहरों के कंक्रीटों के जंगल में/छूटे घर गौशाले मिलते गए मिट्टी के ढेर में।

(कुलधरा के बीच मेरा घर)

दुखों का पहाड़ लादे सिर पर/चले जाते हैं ये बिहारी/सूरत, पंजाब, दिल्ली,कहाँ - कहाँ नहीं/हड्डियां तोड़ती कड़ी मेहनत के बीच/उनके दिलों के कोने में बसा होता है उनका गाँव/ बीबी बच्चों की चहकती हँसी।

(बिहारी)

बिहार से बाहर कमाने गए/युवकों के अंतस में महकती है मिट्टी की गंध/उनके पसीने के टपकन से/खिलखिलाता है गाँव का गुलाबी चेहरा।

(बिहारी)

वह एक तोतारटंत स्वदेशी स्वभाव का मानुष था/जो कमाता था अपने' देस 'के लिए,अपनी धरती के लिए/अपने बाल गोपालों,अपनी चहेती प्रिया के लिए/

वह चला गया धड़धड़ाते लोहे की गाड़ी से/लौह पटरियों पर छुक - छुक करती हुई/बढ़ाती हुई उसकी असीम सपनों के तार/गाँव जवार के संग साथियों के साथ रहने/ झुग्गी बस्ती में कपड़े के कारखाने में करने/अपने लायक कार्य।

(करोना काल की जख्में टीसती है भगेलुआ को)

इनके कविताओं के आईने में वर्तमान समाज का चेहरा स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।इन कविताओं में जीवन संघर्ष, प्रेम, बदलाव की चाह, वंचना से मुक्ति, मानवता का संदेश घुला हुआ है।देश में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक स्तर पर हो रहे परिवर्तनों को अपनी कविता में समेटने का भरपूर कोशिश कवि ने किया है। आत्मीयता, संवेदना, मानवीय मूल्य आदि गुण आज समाज में बेमानी हो गयी हैं। इस सत्य को भी कवि ने पहचान कराने की कोशिश की है और अपने कोशिश में सफल हुए हैं।

धान पुराण

अमूमन किसी संकलन की मुख्य कविता, जिस नाम से संकलन का नामकरण हुआ हो, संकलन के प्रारंभ में होती है। परंतु इस संकलन की अंतिम कविता है ' घिस रहा है धान का कटोरा '।एक लंबी कविता है जो सत्रह भागो में विभक्त है।जो समेटे हुए है अपने में धान के उद्भव से लेकर आज वर्तमान तक की यात्रा वृत्तांत।तो कविता हुई ना धान पुराण।कवि इसमें बात करता है रोपनी - डोभनी का,दवनी - ओसवनी का, किसान - मजदूर के दर्द का, मौसम के मार का, रसायन और कीटनाशक के भरमार का, मशीनीकरण और बाजारवाद का, बिचौलियों और कारपोरेट जमात का, किसान संस्कृति के पहचान का,बीती कल और आने वाले नया बिहान का। अपने आप में यह कविता एक पूरी संकलन है।इस कविता को पढ़ कवि को भी पढ़ा जा सकता है एक खुली किताब की तरह। कबीर की भांति आँखिन देखा को कविता का रूप दिया है कवि ने अपनी शैली में। यथार्थ को परोसने के लिए बिंब, प्रतीक, अलंकरण की जरूरत नहीं होती है।हाँ लोक भाषा के शब्द यथार्थ को रसमय और रोचक बनाते हैं जिसका भरपूर उपयोग कवि ने किया है।
जिधर देखो उधर फैले हैं/धान के खेत सद्य प्रसुता की तरह/ गोभा का कोख निकलकर चौराते/कच्चे, अधपके बालियों के गुच्छे।

ये कविता के शुरू के चार लाइन हैं। कविता धान के कटोरा पर केंद्रित है। कविता की शुरुआत देखें, कवि की सोच देखें इन पंक्तियों में। अच्छी शुरुआत,आधी पूर्णाहुति को चरितार्थ करती प्रारंभ की संज्ञा दी जा सकती है इन्हें। प्रकृति समय के साथ अपने को बदलती है,अपने परिवेश में पलने - बढ़ने वालों को सुरक्षा कवच देती है।इसे चावल से धान बनने की क्रिया में देखें कवि के शब्दों में -

आखिर कुदरत ने खोज लिया/चावल को बचाने का उपाय/ सुरक्षित करने का नयाब तरीका/चावल के ऊपर लगा दी गई खोल/एक नोकदार खोईला/बच गया धान, धान का कटोरा,/कटोरे में एकत्र सुनहले धान/उत्तेजित हवा में झुलते हुए धान के बाल,/झुलाते हुए तन - मन कृषकों का ।

धान के पौधों और किसान के बीच ताल मेल कवि के शब्दों में -

धान के पौधे हिलकोरे लेते हैं खेतों में/ हिलकोरे लता है किसान के भीतर का जल/ साथ मचलने को बारिश के बूंदों के साथ।

बदलते समय के साथ कृषि के पारंपरिक औजार और तरीके के बदलाव पर कवि का विचार -

बदलता गया जमाना/ बदलते गये समय के रिवाज/खेती के औजार, बैलों की जोड़ी/हल - जुआठ, हेंगा,ढेंका,जात,ओखल - मूसल/सिमटते गये शुभ मुहूर्तों में अक्षत छीटने के रिवाज।

इतने पर नहीं रूकता है कवि। विलुप्त होती जा रही किसानी संस्कृति को देख बोल पड़ता है -

धान के भुस्से की तरह/ उड़ती गई ग्रामीण लोकधारा।

किसान त्रासदी के घरी को अकले झेलता है।कवि इस सत्य को भी अपने कविता में दर्शाया है -

करते हुए खेती/कठोर कगार की तरह दृढ़ है किसान/अकाल, महामारियों के दिन में/ भीख मांगने नहीं गये इन गाँव।

कृषि क्षेत्र में मशीनीकरण और हाई ब्रीड बीज पर कवि के शब्द -

गड़गड़ाते ट्रैक्टर दौड़ने लगे खेतों में/ चिकरने लगी धान कटनी में/हार्वेस्टिंग कंबाइन की धमक/ खत्म हो गई गले में घुंघरू बजाते/ कबरा,गोला,मैनी बरधों की जोड़ियां।

स्थानीय धान की प्रजातियां/गुम हो गई प्राकृतिक रूप से उपजने वाले/गुच्छ भरे अमागध के बीजवंश/

हाई ब्रीड बीजों की गर्दन काट/नई बाजार लूट संस्कृति के धमक में।

बढ़ती रसायन और कीटनाशक का उपयोग पर कवि के शब्द देखें -

बदलते धान की खेती में/प्रकृति ने बदल लिया अपना रूप - रंग, गुण - धर्म/रासायनिक खादों की बढ़ती उपयोगिता ने/ स्याही सोख्ता की तरह/ निचोड़ ली मिट्टी की उर्वरता/ कीटनाशक दवाओं के छिड़काव से/नष्ट होते जा रहे हैं प्रतिरोधक मित्रकीट। कवि यहाँ जैवविविधता के नष्ट होने की ओर इशारा भी कर रहा है।

कविता में एक किसान के मन में उपजे प्रेम को शब्दों में बांधने के कवि का प्रयास अद्भुत है -

ओसरे में खड़ी हुई तुम/भींग रही हो हवा के साथ/तिरछी आती बारिश बूंदों से/

खेतों से भींगा - भींगा/ लौट रहा हूँ तुम्हारे पास/मिलने की उसी ललक से/जैसे आकाश से टपकती बूंदें/बेचैन होती है छूने को/सूखी मिट्टी से उठती/धरती की भीनी गंध।

रोपा करती औरतें का अपना दर्द होता है।कवि के आँखों से नहीं छुप पाता है -

बूंदाबांदी में भींग रही है गाँव के औरतें/रोपती हुई बिचड़े पंक्ति दर पंक्ति/रोप रही हैं अपने दर्द,/वेदना, धूसरित होते सपने/गाती हुई सावन में।

कवि एक ओर रोपनी से उसके दुख को रोपवाता है तो दूसरी ओर कबरिया को बस एक आस के साथ दुख झेलने के मर्म को बयां करता है -

आँखें लाल होता/तवँकनें लगती चमड़ियां/दोनों जाँघ छिलाने लगे अब/चनकता है चनचन/ मेरी देह का रोंवा - रोंवा/ चैन नहीं मिलती सारी रात/शायद एक ही आस हो/ मेरी जिंदगी में/ धान से भर जाते हमारे भंडार।

कवि धान पुराण में मौसम के प्रतिकुल प्रभाव, कटनी का उल्लास,जल्लाद बनी सरकारी तंत्र के जाल में फंसा घिसता सुनहला धान का कटोरा के दुख, किसान मजदूरों के पलायन के दर्द का बड़ी मार्मिक और यथार्थ चित्रण किया है।

धान के कटोरा के घिसने के अनेक कारणों को बतलाते हुए कवि कहता है -

निश्छल किसानों को पूँजीग्रस्त बाजारों ने/विस्थापित होते देखते रह गये चुपचाप/सिमटते गये फसल चक्र के तरीके/ हिलता रहा धान का कटोरा/ चुपचाप,बेआवाज!

हिल - हिलकर घिस रहा है/धान का कटोरा।

अंत में कवि प्रश्न छोड़ जाता है - क्या बदलेगी कभी/ धान के कटोरे की तकदीर?

धान पुराण अपने आप में एक पूर्ण संकलन है। मात्र इस कविता को पढ़ संकलन पर विस्तृत बतकही की जा सकती है।

कविता में इतिहास

कवि का लगाव इतिहास से है जो कवि की साहित्यिक पृष्ठभूमि और इस संकलन की कविताएं बोल रही हैं। धान पुराण में धान और खेती के बेजोड़ इतिहास को कवि ने रखा है।इस संकलन की कविता सिक्के, एरिया फिफ्टी वन, अयोध्या में परदादी की धर्मशाला कहाँ है?,सेंटिनेलिस से छीन नहीं सकते मौलिकता,फिर लौटकर आएगा बुकानन,जोल्लहलूट में बचे बदरूद्दीन मियां, सैय्यद मियां की टांगी आदि में आप इतिहास को पायेंगे।पर कवि को वहाँ इतिहास के बहाने अपनी संस्कृति पर, सांप्रदायिकता पर, साहित्य पर, अपनी थाती पर, वर्तमान पर बात करते पायेंगे। उनमें आपको कवि के सुक्ष्म दृष्टि के खोज से निकली बड़ी बातें देखने को मिलेगी और सबके भीतर बैठा किसान और उसकी खेती दिखलाई पड़ेगा।

कवि के शब्दों में इन्हें देखें -

हमारे जन्म के बहुत पहले ही/ केंचुल की तरह छुट गयी मुद्रायें/चित्ती, कौड़ी,दाम,छदाम/अंगूठा, ढेंगुचा, सवैया, अढ़ैया, के पहाड़े/कोकडऊर बउकवआ,माठ,गाजा, कसार/ सरीखी देसी मिठाइयां। (सिक्के)

कभी यह डुमरांव राज की गैरमजरूआ मिल्कियत थी/जिस पर बबूल की घनी झाड़ियां फैली थी चारों ओर/ वन चइरआंठ, वन छिहुली,कुरखेत की तरह पसरा हुआ। (एरिया फिफ्टी वन)

पचासी पार कर चुके बड़का बाबूजी/ कहते हैं कि किशोरावस्था में वे गए थे वहाँ/ धर्मशाला निर्माण के बाद के भंडारे में/कहीं रामघाट जाने वाले रास्ते पर/होगी वह धर्मशाला।(अयोध्या में परदादी की धर्मशाला कहाँ है?)

कोई कोलंबस, वास्कोडिगामा, मार्कोपोलो/हमें बना नहीं पाया अपना गुलाम/न खरीद पाया हमारी मौलिकता, हमारी जैविकता।(सेंटिनेलिस से छीन नहीं सकते मौलिकता)

फिर लौटकर आएगा बुकानन/हाथी पर सवार उन राहों से/ जिस पर आये थे कभी मेगास्थनीज, ह्वेनसांग/ अलबरूनी,इब्बनबतूतआ, बर्नियर/अपरिचित लग रहे इस रहस्यमय इलाके को देखने/उसके वृत्तांत में पुनः जीवंत हो जायेगी/शाहाबाद की गाँवों की गलियां।(फिर लौटकर आएगा बुकानन)

बचाता रहा मुस्लिम परिवार को/ रखते हुए बेखरोंच/खुद लहूलुहान होता रहा वह पंडित/ पड़ोसीपन के धागे को सहजता हुआ।(जोल्लहलूट में बचे बदरूद्दीन मियां)

इतिहास साथ समाजशास्त्र का सुंदर सम्मिश्रण हैं ये कविताएं।

विविधा

कोरोना महामारी की त्रासदी को हम सबने बहुत निकट से देखा है। एक तरफ मरते परिजनों और परिचितों को देखा आदमी उस काल में वहीं दूसरी तरफ हवा और दवा के नाम लूट देखने को मिला। कवि ने करोना काल के सच को अपनी कविता ' कोरोना काल की जख्में टीसती हैं भगेलुआ को ' एवं ' कोरोना महापिचास ' में खूबसूरती से रखा है। पर्यावरण और जैवविविधता की बिगड़ती स्थिति पर कवि जगह - जगह बातें करता नजर आता है। प्रकृति पर आदमी अत्याचार करता रहा है, जो अब भी कर रहा है तो प्रकृति का प्रकोप कभी न कभी झेलना पड़ेगा इसे बहुत जोर दे कवि ने कहा है। पलटू राम के किस्से में व्यंग्य से तो कहीं दशरथ मांझी के मेहनत और कहीं लोहिया के गुणगान से मिलाता नजर आता है कवि अपनी कविताओं में। कहीं बाजारवाद कोबरा का खेल दिखलाता है लोगों को तो कहीं जिंदा जवाहरलाल ला सामने खड़ा कर देता। बहुमुखी प्रतिभा का धनी कवि प्रेमी भी है जो प्रकृति का डोर पकड़ प्रेमाकाश में अपनी प्रेम पतंग को उड़ाता दिखता है लोगों के नजरों से बचा।पर खैर, खून,खाँसी, खुशी छुपाए नहीं छुपती और पाठक के नजरों से कवि नहीं बच पाता जिसे कई जगहों पर अपनी मौन स्वीकृति दी है कवि ने एक निश्छल प्रेमी बन। कहने का अर्थ विविध रूप में कविताएं पढ़ने को मिलती हैं इस संकलन में। शहरी संस्कृति के बढ़ते पैर, समाज में बढ़ते हिंसा, अपराध, भ्रष्टाचार और व्यभिचार जैसी घटनाओं को भी टाँका है अपनी कविताओं में। कवि अपनी लेखनी से गाँव के साथ ही जिंदगी के हर कोने में झांक आया है।

मुकुल एक वैसे किसान कवि हैं जो समाज - संस्कृति से गहरे जुड़े हुए हैं।कविताओं की भाषा स्वयं बोल रही हैं कि कवि मुकुल बनावटी भाषा एवं काल्पनिक उड़ान का सहारा नहीं लेते। इनकी अधिकांश कविताओं में गाँव जीवन - समाज के बदलते सच्चाइयों को बखूबी और ईमानदारी से दर्ज किया गया है तथा किसान संस्कृति के पुराने ढहते ढाँचे पर चिंता व्यक्त की गई है।सहज,सरल,लोक भाषा का सहारा ले संश्लिष्ट यथार्थ से अपनी कविता को बुना है कवि ने।आम मानुष के बीच रहकर कवि ने रचा है अपनी कविताओं को जो पाठक के चित्त पर जादुई छाप छोड़ने में सफल है। मुझे विश्वास है कोई भी पाठक इस संकलन से गुजरकर कवि और उसकी रचना संसार से एक गहन रिश्ता कायम कर सकता है। कवि के इस संकलन से गुजरने के बाद लगता है धान के कटोरा को बचाने हेतु पहल तत्काल करने की जरूरत है और कवि के भाव लेकर कहूंगा -

धान कटोरा घिस रहा, अब तो चेत किसान।
धरती को धरती समझ, समझ न कूड़ादान।।

किताब का नाम - घिस रहा है धान का कटोरा

लेखक - लक्ष्मीकांत मुकुल

विधा - कविता

पेपर बैक का मूल्य - 299/

प्रकाशक - सृजनलोक प्रकाशन,नई दिल्ली।

पृष्ठ संख्या -; 168

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफरी
(सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग)
माफ़ी, अस्थावां, नालंदा, बिहार 803107
zeaurrahmanjafri786@gmail.com

गजल में महिला ग़ज़लकारों का दखल

अविनाश भारती ने थोड़े से समय में ही ग़ज़ल और समीक्षा के क्षेत्र में अपनी मज़बूत उपस्थिति दर्ज़ की है। उनके पास ग़ज़ल को लेकर एक आयडिया है। हमेशा कुछ नया करने की तत्परता है। उनके पास एक एक्सपेरिमेंट और एक्साइटमेंट है। उसी का प्रतिफल है कि उनके संपादन के ज़िम्मे एक और नई किताब 'दहलीज़ से आगे बिहार की महिला गज़लकार' के रूप में हमारे सामने आई है। यह कम संतोष का विषय नहीं है कि हिन्दी साहित्य में हाशिये पर रखी जानी वाली ग़ज़ल विधा अब एक-एक शख़्स एक-एक क्षेत्र और एक-एक विमर्श को लेकर हमारे सामने आ रही है। ग़ज़ल अपनी इब्तिदा से ही औरतों के करीब रही है, पर यह स्त्री सिर्फ़ शायरी की ज़ीनत बनती रही है। तब उनका बोलना मना था। बस उनके हुस्न के नखरे दिखते थे, वो उड़नलोक की परी थी, उनकी अपनी तकलीफें, दुःख, दर्द और एहसास कहीं नज़र नहीं आते थे। आज स्त्रियां खुद ग़ज़ल लिख रही हैं, और इस बहाने अपनी फिक्र, अपने तख़य्युल और अपने परवाज़ को क़रीने से रख रही हैं। यह स्त्रियां अब दबी-कुचली नहीं हैं, बल्कि समाज में एक ताक़त बनकर मज़बूती के साथ अपना असर और रोब रखती हैं।

हिन्दी में महिला ग़ज़लकारों की संख्या हमेशा से कम रही है। सिर्फ़ हिन्दी क्या उर्दू की छह सौ साल पुरानी शायरी की परंपरा में भी स्त्री ग़ज़लकारों में हमारा ध्यान सिर्फ़ परवीन शाकिर और किश्वर नाहीद जैसे कुछ लोगों पर जाता है। एक समय में महिलाओं का ग़ज़ल लिखना ख़राब समझा जाता था। कहते हैं कि उर्दू के अजीम शायर मीर तकी मीर की पुत्री का दीवान तक शायरी करने पर जला दिया गया था। इन हिन्दी-उर्दू के चंद महिला ग़ज़लकारों में भी बिहार की ज़मीन से महिला ग़ज़ल शायरत को तलाशना एक संपूर्ण शोध का विषय है, जिसे अविनाश भारती जैसे उद्यमी लोग ही पूरा कर सकते हैं। मैं जहां बिहार की माटी से जुड़े चार-पाँच महिला ग़ज़लकारों से अधिक को नहीं जानता था, वहाँ अविनाश ने साठ ग़ज़लकारों को इकट्ठा कर लिया है, जिससे उनकी खोज प्रवृत्ति और अनुसंधान का पता चलता है। ज़ाहिर है इसमें ऐसी भी शायरा शामिल हैं जिनकी ग़ज़लें उतनी परिपक्व नहीं हैं। कथ्य और शिल्प के स्तर पर भी खामियां हैं। बावजूद उसके वह ग़ज़ल लिख रही हैं और निरंतर बेहतर कहने की कोशिश कर रही हैं जो बड़ी बात है। उन्होंने इस विधा में अपने आप को अभिव्यक्त और स्थापित किया है, उन्हें एक स्पेस मिल रहा है,यह भी ख़ुद में कम महत्वपूर्ण नहीं है। वह अपनी बात को बार-बार रखती हैं जैसे इओनेस्को का पात्र बाल्ड सोप्रानो तब तक बात करते हैं जब तक बात स्पष्ट ना हो जाए। इसमें ऐसी भी रियासते बिहार की शायरा हैं , जिनकी शायरी की दुनिया में बड़ा मर्तबा है, वो शोध और विमर्श का हिस्सा हैं। आशा प्रभात से लेकर डॉ. भावना तक इसकी मिसाल हैं। इस शुमारे की शायरा शांति जैन जहाँ चाँद को ज़मीन पर लाने की बात करती हैं, तो डॉ.भावना नदी में उठने वाले तूफ़ान का रहस्य उद्घाटित करती हैं।

ग़ज़ल एक पेचीदा सिन्फ़ है जिसकी बनावट उसका शरीर और कथ्य उसकी आत्मा है। एक कमज़ोर कथ्य शिल्प की मौजूदगी के बावजूद शरीर को बेजान बना देता है। आप बिना कथ्य शिल्प को लेकर प्रभावपूर्ण शायरी नहीं कर सकते। अविनाश की इस सम्पादित किताब की ग़ज़लों से रूबरू होकर आप महसूस करेंगे कि ये शायरात अपने विचार तखैयुल और कोग्निशन को पूरी साफ़गोई के साथ रखती हैं। इन शे'रों में शेरीयत भी है और ज़ेहनियत भी। हम स्त्री होने के नाते उनकी ग़ज़लों को हाशिये पर नहीं रख सकते। इन ग़ज़लों से गुज़रते हुए आप महसूस करेंगे कि यह ग़ज़ल अपने शिल्प और कथ्य के स्तर पर कई पुरुष ग़ज़लकारों से भी बेहतर रची गई है, पर ये रश्क नहीं राग का विषय होना चाहिए।

हिन्दी ग़ज़ल को ज़रूरत है कि वह अपनी सिर्फ़ एक खिड़की से ग़ज़ल की पूरी दुनिया को देखने की ज़िद ना करे, बल्कि वह खिड़कियाँ खुलें जिससे चारों जानिब पूरी कायनात नज़र आए। ग़ज़ल-लेखन में महिला ग़ज़लकारों को देखना असल में सदियों से बंद मकान में एक और दरीचे को खोलना है। आने वाले समय में हिन्दी-उर्दू ग़ज़ल की समृद्ध और चहुमुखी परम्परा को दिखाने के लिए यह किताब सबूत के तौर पर पेश किया जा सकेगा।

पुस्तक -दहलीज़ से आगे बिहार की महिला गज़लकार
प्रकाशन वर्ष -2024 / मूल्य -299 / पृष्ठ -160
प्रकाशक- श्वेतवर्णा प्रकाशन नोएडा

'21वीं शताब्दी का भारत' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

सतनामी कन्या विद्यापीठ कॉलेज, रुकनपुर, बुलन्दशहर में सतनामी साध धर्म गुरुद्वारा की गुरुगद्दी पर आसीन रहे पूर्व सतगुरु बाबा सुरेश चंद्र साहिब की पुण्यतिथि के अवसर पर 31 अगस्त 2024 को शिलाक्षर फाउंडेशन, दिल्ली द्वारा '21वीं शताब्दी का भारत' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया।सर्वप्रथम विद्यापीठ में स्थापित माँ सरस्वती की प्रतिमा के सम्मुख सभी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित किया गया एवं पुष्पांजलि अर्पित की गयी। सभागार के प्रवेशद्वार पर सभी गणमान्य अतिथियों का तिलक व पुष्प भेंट कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना से हुआ। समारोह की आयोजकशिलाक्षर फाउंडेशन दिल्ली की सचिव एवं पौड़ी-गढ़वाल में प्रोफेसर डॉ. बृज लता शर्मा ने सभी अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया तथा सभी अतितिथियों को शॉल एवं विद्यापीठ की ओर से सम्मान प्रतीक व सम्मान पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि रहे वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रसिद्ध हिन्दी सेवी डॉ. इन्द्र सेंगर। कार्यक्रम की अध्यक्षता एन. आर. सी. कॉलेज, खुर्जा के पूर्व प्राचार्य प्रो. (डॉ.) के. डी. शर्मा ने की तथा विशिष्ट अतिथि रहे गुरुग्राम से पधारे साहित्यकार श्री शिव कुमार गौतम। सभागार में सभी शिक्षकगण तथा छात्राओं की उपस्थिति शोभनीयरही।

मंचासीन महानुभावों द्वारा दो पुस्तकों का विमोचन किया गया। 1) कवि रामपाल शर्मा 'विश्वास' द्वारा रचित 'ईशावास्यादि उपनिषदों का काव्यानुवाद एवं साध धर्म का परिचय' तथा 2) डॉ. बृज लता शर्मा द्वारा सम्पादित 'नारी-बर्चस्व' शीर्षक साझा काव्य-संग्रह। दोनों पुस्तकों का प्रकाशन एन. के. एस. प्रकाशन नोएडा के द्वारा किया गया है।

प्रारम्भिक उद्बोधन में कार्यक्रम की आयोजक डॉ. बृज लता शर्मा ने समाज में शिक्षा व चारित्रिक उत्थान पर बल दिया। मुख्य अतिथि डॉ. इन्द्र सेंगर ने अपने उद्बोधन में छात्राओं को 'काकचेष्टाबकोध्यानम....' मंत्र देकर विस्तार से शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। आपने अपनी बृजभाषा एवंखड़ी बोली की एक-एक कविताओं का काव्यपाठ भी किया। 'ढूंढ रहे मुझको नभ में तुम...' विशेष रूप से सराही गई। विशिष्ट अतिथि श्री शिव कुमार गौतम ने वर्तमान समाज की पुरातन समाज से तुलना करते हुए आधुनिक विकास की उपलब्धियों के साथ आज की विसंगतियों का भी उल्लेख किया कि हमारा समाज नैतिक पतन की ओर अग्रसर है।तत्पश्चात विद्यापीठ के प्राचार्य एवं कार्यक्रम के संरक्षक डॉ. जय किशोर शर्मा ने छात्राओं को संबोधित किया। कई छात्राओं ने संगोष्ठी के विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. के. डी. शर्मा ने प्राचीन सांस्कृतिक मान्यताओं का समर्थन किया तथा वर्तमान में संस्कारों में आई कमी के प्रति चिंता व्यक्त की। विद्यापीठ की प्रबंध समिति की ओर से चेयरमैन सतगुरु बाबा रोहित कुँवर साहिब ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया तथा गद्दी की ओर से छात्राओं को आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन विद्यापीठ की प्रोफेसर सुश्री अनुराधा शर्मा द्वारा किया गया। अंत में सभी आलेख प्रतियोगिता में प्रतिभागी एवं अन्य विशिष्ट छात्राओं के पुरुस्कार वितरण के पश्चात समारोह सुचारु रूपेण सम्पन्न हुआ।

समीक्षक -प्रीति शर्मा"मधु",
गांव व डाकघर लद्दा, तहसील घुमारवीं,
ज़िला बिलासपुर , हिमाचल प्रदेश ,174026

अनकहे जज़्बात

अभी तक हिंदी में 100 से ऊपर कविताएं लिख चुके है। प्रतिष्ठित व्यक्तित्व होने के साथ-साथ साहित्यिक क्षेत्र में भी रुचि होना उनकी बिंतनशीलता, भावों की परिपक्वता और काव्य की गुणवत्ता को दर्शाता है। हाल ही में प्रकाशित उनका काव्य संग्रह 'अनकहे जज़्बात' हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। "अनकहे जज़्बात" द्वारा कवि ने साहित्य क्षेत्र को अनुपम पुष्पों की माला से सुशोभित किया है। यह पुष्प रूपी हार विभिन्न मनोभावो तथा अनुभूतियों के पुष्पों से शोभायमान है। डॉ. राजीव डोगरा बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रमत्नशील एवं अनुभवी कवि है। काव्य संग्रह की 50 कविताओं में उन्होंने अपनी रचनात्मकता के माध्यम से जीवन के विविध आयामों को स्पर्श किया है। इस काव्य संग्रह का मूल रूप से उद्देश्य प्रकृति की मूल संरचना का संरक्षण, मानवीय संबंधों में पारिवारिक रिश्तो की अहमियत, रीति रिवाज संस्कार, देशभक्ति से ओत-प्रोत रचनाएं सभी विषयों को बड़ी कुशलता के साथ स्पर्श किया है जो कवि की दूरदृष्टि तया काव्य सृजन की परिपक्वता को भलीभांति दर्शाता है।

मां के चरणों में वंदन करने के साथ ही, दोस्ती का जिक्र, बदलाव , सोच इत्यादि के ऊपर कविताओं की रचना की है। जिसमें मुख्य तौर पर "अंतर्मन की पीड़ा","जीवन चक्र", "मैं समय हूं", "मृत्यु का अघोष", "नई मोहब्बत " आदि रचनाओं को बहुत ही अच्छे तरीके से प्रस्तुत किया है।

"दोस्ती का रंग
दोस्ती का रंग हमसे पूछिए
जरा सा हमसे दिल लगाकर
जरा सा मुस्कुरा कर देखिए।
दोस्ती होती नहीं है मोहब्बत से कम
ज़रा हमारे साथ चल कर,
ज़रा सा हमारे रंग में खुद रंग कर देखिए। "

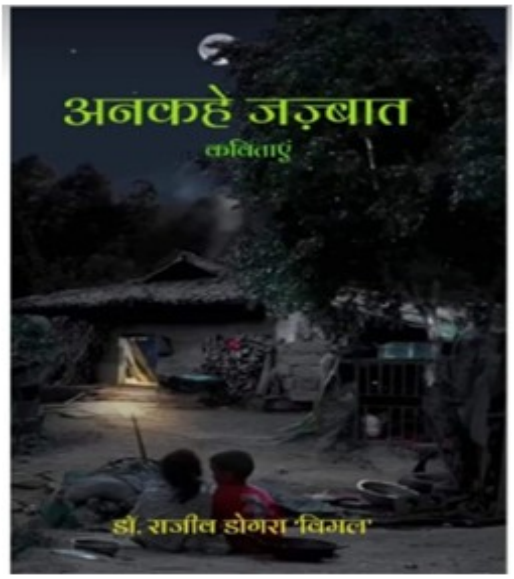

"माँ काली
एक तुम ही तो हो माँ काली
जो मेरे लिए
वक्त के हर पन्ने को
पलट सकती हो।
एक तुम ही तो हो माँ काली जो मेरे लिए
काल से क्या
महाकाल से भी लड़ सकती हो।"

साधारण ग्रामीण परिवेश में पले बढ़े डॉक्टर राजीव जी महान उपलब्धियों के प्रणेता है। साहित्य सृजन में तत्पर उनकी सभी कविताएं छन्दबद्ध, तुकबंदी में रची और भावपूर्ण है। सांसारिक जीवन के सभी पहलुओं का स्पर्श करता काव्य संग्रह 'अनकहे जज़्बात' सागर का गागर में भरने का हुनर रखता है। अंतराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त डॉक्टर राजीव जी ने साहित्यिक क्षेत्र में भी अपनी अनुपम आभा को बिखेरा है जो कोई बिरला ही व्यक्तित्व होता है। आशा करते हैं कि भविष्य में भी डॉक्टर राजीव जी का ऐसा ही ज्ञानवर्धक साहित्य पाठको को पढ़ने के लिए मिलता रहेगा। उनकी इस अनुपम, अद्वितीय और श्रम साध्य कृति के लिए साधुवाद एवं अनंत बधाई।

मैं राजीव डोगरा जी को उनकी इस उपलब्धि पर बधाई देती हूं। और भविष्य में भी इस तरह के लेखन को वह समाज के सामने लाते रहे इसकी उम्मीद रखती हूं।

पुस्तक' ---अनकहे जज़्बात ,कवि ---डॉ. राजीव डोगरा ,प्रकाशन----- सरोज हंस ,
मूल्य---225 रुपये, पृष्ठ संख्या --95

राजेश सिंह
समीक्षक
अहमदाबाद

कहानियों का कारवां-उर्दू एवं अरबी की चयनित कहानियाँ

प्रिय श्री राम प्रकाश श्रीवास्तव जी, जो की पेशे से पत्रकार और लेखक है, जिनकी हिन्दी और उर्दू दोनों ही भाषाओं पर बराबर की पकड़ है। उनकी अब तक सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकीं है, एवं तमाम संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत भी किये जा चुके है। प्रस्तुत पुस्तक उनके द्वारा अनूदित 15 कहानियों का संकलन है, जिनमें 12 कहानियाँ उर्दू से अनूदित है , 2 कहानियाँ अरबी से अनूदित है और 1 कहानी स्वयं प्रिय रामपाल श्रीवास्तव जी द्वारा रचित है। अनुवादक/लेखक ने अपने प्राक्कथ्थन में कहानी लेखन की शुरुवात खासकर उर्दू कहानी लेखन की और उसकी यात्रा के बारे में विस्तृत जानकारी दी है । बड़े बड़े कहानीकारों के काल खंड उनके समकालीन कहानीकार इत्यादि की विस्तृत जानकारी जहां ज्ञानवर्धक है वही रोचकता से भी परिपूर्ण है। अनुवादक/ लेखक श्री रामपाल श्रीवास्तव जी ने पूर्ववर्ती कालखंड जहां पर प्रेम कहानियाँ या फिर राजा/शाशक की तारीफ में लिखी कहानियाँ उनके यद्ध में जीत को दर्शाती कहानियाँ लिखी गई। मध्यवर्ती काल में आजादी की लिए लड़ाई का भाव जगाने वाली कहानियाँ ,देशप्रेम से ओतप्रोत कहानियों का सृजन हुआ। आधुनिक काल स्वछन्नदता, खुले विचार , प्रगतिवादी कहानियों का दौर है। वामपंथ से प्रभावित कहानियों का सृजन हो रहा है । कुलमिलाजुलाकर यह कहनी सही होगा कि कहानियां अपने कालखंड की वैचारिक / मानसिक/ आर्थिक/ राजनैतिक /सामाजिक स्तिथियों की प्रतिनिधित्व करती है।

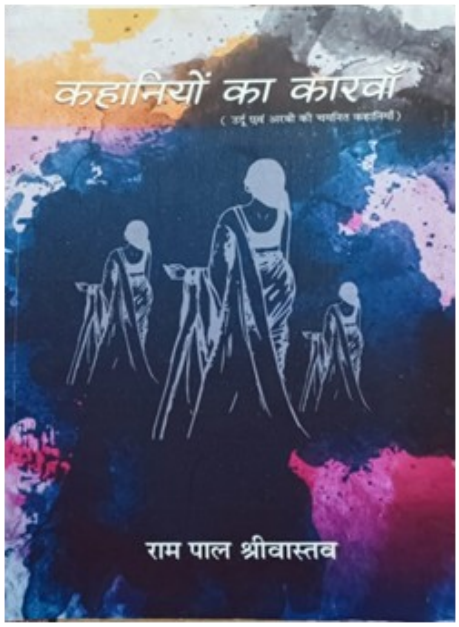

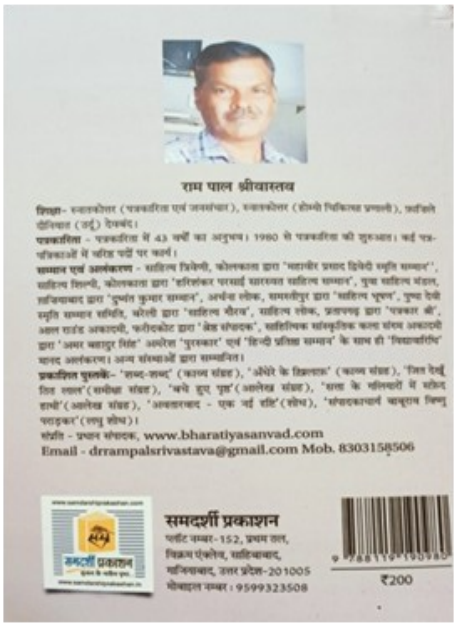

कहानियों का कारवां की पहली कहानी **"कब्र"** रामपाल जी द्वरा लिखित है ,जिसका नायक हर हाल में अपनी पत्नी को खुश देखना चाहता है ,हालाकिं पत्नी के भाव हमेशा ही निराशा से भरे होते है , जबकि नायक उसमें खुशियां अपने लिए प्रेम देखना चाहता है। कहानी गठन लंबाई तानाबाना के हिसाब से परिपूर्ण है । कहानी उर्दू की है , दो शहरों के मध्य का तानाबाना है। शहर से लगाव है ,बचपन से लगाव है । अनुवादक ने अनुवाद में कहानी के साथ पूरा न्याय किया है । कहीं से भी कहानी पर पकड़ छूटती नहीं है । कहानी का एक अंश देखिए-

"अब्बू ! उसकी कब्र अब कहाँ है?"

कब्र तो अब कहीं भी नहीं थी। उसका नामोनिशान तक मिट चुक था। केवल उसकी स्मृति शेष थी। इधर-उधर देखकर पप्पी की कद्र तलाश करते समय अचानक मेरी नजरें बिलक्कीस की नजरों से टकरा गई। वह न जाने कितनी देर से मेरी ओर देखे जा रही थी। उसकी आँखों में मेरी जिज्ञासा, खोजऔर व्यग्रता के लिए भरपूर समर्थन था और सहानुभूति भी। वह अपने स्थान से उठकर मेरे पास आ गई। मेरे हाथ को पकड़कर धीरे-से बोली- "क्या आप चाहते हैं, हम लोग कुछ दिन यहाँ रहें?"

कहानी संग्रह की दूसरी कहानी **"गृह स्वामिनी"** 'इकबाल महदी' द्वारा लिखित है । यह कहानी औरत के अधिकार की कहानी कहती है ,कैसे उसे घर के अंदर तमाम जरूरत के समान मुहैया कराकर मर्द अपनी इतिश्री कर लेता है । उसके हाथ में दो पैसे देता है तो उसका हिसाब माँगता है। अल्ताफी इसी बात को लेकर बहुत ज्यादा दुखी है, कि बचपन से लेकर शादी के बाद भी उसके पास ऐसा कुछ भी नहीं है , जिस पर सिर्फ और सिर्फ उसका अधिकार हो ।पूरी कहानी इसी भाव को लेकर घूमती रहती है और कहानी को बल भी तभी मिलता है ,जब अल्ताफी की साँस भी इसी पीड़ा के दंश को सांझा करती है । इक अंश देखिये- "

अन्ततः अल्ताफ़ी फ़ातिमा ने दोनों की चुप्पी तोड़ी-"अब परसों मैंने आपके बेटे से कहा कि कुछ पैसे घर के खर्च के अलावा भी मेरी हथेली पर रख दिया कीजिए, जो सिर्फ़ मेरे हों, जिन पर मेरा अधिकार हो, बस उन्होंने मुझे सैकड़ों बातें सुना दीं...।" अल्ताफ़ी फ़ातिमा की आवाज़ भर्रा गई, गला संध गया। उसने नज़र उठाकर सास की ओर देखा, जो किसी अज्ञात चिंता में खोई थीं। फिर जैसे अचानक चौंक पड़ीं, "अल्ताफ़ी! मैं तेरा दुख समझ गई। तूने तो कभी इस बात की मुझे हवा भी न लगने दी। मैं तुझे अपना कलेजा चीरकर कैसे दिखाऊँ कि इस समय मुझ पर क्या बीत रही है?"

कहानी संग्रह की तीसरी कहानी **"नेटवर्क प्रॉब्लम"** 'एम. सद्दाम' द्वारा लिखित है । यह कहानी रिश्तों की कमजोरी उनके मध्य टूटते तारों की तरफ इशारा करती है । आजकल की भागती दौड़ती जिंदगी में रिश्ते अपने अहमियत खोते जा रहें है। अब एक ही रिश्ता बचा है वो भी पैसों का । नेटवर्क प्रॉबलम कहानी इसी पर करार कटाक्ष है ।

कहानी संग्रह की चौथी कहानी **"चांद और फंदा"** जिसके लेखक बलवंत सिंह जी है , बहुत ही रोचक प्रेम कहानी है जिसे सिर्फ पढ़कर ही समझ जा सकता है । अंश देखिए-**"अब तुम्हें मेरे साथ थाने जाने की जरूरत नहीं है। लेकिन शर्त यह है कि भविष्य में कभी मेरे इलाके में क़दम रखने की हिम्मत न करना।"**

सूरत सिंह ने इत्मीनान की साँस ली। वह इस घटना की पृष्ठभूमि से अवगत नहीं था। उसने प्रेयसी का हाथ अपने हाथ में लेकर जरा दबाते हुए कहा- "अब हम एक साथ यहाँ से कहीं दूर निकल जाएँगे।" प्रसन्नी ने बड़ी विलगता के साथ धीरे-धीरे अपना हाथ छुड़ा लिया और मद्धिम, लेकिन कटार जैसी आवाज़ में बोली- "नहीं, कभी नहीं।"

कहानी संग्रह की पाँचवी कहानी है-**"ये इश्क नहीं आसां"** ,जिसे लिखा है ,**महमूद फारूखी** साहब ने । बड़ी ही रोचक रहस्यमयी और वैचारिक मंथन वाली कहानी है । यह कहानी इस संग्रह की मेरी सबसे मनपसंदीदा कहानी है । जो हर तरीके से जैसे नाटकीयता ,विषयवस्तु ,रोचकता, संदेश,पृष्ठभूमि,शब्द चयन ,पात्रों का चुनाव ,उनका शब्द चयन ,कहानी की सुरुवात ,कहानी का अंत ,सब कुछ परफेक्ट। कहानी वासना और प्रेम के मध्य एक स्पष्ट लकीर खींचती है जिसके एक तरफ 'अरशद' है जो आत्महत्या करके दूसरी तरफ 'प्रेमी' बन चुका है । कहानी का एक अंश – " **'मैं और वह, हाँ, मैं अरशद के साथ ही था कि एक औरत अपने हाथ में एक बंडल लिए कुछ पूछे बिना ही घर में दाखिल हो गई। वह कैसी औरत थी, यह बताते हुए मेरा मन घुटता है। मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि उस औरत को देखकर मुझे काफी नफरत हुई और मेरा मन व्याकुल हो उठा। उसके पूरे शरीर पर लाल-लाल छाले पड़ गए थे। ऐसा लगता था कि उसके शरीर में खून की जगह गंदा द्रव ही भरा हुआ है। उसका सूजा हुआ चेहरा सड़े हुए टमाटर की भाँति फूल उठा था। उसने आते ही अरशद की मेज पर वह बंडल दे मारा और बेखौफ होकर बोली,' क्या आप आज की रात मेरे साथ बिता सकते हैं?"**

कहानी संग्रह की छठी कहानी **"हजारों साल लंबी रात"** जिसे लिखा है **रत्न सिंह** जी ने , इस कहानी संग्रह की सबसे छोटी मगर सबसे ज्यादा जेहन पर चोट करने वाली कहानी है । कहानी का एक अंश- **"बिलकुल झूठ, बिलकुल झूठ"- उस बरामदे में लेटे हुए अभी आदमी विरोध में उठ खड़े हुए और उनमें से एक आदमी बोला- "बूढ़े ! सच्ची-झूठी बातें करते शर्म नहीं आई। यदि हमने रात में पेट भरकर खाना खाया होता, तो इस समय चैन की नींद न सोए होते। रात भर तुम्हारी यह बकवास कौन सुनता ?"**

"अरे भाई! नाराज क्यों होते हो?" बूढ़े ने कुछ सहमी हुई आवाज़ में कहा- "मैं भी तुम्हारी तरह भूखा हूँ। यदि मुझे ही नींद आ रही होती, तो ये बातें करने के लिए जागता होता। मैं भी तो सो जाता।"

कहानी संग्रह की सातवीं कहानी **"त्याग"** जिसे लिखा है 'रशीद फारूखी' साहब ने,एक लड़की के संस्कारों में जकड़कर अपने माँ बाप की बात मानकर अपनी जिंदगी का अंत कर लेने की कहानी है । हालाकिं डॉक्टर अपनी पूरी कोशिश करता है पर और अंत में ऐसा लगता है की सब कुछ संभल जाएगा ,पर तब तक देर हो चुकी होती है।

कहानी संग्रह की आठवीं कहानी **"गुमराह रहनुमा"** जिसे लिखा है 'बानो सरताज' ने, एक चोर के मौलवी बनकर रोजेदारों को नसीहत देने की कहानी है । कैसे एक चोर मौलवी बना, किसने उसे पहचाना और बाद में कहानी किस मोड करवट लेगी ,यह सब आपको पढ़कर ही पता चलेगा ।

कहानी संग्रह की नौवीं कहानी **"जब्र और इख्तियार"** है जिसे लिखा है 'मंजर हुसैन साहब ने। यह कहानी किरायेदार के किराया ना चुका पाने की हालत में उसकी सोच और अंत में वह क्या करता है , के जबरदस्त टर्निंग पॉइंट को दर्शाती है।

कहानी संग्रह की दसवीं कहानी **"गैंडे का सींग "** है जिसे लिखा है 'इकबाल अंसारी साहब ने।यह कहानी लालच की पराकाष्ठा का उदाहरण है । जहां अंत में न माया मिली न राम और जान से ही हाथ धोना पड़ता है। कहानी

का एक अंश-" **कंपार्टमेंट के फर्श पर पड़ी दो इन्सानी लाशों के सामने एक सीट पर खून में सना हुआ गैंड़े का सींग बड़ा सजीव लग रहा था! ट्रेन पूरी गति के साथ घने और अँधेरे जंगल से गुज़र रही थी।**

कहानी संग्रह की इग्यारहवीं कहानी **"इकलौता पुत्र "** है जिसे लेखक है 'इफ्तिखार अहमद' साहब। इस कहानी में लेखक ने पोलिओ से ग्रसित बच्चे के हार न मानने और उसकी मेहनत और लग्न से इक इज्जतदार मुकाम पर पहुँचने की दर्शाया है। यह बाकी ऐसे लोगों के लिए प्रेरणादायक कहानी है।

कहानी संग्रह की बारहवीं कहानी **"एक जख्म और सही "** है जिसे लेखक है 'महेन्द्रनाथ' जी ।यह कहानी एक प्रौढ़ लेखक और नव- यौवना के बीच पनपे प्रेम की कहानी है। जहां प्रौढ़ अपने जज़्बात पर काबू रखकर अपनी परिपक्वता का परिचय देता है और युवती की सभी कोशिशों को पहचान कर भी नजरंदाज कर देता है। कहानी का अंत भी एक परिपक्व निर्णय के साथ होता है । कहानी का एक अंश देखिए-**" न जाने मैंने क्या देखा, जिसने मुझे ऊपर जाने के लिए विवश न किया। इक्कीस-बाईस वर्ष की नवयुवती अगर आपसे यह कहे कि चलिए ऊपर .... और साथ ही यह कहे कि मैं अकेली हूँ....! मम्मी, डैडी और भाई सब बाहर गए हुए हैं, तो आप अवश्य लड़की के साथ जाएँगे, लेकिन मैं न गया। आप समझ गए ना मेरी बात ? लड़की में कुछ होना चाहिए। शायद उसमें सब कुछ था, जो मुझे दिखाई न पड़ा और जो कुछ मुझे दिखाई पड़ा वह न होने के समान था !**

कहानी संग्रह की तेरहवीं कहानी **"विचार-यात्रा "** है जिसे लेखक स्वयं श्री रामपाल श्रीवास्तव जी है जो इस संग्रह की सभी कहानियों के अनुवादक है। इस कहानी में विचारों का झंझावात है, जहां एक आदमी अपनी पत्नी को तलाक देने पर आमादा है । परंतु एक नमाजी द्वारा कुरान की आयतों का अर्थ समझने के बाद उसका विचार बदल जाता है।

कहानी संग्रह की चौदहवीं कहानी **"प्रतिरोध"** अरबी कहानी है ,जिसे लिखा है नेमतुलहज़् ने। यह कहानी युद्ध की विभीषिका की कहानी है। परिवार कैसे इन हालातों से निबटता है कैसे देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत होकर लोग बलिदान को तैयार हो जाते है।

कहानी संग्रह की पंद्रहवीं और अंतिम कहानी **"जलजला"** भी अरबी कहानी है ,जिसे लिखा है अहमद महमूद मुबारक ने।इस कहानी में अपने पारंपरिक मूल्यों को त्यागकर वेस्टर्न सभ्यता और उसके खुलेपन के कारण नैतिक मूल्यों पर चोट की कहानी है।

इस कहानी संग्रह की सारी कहानियाँ कोई न कोई संदेश देती है। जहां कुछ कहानियाँ पाठक के अंतर्मन पर चोट करती है , वहीं कुछ कहानियाँ रहस्यात्मक तरीके से लिखी गई है और अंत तक पाठकों को बाँधें रखती है। रामपाल श्रीवास्तव जी ने उर्दू और अरबी की बेहतरीन कहानियों का चयन इस संग्रह में किया है। इस संग्रह की हर कहानी पढ़ने लायक है जो पाठकों को इक नई तारोताजिगी से भर देती है। मेरा यकीन है वो लोग जो कहानी पढ़ने के शौकीन है , उनकी भूख को यह संग्रह पूरा करने में समर्थ है । उन्हें यह कहानी संग्रह अवस्य ही पढ़ना चाहिए।

पुस्तक—कहानियों का कारवां (उर्दू एवं अरबी की चयनित कहानियाँ)
अनुवादक/लेखक—राम पाल श्रीवास्तव
प्रकाशन वर्ष -2024
मूल्य -200
पृष्ठ -130
प्रकाशक- समदर्शी प्रकाशन ,गाजियाबाद (उ. प्र.)

बृज राज किशोर 'राहगीर'

ईशा अपार्टमेंट, रुड़की रोड, मेरठ (उ.प्र.)-

ग़ज़ल

कुछ सवालों की बात रहने दे।
बंद तालों की बात रहने दे।

ज़िक्र छेड़ा है गर वफ़ाओं का,
चंद छालों की बात रहने दे।

रहनुमा से तू माँग ले कुछ भी,
बस निवालों की बात रहने दे।

जो न पहुँचे मेरी निगाहों तक,
उन उजालों की बात रहने दे।

मोमबत्ती तो ठीक है बाग़ी,
पर मशालों की बात रहने दे।

बात मुग़लों की रास आती है,
छत्रसालों की बात रहने दे।

अब ज़ुबानें ही बींध देती हैं,
छोड़, भालों की बात रहने दे।

कबीर दास

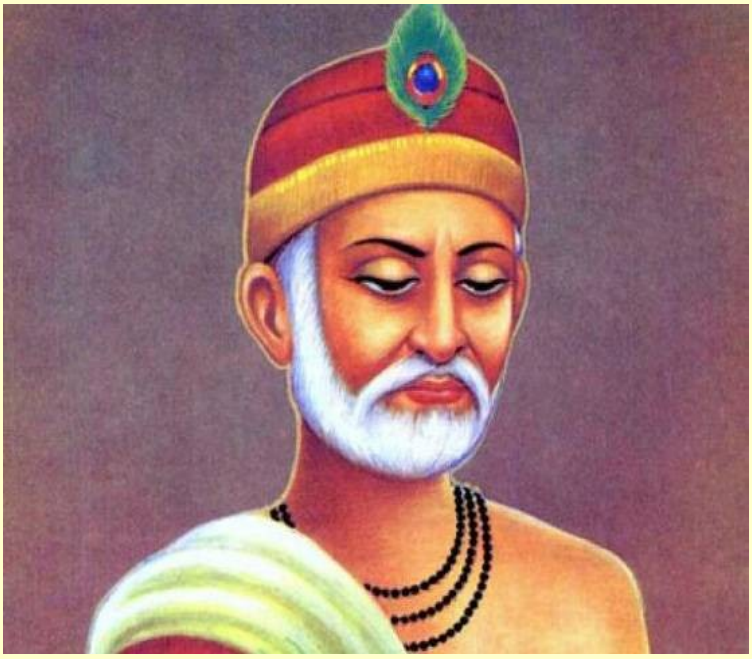

हरि रस पीया जाँणिये, जे कबहूँ न जाइ खुमार ।

मै मंता घूँमत रहै, नाँहीं तन की सार ॥

जो जानहु जिव आपना, करहु जीव को सार ।

जियरा ऐसा पाहुना, मिले न दूजी बार ॥

मानवी सेवा संस्था : राष्ट्र और राष्ट्र जन की सेवा में समर्पित

274/x ,शक्तिनगर कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

http://www.manvipatrika.co.in

(पत्रिका यहाँ से भी पढ़ सकते है)